

दिल्ली चलो

भारतीय स्वतंत्रता-सर्प के धमर
मेनिकों की रोमांचकारी गाथा



लेखक —

आनन्द विद्यालकार • हरिश्चन्द्र

साहित्य मण्डल, दीवानहाल, देहली

उत्तर भारत के प्रितरक

श्री हरिश्चन्द्र, ११५ मौडल बस्ता, दिल्ली

प्रकाशक—
नवयुग का साहित्य प्रकाशन
कृष्णनगर,
भावनगर

प्रथम संस्करण

मूल्य २-)
आठ अक्षरों के साथ २।)
मुद्रक — धारा प्रस देहली

—'दिल्ली चलो' मेरा और मेरे उन साथियों का नारा था जिन्होंने नेताजी सुभाषचन्द्र बोसरी कमान में हिन्दुस्तान से बाहर अपने देश की आजादी के लिए लड़ाई लड़ी। आज हम दिल्ली पहुँच चुके हैं, किन्तु 'दिल्ली चलो' नारे में जो लक्ष्य निहित था, उसे हम अभी तक प्राप्त करने में असमर्थ रहे हैं। 'दिल्ली चलो' का अर्थ है—दिल्ली-जय और जब तक हम अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर लेते, हमारी लड़ाई जारी रहेगी। हिन्दुस्तान की मुक्ति के लिए हम अन्त तक लड़ेंगे।

कौन जीवित है यदि भारत दाम्ताके बंधन में बंधा है।

कौन मृत है यदि भारत स्वतन्त्र है ॥

जय हिन्द !

पी० के० सहगल

प्राक्कथन

स्वतंत्र भारत की घोषणा, भारतभूमि के चादर पर स्वतंत्र भारत मरधार का स्थापना तथा राष्ट्रीय भारत-सेना का सगठन समार के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। समय आने पर हमें दश के प्रति अपन फौज्य का पूरा भान होगा। मुझे आशा है कि हम स्वतंत्रता का, जो हम बिना लड़ें मिल जायगी, उपयोग हम अपने देशरामियाँ का पन्नत घनाने में करेंगे। त ही स्वतंत्रता का पाना और उसे बनाए रखना सार्थक होगा।

हम लोग स्वतंत्रता के द्वार पर पहुँच गए हैं। हो सकता है कि हम इसके लड़ाई न लड़नी पड़े। फिर भी यह घटना ही जानने योग्य है कि कम से कम २५ लाख भारतीय उस आजाद हिन्द सरकार के प्रति बफादार थे जो नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने सिंगपुर में स्थापित की थी। नेताजी के पाम साहस था, कल्पना थी और सगठन शक्ति थी। यह ऐतिहासिक घटना है। हमें यह कहते गर्व होता है कि ऐसे भी लोग थे जिन्होंने अपने प्राणों की मंक्ट में डालकर दश को स्वतंत्र करने के लिए सगठन किया। इससे अधिक पवित्र ध्येय और क्या हो सकता है! संसार के इतिहास का यह एक गौरवशाली अध्याय है।

—भूलाभाई देसाई

प्रयाण-गीत

राम कदम बढ़ाये जा
सुशी के गीत गाये जा
यह जिन्गी है फ़ौम की
तू काम पै लुटाये जा

*

तू शोरे हिन्द आगे बढ़,
मरने से भी तू न डर
आना ममा उठा के सर
जोशो बतन बढ़ाये जा

*

तेरी हिम्मत बढ़ती रहे
खुदा तेरी मुनता रहे
जो सामने तेर अडे
तू राक मे मिलाये जा

*

चलो दिल्ली पुकार के
वैमो निशा सभाल के
लाल किले में गाड के
लहराये जा, लहराये जा

*

घटना-क्रम—

- २६ जनवरी १९४१
 ७ दिसम्बर १९४१
 १५ फरवरी १९४२
 प्रथम सप्ताह मार्ग १९४२
 २४ जून १९४०
 नवम्बर-दिसम्बर
 १९४२
 १२ अप्रैल १९४३
 ४ जुलाई १९४३
 ५ जुलाई १९४३
 २५ अगस्त १९४३
 २१ अक्टूबर १९४३
 २२ अक्टूबर १९४३
 १८ अक्टूबर १९४३
 ८ नवम्बर १९४३
 १८ मार्च १९४४
 २० मार्च १९४४
 दिसम्बर-जनवरी १९४५
 २४ अप्रैल १९४५
 ३ मई १९४५
 १५ अगस्त १९४५
 १८ अगस्त १९४५
 ५ नवम्बर १९४५
 ५ जनवरी १९४६

- सुभाष बाबू लापता
 सुदूरपू में युद्ध शुरू
 सिंगापुर का पतन
 सुभाष बाबू बर्लिन में
 इंडियन इ० लीग की स्थापना
 पेनाग की स्वराज्य इन्स्टीट्यूट
 तथा आ० हि० फौ० पर सख्त
 इ० इ० लीग का यौद्धिक सगठन
 श्री बोस इ० इ० लीग के अध्यक्ष
 आ० हि० फौ० की सत्ता की घोषणा
 श्री सुभाष बोस फौ० के सिपहसालार
 आ० हि० सरकार की स्थापना
 रा० म्हा० रे० का उद्घाटन
 वि० सा० व छमे० के वि० यु० घो०
 अ इमान व निकोवार आजाद हिंद
 सरकार का सीपे गण
 आ० हि० फौ० का भारत सीमा में प्रवेश
 भारत के मुक्त प्रदेशों के चटरजी प्रथम गवर्नर
 आजाद हिन्द फौज का दूसरा युद्ध
 आजाद हिन्द सरकार रंगून से बैकक की
 ब्रिटिश सेना के हाथ रंगून का पतन
 जापान का आत्मसमर्पण
 नेताजी सुभाष की कथित मृत्यु
 आजाद हिन्द फौज का पहला मुकदमा
 प्रथम मुकदमे में जनमत की विजय।



डॉ. एन. सी. लॉन्सी, देश गौरव मेताजी
सुभाषचंद्र बोस, 'डिपुटी क्वॉटर
आय इण्डिया', प्रमुख, थारजी
हुकूमते प आजाद हिंद, सुप्रीम
कमाण्डर आजाद हिंद फौज



मेजर-जनरल शाहनवा और कनल सि-
 चार कनल सहगल अपना मुक्तिके बात चेत
 का पहिले द्वारा अभिराजन करन हुए

शेर पिजरे से बाहर

यह २६ जनवरी १९४१ की प्रभात-वेला थी। देश के इस छोर से लेकर उस छोर तक एक उल्लास एव हर्ष का समुद्र उमड़ रहा था। शहर शहर, कस्बे कस्बे और गाव-गांध में लोग प्रसन्नता से भूमते हुए और भारतमाता के प्रति सदा निष्ठावान रहने का प्रण करते हुए बड़ी-बड़ी टोक्तियों में उस दिन की याद मना रहे थे, जिन दिन देश के गौरव, युवकों के नेता प० जवाहरलाल नेहरू ने रावी के छट पर एक लाख-लाख जन समुदाय के सम्मुख प्रथम बार भारत की पूर्ण आजादी की घोषणा करके गौरवशाही की स्तम्भित कर दिया था। स्थान स्थान पर तिरगे झंडे शोभित थे। आत्मान 'इन्कलाब इन्दावाद' 'महात्मा गांधीजी की जय' 'भारतमाता की जय' के गगनभेदी नारों से गूँज रहा था। प्रभात फेरिया निकाली जा रही थीं। प्रमुख स्थानों पर लोग सैकड़ों की संख्या में एकत्र हो आजादी के प्रतीक अपने तिरगे झंडे को सलामी दे रहे थे और बन्देशमातरम् के गभीर उद्घोष से सारा घातावरण गुञ्जरित था।

अभी सारे देश में स्वतंत्रता दिवस का यह महान समारोह मनाया ही जा रहा था कि कलकत्ता की गलियों में अकस्मात् एक सनसनी दौड़

गर्द । गन्धियों और गहरों पर अपने कितने शोकाकारणमिथिल एवं
 प्रतिलोचन मुझ से एक दुमरे की देवता, अपने और पर
 पक्षने । सुभाय बापू के उत्कृष्ट रोड वाले पिजी मकान से सावधानी
 की गहर पाय की बाग में बाग की तरह मात कलकला में फैल गई ।
 ना सुभता, भीषक रह गया । बड़े शहरों के समाचारपत्रों के इलाकों
 में सारी टैबीसिपल मरीनों पर मुझे मग्याक अचानक ही इस तरह
 की पाठर आरम्भविमूढ रह गए । अचानक 'परिशिष्ट' निकाले जाने
 लगे । शैलियो में आडकार्ट दुण । ऐतने ही इलाके कलकला के एक
 कोन में घरी इन महत्पूर्ण और मोररवाडी का धक्कर में दात
 दा वाली घमा का समाचार देश के हर कोने में फैल
 गया । लोग चकित थे कि सुभाय बापू उस गरी सरवार की आँखों
 में धूल भोंक कर कहां सुप्त हो गए । उनके गुर्गे सारं देश में फैले
 हुए हैं और पिपकी सुविधा पुजिस अपने कारणों के लिये देश भर
 में प्रसिद्ध है ।

सुभाय बापू के इस प्रकार अवरमात् ही जापता होने पर तरह तरह
 के अनुमानों का बाजार गर्म हो उठा । कोई कहता कि यह एक बार
 फिर साधु बनने की धुन में घर से निकले पड़े हैं और राजनीतिक पंथर
 बाजी से उन्हें विरक्ति हो गई है । सुभाय बापू पर अपनी घम' रामण
 माता तयाबाद में श्रीरामकृष्ण परमहंस की आध्यात्मिकता का बहुत गहरा
 प्रभाव पड़ा था । इसीलिए एक बार विद्यार्थी अयस्था में साधु बनने की
 सनक में सुपके से घर से निकल भागे थे और हरदार, बनारस, वृंदावन
 आदि तीर्थों में बहुत समय तक ध्याम विज्ञाना शात करने के लिए धूमते
 किरते रहे थे । इस बार भी उनके मन में कुछ एसी ही धुन समायी
 हो और इसीलिए पित्रे से निकल भागे हों, यह धारणा बहुतों के

दिल में घर धँस गइ, पर असली माजरा क्या है और भारत का वह प्यारा
 धीरे धीरे परतप्रता के पिंजरे में उबकर बिधर चला गया है, यह
 किसी को न मान्य हो सका। देश भर में इस आरघ्यजनक समानार
 से स्वग्धता छापी रही और लोग उत्सुकता भरे हृदयों से इस प्रतीक्षा में रहे
 कि देखें अब सरकार अपने उस 'यागी' का पता लगाने के लिए क्या
 करती है जिसे उठने मरणासन्न अवस्था में भी उसके अपने घर
 में नजरबंद किया हुआ था, पर दिनके बाद दिन दिन बीतते
 गये। सरकार के गुरगुरे देश भर की खास धानते फिरे। बलकत्ता से काजुल
 और काश्मीर से कन्याकुमारी तरफ की चप्पा चप्पा भूमि पर सुफिया
 पुलिस का जाल छान दिया गया पर सरकार की सब मेहनतें बेकार
 रहीं। एक बार जो बह गया फिर कभी हाथ नहीं आया।

सघर्षमय जीवन

सुभाष चापू प्रारम्भ से ही घने भाग्यक और उग्रवादी विचारों के थे। देश की आजादी के लिए उनके दिल में गहरी तड़प विद्यमान थी और वे उसके लिए सब कुछ दान की दायता रहते थे। १९२० में २२० देशवादी विचारजन शर्म ने उनके दिल में आजादी की आ और आजादी वह उनके हृदय में एक शक्ति के पूजादीव के रूप में मद्रा जनती रंग। दिन रात उनका धर ही स्वप्न रहा—'भारत माता की स्वाधरणा'। अपने हृदय स्वप्न को मर्यादा करने में उनको १९२० के बाद में पाल क्लिजनी बार जल की कठोर धारणा और देश निर्वाहन का कष्ट सुग तना पड़ा। पर वह भारत का अधिधत और कभी न हिम्मा हारने वाला सिपाही था। नीरवराही की ये धारक छोटे उसे उसके धर्म पथ से आ भी विचलित नहीं कर सकी। १९२७ में आरम्भ की जत में जब उनका स्वास्थ्य अत्यन्त गिर गया और आर्यों ने उन्हें स्थानर लौक्य जाने की सलाह दी तब उन्होंने अपने भाई धी शरत घोष को लेन से एक पत्र में लिखा—' मैं अनिश्चित काल के लिए १२२७ में रहने की अपेक्षा भारत की जल में ही तलतिल काके भर जाना पसन्द करूंगा। सरकार का क्या भरोसा है कि वह मुझे कब तक निर्वाहन में रखे " ।'

“स्वतंत्रता का अमूल्य कोष प्राप्त करने के लिए तो हमें व्यक्तिगत और सामुदायिक दोनों तरह का कष्ट उठाना होगा। ईश्वर को धन्यवाद है कि मेरे हृदय में शांति है। मैं ऐसी किसी भी आपत्ति का शांतिपूर्ण सामना करने में समर्थ हूँ जो मेरे भग्य में लिखी होगी। मैं समझता हूँ कि मैं अपने राष्ट्र के अतीत काल के पापों का अपने ढंग से प्रायश्चित्त कर रहा हूँ और इसका मुझे मनोप है। हमारे विचार धमर हैं, वे राष्ट्र के स्मृति पटल से नहीं उतर सकते। हमारे सुन्दर स्वप्नों की विरासत आनेवाली पीढ़ियों को मिल जायगी - यही विश्वास और आशा है, मैं मुझे इस कष्टकाल में सदा सहाय हूँगे”

मातृभूमि का मुक्ति के लिए यह उच्च भावना और लोह पुन्यता का परिणाम यह हुआ कि जहाँ वे एक और शुरू से ही सरकार की आर्या का वादा घन गए वहाँ गांधीवादियों के साथ भी उनसे पटरी ठीक तरह से न बैठ सकी। गांधीजी और उनके राजनीतिक भक्तों का यह विश्वास था कि आनादी के लिए बहुत उद्दयाजी से कुछ फल नहीं निकलेगा और उससे देश की स्वतंत्रता का प्रश्न और भी खगाई में पड़ जायगा, पर युवक सभाय के हृदय में स्वतंत्रता की धारा लल रही थी। वह माग में धायीसत्र आधाओं के दासपुत्र को जलाकर राख कर देना चाहता था। उसे विलम्ब मह्य नहीं था। यही कारण था कि लाहौर कांग्रेस में यद्यपि प० जवाहरलाल नेहरू ने पूर्ण स्वतंत्रता का सिंगुल फू का था, पर उससे सुभाय के दिल को सतोप नहीं हुआ। आखिर, आजादी के दीवान को इतने मात्र से हैन सतोप होता। वह गांधीजी की इस धरि धीरे धाली नीति के विरुद्ध था। उसने उस समय यह इच्छा प्रकट की कि नौकरशाही के खिलाफ ‘मुफ्तानले की सरकार’ का निर्माण किया जाय, पर उन दिनों गांधीभक्तों के नकारमाने में

सुभाष बाबू की अकेली तूती की आराज कौन मनता । उनके त्रि म
 भारत मा को विदेशी सरकार के तूनी पज मे हुदानी की अद्भ्य लालसा
 राप मे छुपी आग की तरह त्रि तूनी आर रात चौगुनी रूप मे सुलगनी
 रही । पर वे अनुशासन और सगति कार्य के महत्प को पूर समझने
 थे । इमलिये विचारभेद हाने पर भी वे पढ़ने की भाति ही अपने सम्पूर्ण
 हृदय और शक्ति से पाठ्य करते रहे । उ होंने १९३३ की कराची
 कांग्रेस में गांधी हरबिन पैक्ट का त्रिोध किया, पर पूर की आशका
 से उसे स्वीकार पर लिया और वहां—कराची मे अ० भा० नवयुवक
 भारत सभा का सभापतिप करते हुए साम्यवादी आतम शासन का
 समर्थन किया और ब्रिटिश साम्राज्य से सम्पन्न दिष्ट करने तथा
 किसानों, मजदूरों और नौवानों को साम्यवाद के आधार पर संगठित
 करने की सलाह दी । थार उसी अवसर पर गांधीजी द्वारा कांग्रेस
 कार्यसमिति में सुभाष बाबू के सम्मिलित न किये जाने पर भी
 उ होंने यह विश्वास दिलाया कि मैं गांधीजी का साथ दूंगा, चाहे
 सशस्त्र युवा जाऊ या नहीं । वे अपने हृदय में इस तथ्य को अच्छी
 तरह अनुभव करते थे कि स्वतन्त्रता के उस दशम्यापी आंदोलन में
 पूर का अथ होगा—गुलामी के तौट के उतरने में और भी विलम्ब ।
 इमलिय वे हर मूल्य पर देश में उठ रहे स्वतन्त्रता के ज्वार को दी
 विभिन्न धाराओं में विभक्त करना नहीं चाहते थे । पर जो आग उनके
 हृदय में सुलग रही थी वह समय-समय पर प्रकट होती रही । १९३१
 के समाप्ति काल में जबकि देश के हर कोने में जानबुल का दमन
 अथ अपन पूण जोरा से घूम रहा था, आर्टिनेसों का थोलनाला था,
 गांधीजी गोलमेग कांग्रेस से लौट रहे थे, सुभाष बाबू ने अन्वर्ध में
 होनेवाली कांग्रेस कार्यसमिति को यह अल्टीमेटम दिया—‘यदि

सरकार के धारणार सधि भग करने पर भी, जैसा कि आर्डिनेसों में प्रकट है, कांग्रेस कार्यसमिति युद्ध की घोषणा न करेगी तो मैं उसकी स्वीकृति के बिना ६ बंगाल में बहिष्कार आंदोलन शुरू कर दूंगा। पर वह आंदोलन कभी शुरू न हो सका। सुभाष बाबू उम्बई से लौटने हुए ही सरकारी मेहमान बना लिये गये और बाद में जेल में अचान्त धारणार होने के कारण स्वास्थ्य लाभ के लिए उह वियना (स्ट्रीटार लैण) भेज लिया गया। स्वास्थ्य की इस अत्यंत विपन्न अवस्था में भी उनके मन में एक ही भावना—देश के स्वतन्त्रता आंदोलन को अधिक सजग व उग्र धारणार पर चलाने की भावना—उद्वुद्ध होती रही। इन्हीं-लिए वियना में रहते हुए उन्होंने और प्रोमीडे ट पटेलने सचिनय धवजा आंदोलन की स्थगित करने के निश्चय पर एक सयुक्त बयान में कहा कि — 'आंदोलन को स्थगित करने का घोषणा के साथ कांग्रेस ने अपनी असफलता को स्वीकार कर लिया है। समय आ गया है कि कांग्रेस के सगठन में मौलिक परिवर्तन किया जाय। वह स गठन नये मिडार पर, नय तरीके पर धार नये नेताधा के नेतृत्व में होना चाहिए।'

सुभाष बाबू उग्रवादी और कांग्रेस की कार्यकारिणी में परिवर्तन के इच्छुक अरथ ध पर उनका उग्रवाद उच्छुबल नहीं था। वह परिस्थितियों के अनुसार धरनी सीमा बनाना जानता था। हीन विचारधेद होने हुए भी वे जरदबाची में कोई कार्य करना नहीं चाहते थे, जो ताकालिक स्थिति में देश की स्वतन्त्रता के पक्ष में विधातर हो या उसको चोट पहुंचाने वाला हो। यही कारण था कि इन स मतधेदों के बावजूद भी देश के बड़े-बड़े नेता उनके सहयोग की बड़ा मूर्यवान समझते थे और उनको सर्वाधिक उत्तरदायित्वपूर्ण पद देने को उत्सुक रहते थे। इधर सुभाष बाबू भी अपनी देद ई ट की मसानद अलग खदी करने

की अपेक्षा अपेक्षाकृत कम उपरानी नेताओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नीवरशाहीके टुकड़े खेना देश के हित में अधिक उपयुक्त समझने थे। वे यह बात हृदय से अनुभव करते थे कि ब्रिटिश सरकार के खिलाफ फोर कम्म उठाने का ठककर अभी नहीं आया है, देश अभी उस रूप में जागृत नहा हुआ है कि समान प्रतिद्वंदी के रूप में उसका मुकाबला किया जा सके तथा इतनी साधन सामग्री हमारे पास नहीं है कि बन्दूक तोप और धमपकों से लैस ब्रिटिश सरकार के खिलाफ जग का फलान किया जा सके। पर फला करने की तीव्र खालसा उनके हृदय में लहरें मार रही थीं। वे इस देश में अंग्रेजी हुकूमत का नामोनिशा मिना देना चाहते थे। इसी का परिणाम था कि जब हरिपुरा कांग्रेस में देश न उनकी सवाधा से प्रभाव होकर उन्हें राष्ट्रपति का पद देकर सम्मानित किया तो उन्होंने उक्त पद से भाषण देते हुए भारत की समस्या का मूल निदान इस देश से अंग्रेजों का निरन्तारन ही बताया।

सन १९३२-३६ का कप था। हरिपुरा कांग्रेस के अध्यक्ष सुभाष चन्द्र का राष्ट्रपतित्व काल चल रहा था और यह अपने आदर्शों की प्रियाचित करने के लिए अपने हग पर देश की वागडेर सभाते हुए थे। सम्भावित विश्वयुद्ध की आका से अन्तराष्ट्रीय घालापरक उद्वे-
 लित था। सैरनीवाकिया, आस्ट्रिया, और तार पर जमनी के अनाकार के परिणामस्वरूप यूरोप का हर देश युद्ध की तैयारियों में खलगन था। बड़े बड़े राजनीतिज्ञ और सेना विशेषज्ञ किसी एक ऐतिहासिक 'कथ' की प्रतीक्षा में थे। सब श्यों की आर्से जमनी के एंग्लो हिटलर और ब्रिग के नयाहल अंगरलेन पर लगा हुई थी। इधर स्वदेश में राष्ट्रपति सुभाष भी तेजी से घूमते हुए यूरोप के इस अनाकार को बड़ गौर से देख रहे थे। हृदय में आया धीमे धीमे

सुलग रही थी वह देख रही थी कि उसके बिर उठाने का समय था रहा है। देश में जो उग्रपथी लोग थे वे सरकार को भारत के प्रति उपेक्षावृत्ति में ऊब चुके थे। अन्तर्राष्ट्रीयता के सिद्धि पर उन्होंने तूफान की जो काली छाया देखी तो उनके मन में इस अचरित का पूरा पूरा लालम उठान का हृदय निश्चय जाग उठा। एक कौने से आवाज उठी कि ब्रिटिश सरकार को अल्टीमेटम दे दिया जाय कि वह ६ महीने के भीतर भारत को छोड़ दे। कांग्रेस के त्रिपुरी-अधिवेशन से दो मास पून जल-पाईगुड़ी में श्री शरतचन्द्र बोस की अध्यक्षता में बंगाल प्रांतीय राजनैतिक सम्मेलन में एक प्रस्ताव स्वीकार करके कांग्रेस ने यह सिफारिश की गई कि वह ब्रिटिश सरकार का भारत छोड़ देने के लिए ६ मास का अल्टीमेटम दे अथवा स्वाधीनता के अधिकार सम्प्राप्त का शक फूट दिया जाय।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ आंतरिक विद्रोह का यह बाह्य रूप था। उग्रपथी लोग इस एक 'भीरों' पर देश के मारे गरमदलियों को मगडित कर रहे थे। राष्ट्रपति के उत्तरदायित्वपूर्ण पद से श्री सुभाष बाबू ने यद्यपि इस सम्बन्ध में कोई घोषणा नहीं की थी तथापि यही भावना उनके हृदय में सम्पूर्ण रूप से विद्यमान थी और वे अचरित की प्रतीक्षा में थे।

कांग्रेस के ५० व अधिवेशन का समय समीप था रहा था। जयलपुर के समीपवर्ती त्रिपुरी स्थान को उसके लिये चुना गया था। त्रिपुरी अधिवेशन कांग्रेस के इतिहास में एक सदा अमर अधिवेशन रहेगा। यह वही स्थल है जहाँसे गांधीपथियों व सुभाषपथी उग्रवादियों के के माग अलग अलग फूट गये। सुभाष बाबू न जैसे मत ही मन अनुभव किया कि अथ 'मा' को मुक्त करने का उपयुक्त अचरित आ गया

है और धीरे धीरे बाल गांधी पधियों के साथ उनकी पट्टी और अधिक
 दर गय नहीं बैठ सकती। गांधीजी ने त्रिपुरी अधिवेशन के अध्यक्ष पद
 के लिए डा० पट्टाभि का नाम प्रस्तुत किया। गांधीजी की नीति एवं
 कार्य प्रणाली में विश्वास करने वाले सरकार पक्ष, राजद्र वानू प्रभृति
 देश के मंत्र चोरी के नेताओं ने उय नाम का समर्थन किया। पर राष्ट्र
 पति सुभाष राय इसके विपक्ष में थे और वे अचमर का लाभ उठाने
 तथा अपनी योजना का त्रिधा जिन कारण की दृष्टि से आगामी वर्ष भी
 राष्ट्रपति पद पर बन रहना चाहते थे। उन्होंने अपना नाम नहीं
 रौगया। फलतः त्रिपुरी अधिवेशन के राष्ट्रपति पद के लिए देश के
 सामन दो नाम रहे—एक डा० पट्टाभि का और दूसरा श्री सुभाष राय
 का। यह चुनाव सद्यः देश के ११ प्रमुख नेताओं के बीच हुआ होकर
 दो परस्पर भिन्न आशा और कार्य प्रणालियों के मध्य था। गांधीजी
 ने बहुत जोर मारा, पर डा० पट्टाभि को चुनाव में सफलता नहीं मिली
 और श्री सुभाष राय भारी बहुमत से पुनः राष्ट्रपति घोषित कर दिए
 गए। देश ने सुभाष राय को अपना राष्ट्रपति चुनकर उठा उनकी
 भारतमता के प्रति की गयी अमूल्य सेवाओं का सम्मान किया, यहाँ यह
 भी दिया गया कि हरा कर तब किधर है। गांधीवादियों और 'धारे-
 धरि बने-की यह भारी पराजय थी। उस समय गांधीजी ने एक
 वक्तव्य में कहा था—यह डा० पट्टाभि की पराजय नहीं मेरी पराजय
 है।' पर सुभाष राय इस विषय में बड़े सतक से और वे यह नहीं चाहते
 थे कि राष्ट्रपति के चुनाव की इस घटना को समस्त कांग्रेस में फूट के
 रूप ले। इसीलिए चुनाव के परिणाम ही आपने घोषणा की— भारतीय
 स्वतन्त्रता के शत्रुओं को यह न समझना चाहिए कि हममें परस्पर फूट
 है। हम सब एक ही हैं। कांग्रेस की शक्ति अविभाज्य है।' पर त्रिपुरी

म पारस्परिक वैमनस्व का प्रदर्शन न टल सका। उन दिनों सुभाष बाबू तीव्र ज्वर से पीड़ित थे। वे अधिवेशन में स्टूंचर पर छोट कर आते थे। उनकी ऐसी अस्वास्थ्यपूर्ण अवस्था में ही कांग्रेस कार्यसमिति के पुराने वारह सदस्यों ने त्यागपत्र देकर एक गतिरोध पैदा कर दिया। इस अधिवेशन में राष्ट्रपति सुभाष ने अपने राष्ट्रपति के पद से दिये भाषण में ब्रिटिश सरकार को ६ मास का अल्टीमेटम देने का प्रस्ताव रक्खा, पर अधिवेशन में गांधीपंथी अधिनारी वर्ग की प्रचलता के कारण उनका प्रस्ताव श्य कार न हो सका। कांग्रेस में बढ़ते हुए इस विषय मतभेद तथा गतिरोध के कारण श्री सुभाष बाबू को अतत अध्यक्षपद से त्यागपत्र दे देना पड़ा और तब वे स्वतंत्र रूप से अपने उग्र विचारों का सुले आम प्रतिपादन करने लगे। इसी के परिणामस्वरूप अन्त में 'अप्रगामी दल' की नाँव पड़ी और कहा जाता है कि कलकत्ता के एक प्रसिद्ध मारवाड़ी सेठ ने उनको उसके मगडन के लिये गुप्त रूप से ५ लाख रुपये भी दिये।

सुभाष बाबू के इस कार्य से गांधीपंथियों और सुभाषपंथियों के मतभेद की खाई और भी गहरी हो गई। कांग्रेस कार्यकारिणी में गांधीवादी सदस्यों की प्रधानता के कारण श्री बोम को अनुशासन भंग का अपराधी घोषित करके तीन वर्ष तक के लिये कांग्रेस के पदों के अयोग्य करार दे दिया गया। पर सुभाष बाबू पद के इच्छुव नहीं थे। वे ठोस कार्य करना चाहते थे; इसलिए कांग्रेस अधिकारियों के इस सम्पूर्ण विरोध के बावजूद वे मैदान में उटे रहे।

उधर यूरोप में अचानक ही मशालें जल उठीं और ससार जिस क्षण की १९३२ से दिल धाम कर आशका कर रहा था वह आ पहुँचा। जमनी की विशाल पदाति सेना ने बिना कोई पूर सूचना दिय १ सितम्बर

की दमन में घोषणा पर धारणा कर लिया। २१ दिन बाद ही जिन
 की ओर मैं भी मुद्रा धारणा कर रही गई। मुद्रा की यह धारणा घोषणा में
 भार गूदा में फैलने लगी। जगती ने विदेशी की लज्जा में एक के बाद
 दूसरे देश पर धारणा करना शुरू कर दिया। मुद्रा प्रारम्भ हुए एक महीने
 में भारी बर्तन पाया था। एक मुद्रिया ने धारणा के साथ देखा कि जिन
 की यह धारणा शक्ति जिनके लगी भार संसार में धारणा थी, परन्तु
 भारने-भार। मिट्टी में मिट्टी जा रही है और जमनी में पौधे, पत्त,
 दमन के, बेरिपत्त, टाँपे-टोपे आदि प्राण पर कल्पा कर दिया है। इस
 की धारणा में भारत सरकार ने केन्द्रिय धारणा की ओर धारणा बिना ही
 भारत का भार से जमनी के विचार धारणा का लक्षण पर दिया। इस
 धारणा में भार देश में धारणा लगी गई, विचार का धारणा उभर पड़ा।
 यद्यपि यह धारणा नहर प्रकृति तथा जमनी के धारणा तथा
 इन्दी के धारणा के प्रति धारणा भाषणों में धारणा ही विरोध धारणा
 कर चुके थे, परन्तु भारत सरकार ने जनता की धारणा प्रतिनिधि केन्द्रिय
 धारणा की जा और धारणा करके देश का धारणा किया उसके बाद
 भी धारणा-धारणा भारतीय सहन नहीं कर सका। राष्ट्रीय धारणा-धारणा
 में इसके धारणा में धारणा पाया किन्तु यह धारणा का धारणा में १९३० में
 बहुत धारणा धारणा के धारणा देश के ७ प्राणों में जिन मन्त्रि मण्डल को
 स्वीकार किया था, उनका परिष्कार कर दिया। भारत सरकार की धारणा-
 धारणा धारणा का धारणा में काफी धारणा की गई। पर
 सरकार के धारणा पर भी नहीं रेंगी। वह सारी धारणा—धारणा
 भी धारणा का धारणा रही।

यूरोप की धारणा पर मुद्रा धारणा की धारणा हुए ७ मास बाद गये। इस
 में मैं बहुत धारणा रहो-रहल हुए और यूरोप के एक दिन धारणा रहे देशों

पर नाची भण्डे फहराने लगे । दुनिया को ऐसा लगा कि वह दिन अब दूर नहीं । जयकि न केवल ब्रिटिश साम्राज्य, जिसके राज्य में कभी सूर्य अस्त नहीं होता, अपितु सारी की सारी मित्र शक्तियां सदा के लिए नष्ट हो जायेंगी और जर्मनी का विजय साम्राज्य में बुनद होगा । एशिया तथा अन्य महाद्वीपों के जो राष्ट्र ब्रिटिश सरकार की गुलामी के शिकारों में पड़े हुए थे उन्होंने ऐसा अनुभव किया जैसे कफस की बुलबुल की मुक्ति का अवसर आ पहुँचा है । भारत में भी यही भावना विद्यमान थी । जनता यह चाहती थी कि ब्रिटिश सरकार के इस संपूर्ण अवसर का पूरा पूरा लाभ उठाया जाय, पर देश की सबसे अधिक शक्ति सम्पन्न एवं लोकप्रिय सस्था कांग्रेस के अधिकारीवर्ग का यह मत था कि असहयोग की सर्वप्रथम शक्ति को ही जल्द नहीं पड़ेगी । अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों से बाधित होकर ब्रिटिश सरकार को स्वयं भारत की स्वतंत्रता की घोषणा कर देनी पड़ेगी और उसके लिए कोई सक्रिय कदम उठाना न पड़ेगा । किंतु देश में उन लोगों की भी कमी नहीं थी जो इसके सधथा विपरीत मत रखते थे । वे इस स्वर्ण अवसर पर हाथ पर हाथ रख कर सुवचाप आजादी की प्रतीक्षा न करके कुछ कर गुजरना चाहते थे । सुभाष बाबू इनके लीडर थे । इसी का यह परिणाम हुआ कि जय १९४४ के मार्च में रामगढ़ के मी० आजाद की अध्यक्षता में कांग्रेस अधिवेशन हुआ, सुभाष ने देश के उन लोगों को संगठित करके एक समझौता विरोधी सभा की जो कांग्रेस की निष्क्रिय नीति तथा आजादी की घोषणा के स्वप्न में ब्रिटिश सरकार से हाथ मिला लेना चाहते थे । उसके बाद देश भर में युद्ध विरोधी आंदोलन शुरू हो गया । बहुत से उग्र-पथी लोग जेलों में डूब दिये गए । इसी अर्थ में थी सुभाष ने 'कलकत्ता की उस बदनाम 'कालकोठी' को हटा देना का आंदोलन

कहा किया जिसके विषय में यह कहा जाता है कि
 बगाज के नवाब सिराजुद्दौला ने वहाँ १८४ अंग्रेजों को घेर करके
 मार डाला था। अधिकारी प्रतिद्वन्द्वियों ने इस घटना को अप्रमाणिक
 एवं अमान्य बतलाया है और प्रायश्चर्याओं का भी यह कथन है कि
 उस छोटी सी कोठरी में १४४ आदमी चिनकर भी नहीं आ सकते।
 सुभाष बाबू भारतीय इतिहास के पन्नों में स इस झूठे कलक को मिटा
 देने के लिये कगिन्द्र थे। कालकोठी-पिराधी उस आन्दोलन में उनका
 धनक बगाजियों ने माप दिया। आन्दोलन के जोर पकड़ने पर बंगाल
 की तात्कालिक सरकार ने श्री सुभाष बाबू को गिरफ्तार कर नजरबंद
 कर दिया। इस नजरबंदी की अवस्था में उन्होंने मूक हस्पताल
 शुरू कर दी, जिसके परिणामस्वरूप उनका स्वास्थ्य दिन पर दिन तेजी
 से गिरने लगा। अवस्था यह आ गयी कि सरकार ने उनके जीवन को
 खतरे में देखकर कलक में बचने के लिए उन्हें मुक्त कर दिया और
 उन्हें अपने मकान से कहीं अव्यक्त न जान के लिए प्रतिबन्ध लगा दिया।

आखिर यह प्रतिबन्ध श्री सुभाष बाबू के लिये घटान सिद्ध हुआ
 और पिंजरे का पह पहली, जो अपनी तथा अपने देश की आजादी के
 स्वप्नों की पूर्ति लिये छटपटा रहा था, भारत के इतिहास में सदा अमर
 रहने वाले १६ जनवरी के स्वतन्त्रता दिवस को नौकरशाही की आँखों
 में धूल मोंड कर उड़ चला—न जाने किस ओर।

बर्लिन रेडियो पर

१९४२ का अग्रस्त मास शुरू हुआ था। लोग रेडियो पर कान लगाये हर क्षण नयी घटना की प्रतीक्षा में थे। जर्मनी का युद्ध दैत्य अपने लोह चरण से सारे यूरोप को रौद्रता हुआ विजली की तेजी से आगे बढ़ता जा रहा था। मित्रराष्ट्र किंकर्तव्यविमूढ़ हो रहे थे कि हिटलर की इस दुर्धन सेना के अप्रतिहत वेग को कैसे प्रतिरुद्ध किया जाय। उधर सुदूरपूर्व में जापान भी कहर बरपा कर रहा था। उसे युद्ध में वृद्धे अभी पूरे ८ मास भी नहीं बीते थे कि उसने एक ही झपाटे में प्रशांत सागर में हजारों मील की दूरी पर फैले हुए फिलिपाइन, जावा, सुमात्रा, सिंगापुर, बॉर्नियो, सोलोमन आदि अनगिनत द्वीपों पर कब्जा कर लिया था। नकशों के लाल रंग केसरिया होते जा रहे थे और प्रशान्त बर्तों क्षेत्र से ब्रिटिश साम्राज्य की सारी शान जागान की एक हा चोट से मिट्टी में मिली जा रही थी। ब्रिटिश सरकार हैराण थी कि वह क्या करे। दो पाठों के बीच में होने के कारण उसे यह सूझता न था कि वह धूल में मिले जा रहे अपने सुदूरपूर्वों साम्राज्य एवं प्रभुत्व को रक्षा कैसे करे। भारत में स्थान-स्थान पर कड़े प्रतिदण्ड लगा दिये गये थे। सरकार बड़ी आशक्ति और सतर्क

नी ठिकड़ी ऐसे सक जात में हिंसात्मक में कई विशास न बना हाताय ।
 अनेक स्थानों पर लोगों का भुरी रोडय, मनुने की मनायी कर नी गई
 थी और म्पिशा गुलम के आरमी इम तात में श्म थे (क कही कोई
 आरमी शक्तिन या टोडियो के पत्रपर का काम तो नही कर रहा) इत
 मिलनिसे में अनेक म्पत्रि परद जा चुके थे । अनेक रेडियो उम कर
 निष् गये थे । कांग्रेस न यह आशा की था कि सरकार परिस्थिति की
 जियमता से विषय होकर महयोग के लिए हाथ म्पयेगी, पर हुमा
 बिलकुल उलटा ही । ररपी और भी अधिक बिध गई और कांग्रेस की
 सारी आराण भुज में मिए गई । सरकार की आवाज सीज उपरा का
 पम्ब्याम यह हुमा कि ज दक्षिणपथी एक दिन सरकार के साथ सरत
 सहयता के लिये उद्यत थ उनमें भी सरकार के बिकाक म्पत्रिय विद्रोह
 का भाव धपनी एक गमाने लगा। आग अन्दर ही अन्दर सुखगती रही ।

अगल के प्रथम सप्ता में अम्बइ में अन्विज भा० कांग्रेस महा
 समिति का अधिवेशन जारी था । लोगों का इमवार बकी बकी आराण
 थी । सरकार की उपेक्षा और कांग्रेस की निम्निय नीति स जनता ऊप
 चुनी थी आर यह सपन के लिए अन्दर ही अन्दर तैयार थी । महासभा
 के नेताओं न भी इस बार बठार काम उठाने का निरचय कर लिया
 था । १९३६ में श्री सभाप बाबू ने जो कुछ कहा था, कांग्रेस के दक्षिण
 पथी आज उमे ह्मय मे अनुभव कर थ और यह समझ रहे थ कि
 लोहे पर घाट करन का समय था पनुचा है । विद्रोह क पू स में केवल
 चिगारी की तर थी । परन्तु महात्मा गांधी अम्पत्त सतकता आर साथ
 धीनता स काम बढ़ा रहे थे । कांग्रेस काय समिति की बैठक में भारत
 छोड़ो' प्रस्ताव की भूमिका समर न हा चकी थी । ८ अगस्त को सुले
 अधिवेशन में जब इम प्रस्ताव की रखा गया तो देश के बाने काने में

उत्साह और जाश की एक लहर दौड़ गयी। लोग तो तैयार बैठे थे। वे तो केवल इस प्रतीक्षा में थे कि सत्याग्रह का सूत्रधार और कांग्रेस की बागडोर सम्भालने वाला वह वृद्ध सेनानी महात्मा गांधी उठ क्या आदेश देता है। पर भारत के भाग्य में वे आदेश नहीं बदे थे। सरकार ने ६ अगस्त की भोर ही ही गांधी, नेहरू प्रभृति सब प्रमुख नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

देश के प्रमुख नगरों में टेलीफोन सबक उठे और नेताओं की गिरफ्तारी का यह समाचार सुबह होते होने ही सारे देश में आग की तरह फैल गया। यह सब कुछ एकदम अनाशित न होते हुए जनता ने विस्मय विस्फारित नेत्रों से इसे देखा और सुना। धैर्य ने अपनी सीमा ग्योद्री और निराशा के सीमातीव छोर से भीषण विद्रोह का एक ज्वार फूट पड़ा। आग की चिनगारिया देश के कोने कोने में छा गयीं और उन्नी आग में बड़ी बड़ी सरकारी इमारतें, दफ्तर, डाकखाने और स्टेशन धू धू करके जलने लगे। पटरियां उखाड़ी जाने लगी, रेलें गिरायी जाने लगी और सरकारी स्थानों पर बकाया किया जाने लगा। बलिया में आजाद के लिए बालूरी हुई जनता ने बिना कोई खून-खराबी किए मकानले की सरकार स्थापित कर ली। यह सब कुछ हुआ बिना किसी अधिकृत आदेश और पूर्ण याजना के। देश में जो कुछ जगह हुआ, झूत की बीमारी की तरह सब जगह वैसा ही हुआ। सरकार स्तम्भित थी। उसे इस प्रकार के देश-व्यापी विद्रोह की धाराका नहीं थी। पर फिर भी वह असावधान नहीं थी। विद्रोह के फूटते ही दमन का रौद्र चक्र तेजी से घूमने लगा। जगह-जगह गालियां चली, सामूहिक जुमान किय गए और सहस्रों-व्यक्तियों को गिरफ्तार करके जेलों में डाल दिया गया। भीषण दमन ने जनता में एक आतंक का बिठा

दिया। तद्विधि, सरकार के विरुद्ध गुप्त रूप से वैयक्तिक कार्रवाईयां जारी रही।

अचानक ही पावस की एक शाम को एक घटना ने लोगों को आश्चर्य से अभिभूत कर डाला। शाम का गाना खाकर लोग अपने-अपने घरों में धुरी रेडियो सुन रहे थे कि अचानक ही बर्लिन रेडियो से हिन्दुस्तानी उद्घोषक डा० अब्दुलराय मलिक ने घोषणा की—'शब थाप मताजी समापचन्द्र धोन का भाषण सुनिण।' यह एक असाधारण घटना थी। स भाष थापू ने अपने इस भाषण से २० मान तक लातता रहने के बाद जहाँ पहली बार यह प्रकट किया कि वे कहां हैं, बहा फॉर्मोस के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव का स्वागत करते हुए अगस्त घान्गोलन की सफलतापूर्वक संचालन की योजना भी देश के सम्मुख रखी। उसके बाद तो बर्लिन रेडियो से बगला, इ गलिश और हिन्दुस्तानी में उनके अनेक भाषण हुए और जर्मन सरकार ने तो उनके भाषणों के विवाह भरवा कर अनेक बार जर्मन रेडियो पर प्रचारित किए। इसी प्रकार के एक भाषण में श्री स भाप ने यह घोषणा की—

"ब्रिटिश प्रोपेगंडा के घाबजूद विवेकशील सब भारतीयों को यह तथ्य पूर्ण रूप से हृदयङ्गम कर लेना चाहिए कि इस विस्तृत समार में भारत का केवल एक ही शत्रु है—यह शत्रु है ब्रिटिश साम्राज्यवाद, जो १०० वर्ष से अधिक समय से उसका शोषण कर रहा है और जो 'मा-भारती' की जीवन-शक्ति को चूस रहा है।

"मैं मित्रराष्ट्रों का वकील नहीं हूँ। मेरा सम्बन्ध तो भारत स है जिन ब्रिटिश साम्राज्यवाद की पराजय हो जायगी, भारत आजा हो जायगा। दूसरी ओर यदि इस युद्ध में उसकी

जीत होती है तो भारत के माथे गुलामी का पट्टा शाश्वत काल के लिए बंध जायगा। भारत को इस समय स्वतंत्रता और दासता के बीच में से एक का चुनाव करना है। उसे चुनाव तो करना ही होगा

“ब्रिटेन के पेशेवर प्रोपेगैंडिस्ट मुझे शत्रु का एजेण्ट बता रहे हैं। अपने देशवासियों को भाषण करते हुए आज मुझे विश्वास दिलाने की आवश्यकता नहीं है। मेरा समस्त जीवन ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ एक लम्बे, निरन्तर लोह सघर्ष की कहानी है और वही मेरी ईमानदारी का सबसे बड़ी गारंटी है। अपने सारे जीवन में मैं भारतमाता की सेवा करता रहा हूँ। जीवन की अन्तिम लौ तक मैं उसी की सेवा करता रहूँगा। दुनिया के किसी भी हिस्से में मैं रहूँ, भारतमाता के प्रति मेरी निष्ठा व भक्ति सदा अटूट रही है और अटूट रहेगी।

“यदि आप लोग आज विभिन्न युद्ध क्षेत्रों में घटित घटना-क्रम का अपनी तथा निष्पक्ष दृष्टि से अध्ययन करें तो आप भी उसी परिणाम पर पहुँचेंगे, जिसपर मैं पहुँचा हूँ, कि दुनिया की कोई ताकत ब्रिटिश साम्राज्य के विनाश को नहीं रोक सकती। हिंद महासागर की चौकियाँ पहले ही ब्रिटेन की समुद्री शक्ति के हाथ से निकल गई हैं। माण्डले का पतन होगया है और भिन्न सेनाएँ वर्मा की भूमि से निकल बाहर कर दी गई हैं।

“देशवासियों! आज जब ब्रिटिश साम्राज्य इस प्रकार मिट्टी में मिला जा रहा है, भारत की मुक्ति का दिन समीप आ पहुँचा है। मैं आपको यह याद दिला देना चाहता हूँ कि भारत

की आत्मा की पहला लड़ाई १८५० में शुरू हुई थी और आत्मा की आत्मा लड़ाई मई १९४० में शुरू हो गई है। अपनी पसंद के लो। भारत की मुक्ति का यज्ञ की वही है,

“आत्मा दि। लो और भीरत की आत्मा लामिन फरो। और फिर उनके भयंकर का निर्माण पूरी आत्मा की के साथ निता किमी हस्तक्षेप के करा। एतत्त भारत में एक गेरी सामाजिक व्यवस्था कायम का कायमा, निमवा आत्मा काय, समाता और य भुवा क अमर सिद्धांत होगे।”

सुभाष बापू के इस प्रकार आत्मा कायमे प्रकट हो जाने पर देश भर में अफवाहों का बाजार शुरू हो उठा। लोग उनका भावने के सम्बन्ध में पुनः तरह-तरह की धमकें लगाने लगे।

निज समय सुभाष बापू घर से भागे, उस समय वे अन्न में गुन होकर फलजता के ऐलामिन राठ धाल अपने मकान के एक कमरे में नगरबंदी का जीवन बिता रहे थे। अपने परिवारों तक से मिलना-जुतना उठोने पिल्लुल बन्धु कर दिया था। कमरे में एक पर्दा लगा था। परन्तु की धाड़ में ही तब खान पान का सामान रख दिया जाता था और दूसरे दिन खाली बरतन उठा लिये जाते थे। कहते हैं कि देरी दुर्गा में उनकी परम भक्ता एव भक्ति की और वे इन प्रकार अज्ञात जीवन के शार्तपूष अर्थात् में मां दुर्गा का आह्वान कर रहे थे। ये शक्ति के साधक थे। और जब कोई आर्वात्त उनपर आती या वे किमी नये कार्य का शीगणेश करते तो दुर्गा की पूजा अवश्य करते थे, इसी निष्प अनेक अध विश्वासियों ने यह समझा कि उनके अचानक ही निरोहित हो जाने में नैधी दुर्गा का हाथ नहर है। पर जो नयी रीरानी को थे उन्होंने कुछ और ही अदान लगाये। कहते हैं कि सुभाष बापू एक गूने, बहरे पगल

का रूप धारण करके काबुल पहुँचे। उन्हीं की दाढ़ी बड़ी हुई थी। पेशावर से उनके साथ एक साथी और हो लिया था, जिसने उनके दुभाषिये का काम किया। काबुल पहुँचने पर अफगान गुप्तचर विभाग के एक सदस्य ने उनसे पूछताछ करनी चाही, किंतु सुभाष बाबू के साथी ने पुलिसवाले के मन में यह विश्वास बिठा दिया कि यह एक बंदर और गूंग पठान के सिपाही कोई नहीं। तथापि सुभाष बाबू को उस पुलिसवाले को चुश करने के लिए अपने हाथ फी घड़ी दे देनी पड़ी। काबुल में सुभाष बाबू एक गंदी सी सराय में जा ठहरे किन्तु यहाँ भी अपने को निरापद न समझकर उन्होंने श्री उत्तमचंद नामक एक भारतीय व्यापारी के यहाँ शरण ली, जिसे बाद में अफगान सरकार द्वारा निर्वासित कर दिया गया और जो भारत पहुँचने के दूसरे ही दिन पेशावर में भारतीय सुरक्षा पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।

सुभाष बाबू काबुल से भागना चाहते थे। किंतु युद्ध की परिस्थितियों बदल जाने और ब्रिटेन और रूस में मैत्री की निकट भविष्य में ही सम्भावना के कारण सोवियत सरकार ने सुभाष बाबू को रूस आने की अनुमति देने में असमर्थता प्रकट की। उधर जब काबुल स्थित जर्मन दूतावास को यह पता चला कि भारतीय राष्ट्रीय महासभा के भूतपूर्व अध्यक्ष भारत से बाहर निकल कर किसी निरापद स्थान पर पहुँच जाना चाहते हैं तब उसने तत्काल इस सम्बन्ध में बर्लिन के परराष्ट्र विभाग से पत्र व्यवहार किया और सुभाष को भी जर्मनी पहुँचने के लिए तैयार कर लिया। पर सुभाष बाबू को काबुल से बर्लिन भेजना सहज नहीं था और किसी भी समय सब रहस्य के प्रकट हो जाने की आशंका बनी हुई थी। अतः में काबुल में जर्मनों ने एक चाल खड़ी। बर्लिन धारी एक जर्मन को शोक लिया गया और उसका पासपोर्ट सुभाष

बाबू को देख कर उन्हें रस होकर बलिन खाना भर लिया गया। कन्वेट्ट कि १९४२ के मार्च के प्रथम सप्ताह में व बर्तन पट्टुय गए थे।

सुभाष बाबू व बर्तन पट्टुयते ही मुद्र पत्र का सम्पादन लेनी में शुरू कर लिया। उनका मारा समय प्रथम जमान मुद्र-संपादकों में सहायक सहायिका करने में बीत जाता था, एक बार व जमान मुद्र समिति से बातें करने में व्यस्त थे कि उनके पास का का एक बक डटा। उहाँन रिमीयर डटाया और पूछा—“कौन ?” डक्टर मित्रा—“एक अमेरिकन पत्रकार। आगते भेंट करना चाहता हू।” सुभाषबाबू ने उने तीन दिन बाद का समय लिया। भेंट में जो कुछ कहा हुई, उसका विवरण प्रायः फास्ट क वे हूए अमेरिकन पत्रकार ने सुभाष बाबू के प्रति निम्न हार्दिक उद्गार प्रकट किये —

“मैं सुभाष बाबू से मिलने गया। मिलने में पूर्व मुझे जर्मन अग्रजों के कारण अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अत्यन्त कड़ी पीड़ताएँ और जाच पड़ताएँ के बाद मुझे अन्दर प्रवेश की आशा मिली। अन्दर पहुँचते ही मैं स्वतन्त्र रह गया। मुझे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैं भारतीय वंश से आवृत्त किमी ग्रीक दक्षता के सम्मुख उपस्थित हूँ। श्री गोस मुखराय और उन्होंने मेरा स्वागत किया। ऐसा मधुर हाम और मेरा निष्पट स्वागत मेरे जीवन में एक अभूतपूर्व वस्तु थी।

‘ बहुत समय पूर्व लास एंजेलस के एक भारतीय अध्यापक के घर मैंने बुद्ध की प्रथम मूर्ति देखी थी। मुझे ऐसा अनुभव हुआ जैसे मैं साक्षात् बुद्ध के सामने बैठा हूँ। उहाँन मुझसे हाथ मिलाया और मुझे लगा जैसे मेरी अंगुलियों की तर्कों में हजारों वर्ष पुरानी भारतीय संस्कृति का जादू बिजली की

तरह भरता जा रहा है।

“मुझे ईर्ष्या हुई कि मैं एक हिन्दुस्तानी क्यों न हुआ। जोस
जैसा नेता पाकर मुझे मंत्र कुछ मिल गया होता।’

जर्मन युद्ध-प्रणाली और सैनिक संगठन के गम्भीर अध्ययन और
भारत को स्वतन्त्र करने की उनकी हृदयवर्ती योजना के इस स्वप्न-
काल में ही बर्लिन और हैम्बर्ग के बीच एक सैनिक शिविर में श्री
सुभाष की जर्मन फ्यूहरर से भेंट हुई। और उसी दिन सायंकाल जर्मन
परराष्ट्र विभाग की ओर से श्रीसुभाष कोस को ‘फ्यूहरर आफ इण्डिया’
की उपाधि से विभूषित किया गया। अम्बाराँ में उनके बड़े-बड़े फोटो
निकाले गए और फ्यूहरर से उनकी मुलाकात का पूरा वृत्तान्त, शब्द-
चित्र और जीवन कथा प्रकाशित की गई। सुभाष बाबू जर्मनी के लिए
मये नहीं थे। पहले भी वे जर्मनी आये थे और वहाँ के अधिकारीवर्ग
से भेंट कर चुके थे, पर इस बार जो योजना—जो स्वप्न वह लेकर आये
थे, उसने जर्मन राष्ट्र की दृष्टि में उन्हें आसमान पर पहुँचा दिया।
उक्त घटना के दो दिन बाद ही जब वे बर्लिन से हैम्बर्ग पहुँचे तो स्टेशन
पर दर्शनार्थी जर्मनों का सागर उमड़ रहा था। हैम्बर्ग के मेयर ने
उनकी गाड़ी का दरवाजा स्वयं खोलकर उनकी सम्मान प्रदान किया।
अभी वे गाड़ी से उतर कर बाहर आये ही थे कि स्थानीय नाजी पार्टी के
सेक्रेटरी ने उनसे भेंट की और कहा—‘क्या आप हमारी पार्टी की सभा
में भाषण देना पसन्द करेंगे?’ सुभाष बाबू जर्मनी में नाजीवाद या
जर्मनी की अपनी समस्याओं से उलझने नहीं आये थे। वे तो भारत
को आजाद करने के स्वप्न के पूर्ति में ही दुनिया भर की खाक छान
रहे थे। इसलिए उन्होंने एकदम उत्तर दिया—‘नहीं, मैं किसी दल
में नहीं जा रहा हूँ। मैं ही रही सभा में भाषण देने-भे-असमर्थ’

हूँ। यद्यपि मुझे जर्मन जनता के समस्त भारतीय समस्या का रचना है, तथापि मैं आप की पार्टी की सभा में मन्त्रिलिख नहीं हो सकता।”

अगले दिन जब हैम्बर्ग बारपारसन की धार से आपका स्वागत किया गया तो सभास्थल में अस्तिः मयर्डा की ध्वज में तिरंगे मयडे भी लहरा रहे थे और जर्मनी की सूपानी पौन के स्वयत्सेवकों ने अपनी टोपियों पर तिरंगे बैज लगाए हुये थे। सभा की कायवाही के प्रारम्भमें जर्मनी के राष्ट्रीय गीत के अलावा 'ब्रदेमातरम्' का भी गान किया गया। मेयर ने उपस्थित जन समुदाय को धी सुभाष का परिचय करने हुए कहा—

‘मैंने वर्षों पहले भी सुभाष का जियता से देखा था, किन्तु तब वे चेन्नल सुभाष थे, आज वे फ्यूदरर आफ इण्डिया’ हैं।

मानपत्र का उत्तर देते हुए धी सुभाष ने मेयर के उपयुक्त वचन का प्रतिवाद किया और कहा—“धर्मा पहले नहीं, अपितु नाम से, बियना मेंही नहीं अपितु प्रत्येक क्षण में केवल स्वाधीनता सपना का एक निपाही मात्र रहा हूँ, वही अन्न भी हूँ, न उसमें कम न उसमें अधिक।

जर्मनी रहते हुए वे स्तालिनवाद के मार्च पर भी गए और इतिहास के उस अभूतपूर्व और महा विकराल समय को अपनी आंखों से देखा। इसी बीच में इटली के बानाशाह बेनिगो मुसालिना और। वदेश-म त्री काउण्ट चियानो स भी भेंट की।

यूरोप के रगमथ पर स्वतंत्रता की रक्षा तथा शक्ति व अधिकार की प्राप्ति के इस भीषण सघर्ष को देखकर भारतमाता को रचना करने की जो साथ उनके हृदयमें वर्षों से उद्बुद्ध हो रही थी उत्तकी पूर्ण के साधन

पी प्रेरणा उन्ह मिल गई । यह तो उन्ह युद्ध के आरम्भ काल में ही
 विश्वास था कि भारतवर्ष युद्ध की परिस्थिति का लाभ उठाकर किसी
 विदेशी मन्त्र की सहायता से गुलामी का तौक उतार कर फेंक सकता
 है पर विश्वास को त्रिधा त्रिध पतने का अवसर उन्होंन अब ममका ।
 इन्होंने इस अवसर का चूकना उचित न समझा । जर्मन सरकार ने भी
 इस कार्य में उनका सहयोग दिया और उन्होंने मानु-भूमि को स्वतंत्र
 करने के करने महान स्वप्न का चरिताप करने के मार्ग में प्रथम चरण
 जर्मनी न आजाद हिन्द फौज की स्थापना के रूप में रखा । तभी के और
 लिविया के अन्य स्थानों से युद्ध-बन्दी बनाये गये बहुत से भारतीय
 उम समय जर्मनी के नजरबंद कैदियों में कैद थे । जर्मन सरकार ने सुभाष
 चाचू का यह सुविधा प्रदान कर दी कि वे उन सब युद्ध बन्दी सैनिकों
 का अपनी आजाद हिन्द फौज में सम्मिलित कर सकते हैं । सुभाषचाचू
 की इस जर्मनी स्थित आजाद हिन्द फौज में मिलने सैनिक थे और उसका
 पाम क्या क्या साधन-सामग्री थी इसकी कोई अधिष्ठित विस्तृत रिपोर्ट
 प्राप्त नहीं हो सकी है, तथापि जर्मनी की पराजय के बाद उग्र सेना
 के जो भारतीय सदस्य भारत में लाये जाकर दिल्ली के समीपवर्ती बहादुर-
 गढ़ शिविर में रखे गये, उन्होंने पढ़ा से मुफ होने के बाद जो वस्त्र-
 दिया है उसने पता चलता है कि उनकी संख्या १२००० से कम न
 थी, उनका प्रधान शिविर जर्मनी के ड्रेसडन नामक स्थान पर था और
 उसमें ८ बंगलियन थे ।

एक बार दिग्बर न आजाद हिन्द सैनिक तथा जर्मन सैनिकों की
 एक सम्मिलित रली न भाषण करते हुए कहा—“जर्मन सैनिकों और
 स्वाधीन भारतीयों ! मैं स्वतंत्र भारतीय सरकार के अस्थायी
 प्रधान हिज एक्सीलेंसी हर सुभाषचाचू नाम का स्वागत करत,

हैं। वे यहाँ नून वशागत भाग्यीयां का नेतृत्व करने आये हैं जो अपने देशकी प्यार करने तथा उसे स्वतंत्र करना चाहते हैं। उन्हें मनाद या आशा दना मेर तिर उद्विग्न नदी है, क्योंकि अथ वे एक स्वाधीन सरकार के सौचित्य हैं। जर्मन सैनिकों और तागरिकों। आप एक बात समझ लें। आपके न्यूयूह पर ता केवल एक कराह जनता की दित चिता का भार है पर हर घाम ने अपने देश के ८० करोड़ लोगों के हित की रक्षा की शपथ प्रण की है। अतः आप अपने न्यूयूह की भाँति ही हम यह सरकार आर हमर प्रजा के हित पूर्ण सम्मान प्रकट कर और सहयोग में।'

जगनी के प्रविद्ध पीछे माराल रोमेन ने भी एकबार हम धातल दिन् पीठ का निरोधन किया और यह प्रकट किया—“समार मे भारत के आन्तरिक मतभेदों का टिहोरा पीटा जाता है, बिन्तु मैं इन मिशहियां मे हिंदू मुसलमान को अलग-अलग नहीं पहिचान सक्ता। यस्तुत हों उनका भोजन, पोसाक, भाषा और आहृति समान ही है।”

हम प्रकार भारतवर्ष की भूमि से हजारों मील दूरी पर एक सवधा विदेशी रयाल में भारतवर्ष की बंधन मुक्ति के महान राष्ट्रीय उद्योग की भूमिका शुरू हो गई। स्वधार नेताजी मुभाय बोस ने जिस शान और निराशी धरा के साथ नाक का उद्घाटन किया, उसका टका जगनी के कोने-कोने में था उठा। बड़े बड़े जगन सेनापतियों और प्रकाण्ड राजनीतियों ने एक गुलाम देश के बहादुर सिपाही के इस धदमुत कारनामे को बड़े आश्चर्य और प्रशंसा के साथ देखा। जगनी एक स्वतंत्र देश था हम त्रिये वह स्वतंत्रता के मूल्य और स्वतंत्रता की

भाषना की कदर करना जानता था। इसी का परिणाम यह हुआ कि एक विदेशी भूमि पर भी गुलामी के खिलाफ किया गया यह संगठित सैनिक विद्रोह अपनी पूरी शानदान के साथ चलने लगा।

घात में लगभग १०० वर्ष पूरे भी ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ इसी प्रकार के एक नाटक की रचना की गयी थी। किन्तु जहाँ यह नाटक सात समुद्र पार किया जा रहा था, वहाँ उसका बीजारोपण भारत के शाही नगर दिल्ली में हुआ था। मुगल सल्तनत के अंतिम सम्राट बहादुरशाह उस समय तख्तनशीन थे। ईस्ट इण्डिया कम्पनी मौदागर से शासक बन गयी थी और कम्पनी के अधिकारीगण इस इस सस्था को जहाँ अपनी स्वार्थपूर्ति का साधन बनाये हुये थे, वहाँ उन्होंने अपनी कृत्नीति द्वारा हिंदुस्तान के राजाओं और नवाबों के साथ इस प्रकार की संधियाँ कर ली थीं कि कम्पनी एक व्यापारी सस्था न रहकर उनकी एक 'दयालु सरकार' बन गयी थी। हिंदुस्तान की धन दौलत पहली बार एक याकायदा याचना के अंतगत इस देश से बाहर जाने लगी। हिंदुस्तान के शासक कमजोर और पेशपरस्त हो चुके थे, किन्तु फिरगियों की कृत्नीति को वे भाप गये और बड़े मुगल बादशाह के नेतृत्व में सारा देश अपनी आजादी के लिए उठ खड़ा हुआ। नाना पदनवीस, तांतिया टोपी और झासी की रानी लक्ष्मीबाई के नेतृत्व में हिन्दू-मुसलमान सब एक साथ विद्रोह करने लगे। कम्पनी की हुकूमत समाप्त हो जाती, किन्तु भारत के दुभाग्य और अंग्रेजों के कृत्नीति ने इस विद्रोह को सफल न होने दिया और पंजाब के सिखों की मदद से १८५७ की इस स्वातन्त्र्य जागृति को पूरी तरह कुचक्र दिया गया। तब से गुलामी की जो जजोर हिन्दुस्तान के गले में पड़ी, वह अब तर बहो कायम है। इस मध्यवर्ती काल में पंजाब, बंगाल, गुजरात

आर महाराष्ट्र में अनेक विप्लवों में शामिल हुआ, परन्तु अखंडी भावना में किये गान पर भी आक्रामक फैलाने से अधिक वे कुछ न कर सके। इन विप्लवों का सङ्गठन कुछ व्यक्तियों की कारवाहीया तक ही सीमित था। आर उनके कार्य अभी अभी विजली का चमक की तरह चमक मात्र विद्युत् मात्र रह।

सन् १८८५ में, जब कि भारत में छोटे-छोटे विप्लव सिर उठा ही रहे थे श्री ह्यम के नेतृत्व में कांग्रेस की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य वैधानिक आधार पर सघर्ष करके भारत के लिए कुछ सुविधाएँ प्राप्त करना था। सन् १९०८ की सूरत कांग्रेस तक इस संस्था ने कोई विशेष कार्य नहीं किया। उसका सारा कार्य कुर्सियों पर बैठ कर विभागीय विमर्शपूर्ण और प्रस्ताव पास करने तक सीमित रहा।

इनके बाद कांग्रेस में तिलक, गोपाल और एनी बसन्त का युग रहा और उन्होंने अपने कार्य द्वारा कांग्रेस के निष्क्रिय शरीर में एक नया जीवन प्रकट किया। १९२० में महात्मा गांधी ने, जो कि दक्षिणी अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों के लिए किये गये सघर्ष में विजय लाभ करके लौटे थे और उनके साहस, सहिष्णुता और धैर्य की घटनाएँ कहानियाँ बन कर दूर के दूर दूर कोने में फैल गई थीं, कांग्रेस की बागडोर संभाली। उनके पास नये विचार, नयी योजनाएँ और दक्षिणी अफ्रीका में किये गये अहिंसक असहयोग के सफल परिणाम थे। १९१९ में रौलट एक्ट के खिलाफ उन्होंने विप्लव अहिंसक प्रतिरोध का संगठन किया था उसकी शक्ति और परिणामों की सूचना देश को मिल चुकी थी। इससे पूर्व लोकमान्य तिलक और गोपाल आदि ने कांग्रेस का नेतृत्व करते हुए देश में ब्रिटिश सरकार के विनाश भावना को अवश्य उद्बुद्ध कर दिया था, पर उनका कार्य शहर तक ही सीमित रहा था। उनके समय में

जो हड़ताल, बंधाए गए और अन्य सरकारी विरोधी कार्य हुए वे शहरों की सीमा पार करने गांवों तक नहीं जा सके। उनका प्रमुख कार्य अपने अधिनारा के लिए सचय, और देश में स्वतंत्रता की भावना की जागृति ही रहा, पर वे देश को इसके लिए कोई नवीन योजना, विचार और कार्यप्रणाली नष्टा दे सके। गांधीजी के कांग्रेस में प्रविष्ट होते ही भारतीय स्वतंत्रता के सचय में एक नय युग का शीर्षक हुआ। उन्होंने सत्याग्रह को अपना अस्त्र बनाया और अहिंसा को ढाल। सन २७ वर्षा में आजादी के लिए किए गए भोपण सचय में उन्होंने इन्हीं योजनाओं से अनेक बार नौकरशाही के नाकों धन चया दिए हैं और राजनैतिक जागृति और अहिंसक विद्रोह का झण्डा भारत के सुदूरतम गांवों तक म लहरा दिया है।

अहिंसक सचय के इन २७ वर्षों में भारतमाता का अान पर भर मिटने की आकांक्षा रखने वाला ने समय समय पर हिंसक विद्रोह भी लदे किये।

यह बात स्मरण रखने योग्य है कि उपर्युक्त प्रत्येक घटना के पीछे आतिकारी युवकों की टोलियों की टोलियों का हाप था। इन टोलियों में न केवल युवक अपितु युवतिया भी थीं और वे अपने पर सँपे गए कार्य को ज्ञानपर खल कर भी पूरा करती थीं।

सन १९३५ के नवीन शासन विधान के अनुसार, कांग्रेस द्वारा देश के ११ प्रांतों म से ७ में अपने मन्त्रिमण्डल स्थापित किए जाने तक ब्रिटिश शासन और प्रभुत्व के विरुद्ध असंगठित विद्रोह की बिगा रिया बराबर चूटती रहा।

अखिर इन आतकवादी प्रवृत्तियों का युग भी समाप्त होगया। पर हिन्दुस्तान की आजादी के सचय पर वह अपनी कुर्बानी के जो खाल

दाग छाड़ गया है वह सदा अमिट रहेगा । ये पवित्र बलिदान व्यर्थ नहीं
 गए । देश की भारी सतति पर उनकी निष्कपट, सादसिकता और
 देश के नाम पर सय वुछ होम कर देने की भावना का जो प्रभाव पड़ा
 है उसी का यह फल है कि आज गांधीवाद के इस अहिंसक युग में भी
 भारतमाता की मुक्ति के लिए किए गए समस्त सशस्त्र विद्रोह की
 एक ऐसी गौरवपूर्ण गाथा लिखी जा रही है कि उसकी उपमा अब तक
 के भारतीय इतिहास में ढूँढे भी नहीं मिल सकती ।

ब्रिटिश प्रभाव की होली

मलाया की रानधानी के अभेद्य एव दुर्जेय दुग पर जापान का सूरज-मुरी कण्डालहरा रहा था और सुदूरपूर्व के आगमन में ब्रिटिश प्रयाप और शौर्य की चिता धू धू करके जल रही थी। १५ फरवरी १६४२ की यह घटना है, जो इतिहास में सदा एक अमर याद बनकर रहेगी। सम्राट को ईश्वर का तूत मानने वाली जापान की दुर्घर्ष सेनायें अपने सामने के दूर-दूर तक फैले समुद्र व आसमान को चीरती और एक के बाद एक द्वीप को फतह करती हुई अप्रतिहत वेग से सार दक्षिणी एशिया पर आ रही थीं। ७ दिसम्बर को जापान के युद्ध में कूदने के बाद अभी ३ मास भी नहीं बीत पाये थे कि पल हाबंद, गुघाम, वेकद्वीप, हांगकांग मनीला, पेनाग आदि सब प्रदेश एक एक करके ब्रिटेन के हाथ से छीने जा चुके थे और थाईलैंड से बढ़ती हुई जापानी सेनाएँ एक ओर मलाया में और दूसरी ओर सोगुई, तिनाय और मौलमीन पर अपना कण्ठ फड़राती हुई बर्मा की ओर बढ़ रही थीं। पेगू और सितांग की घाटियों में जापानी ही जापानी छाये हुए थे। २० दिसम्बर को जापान के 'आदम-धर्मों' ने सितांग के बन्दरगाह पर स्थित 'रिप्लस और 'प्रिंस

आफ वेस्त' जैस भीमहाय मित्रिग सुद्धरों पर कहर बरपाकर के
 मरणा सुद्धर में एक शानक छा दिया था और मित्रिग का चक्रवर्ति
 की सारी शास और शीकल, जिसके डके कभी दुनिया के हर काने में
 बज रहे थे, समुद्र के गन्ने और मंगोल पानी के साथ बही जा
 रही थी। मित्रिग शेर ने पहली बार मुंह फेंक, थाइ थी और उमे अजुभव
 हो रहा था कि सुद्धरों के हम बने में कबल काने पीले मोरक नहीं
 बसते हैं। इन पर अन्त काल तक शासन करने की मुगल कल्पना
 यह मल पदा था। वह महोरी जापाके एक ही प्रकार का कहर हो
 गई। सिंगापुर का बट दुर्ग, जिसके निमाण में ३ करोड़ पीपल (लगभग
 ४० करोड़ रुपया) ब्यव किये गए थे और जिसकी अजयता के चर्चे हर
 जवान पर थे, थाइ में मित्रिग दिया गया था और उमका नाम मन्ज
 कर शोनात (द्रविण का प्रकार) कर दिया गया था।

ब्रिटिश अफसर, औरतें और बच्चे विमानों में चकर और भारतीय
 सैनिकों व नागरिकों को उनकी विस्मय पर छोड़कर मुरविग स्थानों
 में भागे जा रहे थे। आकाश विमानों की धुंध से गुजरित था। कर्नल ह
 हजारों भारतीय विपाहियों को जापानी सेनापति मैजर पुषिहारा के
 हाथ लीप कर भाग चुके थे। सिंगापुर बन्दरगाह के पत्तन के साथ
 ही १५००० ब्रिटिश, १३००० आस्ट्रेलियन तथा २२००० भार
 तीय सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया था और इस प्रकार मचाया
 की ५० लाख जनता जापानियों के हाथ आ चुकी थी।

उस समय सिंगापुर के पत्तन के बाहर २३ अप्रैल, १९४२ को
 तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री चंचल न मित्रिग लोक सभा के गुप्त अधिवेशन
 में निम्न हुए एक प्रतिहासिक भाषण में कहा था—'इस परानव्य स
 लाइन आस्ट्रेलियन लोग भारतीय फौजों पर लगाते हैं तथा

अन्य मूर्तों से इसकी बदनामी आस्ट्रेलियनों के गले मदी जाती है। १८ वें हिंदीजन की कायरता आलोचना पर विषय धन गई है इस प्रकार एक दूसरे पर आरोप करने की काह सीमा नहीं रही है।

“जापानी इस समय भारत पर भी चढाई कर सकते हैं। यदि जापानी भारत के एक विशाल भू भाग को विद्वलित करने, फलकत्ता, मद्रास पर कब्जा जमाने तथा रक्षात्मक साधन हीन भारतीय नगरों को अपनी अधाधु ध धमशारी में ध्वस्त करने के लिए अपनी शक्ति को इस ओर केन्द्रित करना चाहें तो इस निशा में शत्रु उनकी सफलता के प्रम्वन्ध में किसी प्रकार का सन्देह नहीं रह गया है।”

ब्रिटेन की राष्ट्रिय प्रभाव की जो छाप मलायावासियों के दिलों में अंकित थी वह मिटती जा रही थी और उनका सोचा हुआ धर्मिमान धीरे धीरे अपना सिर उठा रहा था। अभी तक उन्होंने गुजामी शत्रु पद पद पर अपमान का ही अनुभव किया था। इस नये प्रकार का वेगकर जैसे उनमें नवीन जीवन दीव गया।

मलाया धपन िन के उत्पादन तथा रबड़ की खेती के लिए दुनिया में विख्यात है। दुनिया का ३८ प्रतिशत टिन और ४१ प्रतिशत रबड़ यहाँ से प्राप्त किया जाता है। मलाया की इस सारी संपत्ति के पीछे प्रथमी हिन्दुस्तानियों और वहाँ के धपन स्थानियों का अग्रज हाथ है, इसकी कल्पना सहच नहीं है। हमसे मिलने के लिए हमें पता होगा कि तत्कालीन मलाया के निवासियों के धपन की धाराम के साधनों के

पसीने के दाग लगे हुए थे, परन्तु इतना सब कुछ करने के बाद भी वहाँ के प्रवासी भारतीयों की अवस्था दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों से अच्छी नहीं थी। जाति, धर्म व धर्म-विद्वेष की भावना पूर्ण रूप से विद्यमान थी। जिस मलाया का उन्होंने अपने स्तन से निर्माण किया था उसी के मुक्त उपभाग में वे स्वतंत्र नहीं थे। केवल काले होने की वजह से उन्हें पद पद पर शोषित और अवमानित होना पड़ता था। मलाया के शासन में उनकी कोई पूजा नहीं थी और वहाँ के बड़े बड़े होटलों, और अपनी शान्ति शौकत से चौधिया देने वाले धार्मिक प्रयोग और अत्याचारीयों के द्वार हिन्दुस्तानियों के लिए बन्द थे। सिंगापुर का 'स्नान क्लब' केवल गारी चमकी चालों के लिए सुरक्षित था। उसमें भारतीयों के प्रवेश की इजाजत नहीं थी। और यदि कोई भारतीय अफसर जोर लगाकर, प्रोपेगैण्डा करके अन्दर प्रवेश भी पा जाता था तो भी उस एक अस्थायी पदार्थ भ्रमणकर अलाकार में स्नान करने की इजाजत तो, विच्छिन्न नहीं दी जाती थी।

यह स्थिति असह्य थी, पर वे विवश थे। तिर उठाने का मौका न था, पर अब जापान द्वारा ब्रिटिश सेना को पराजित व मुह छिपाकर भागते देखकर उनकी नसों का ठण्डा पड़ा खून, खौल उठा था और विद्रोह एवं प्रतिशोध की एक भावना मलाया के इस कान से उस क्षीने तक जग उठी थी।

उन्हीं ही एक दिन जापान के सैनिक प्रधान शिविर के मैजर पुजि-हारा ने मलायावासी कुछ हिन्दुस्तानी नेताओं को आमंत्रित किया और उनके सामने यह स्पष्ट किया कि—'इ ग्लोबल की सैनिक शक्ति समाप्त हो गई है और आपके लिए वह समय आता है कि आप बड़े

और अपने देश की आजादी के लिए कदम बढ़ायें। जापान आसकी हर तरह से सहायता करने को तैयार है। यद्यपि भारतीय प्रिटिश प्रजा हैं और हम नान वे भी जापान के शत्रु कहे जा सकते हैं, पर जापानी इस बात को जानते हैं कि आप स्वयंसे से प्रिटिश प्रजा नहीं है। इसलिए यदि आप प्रिटिश नागरिकता का परिष्कार करते तो हम आससे मित्र बन व्यवहार करने के लिए तैयार हैं। आप लोग 'इन्डिपेंडेंस लीग' का निर्माण कीजिए। मैं इस काय के लिए सब सुविधाएं दे सकूंगा।"

मेजर फुजिहारा के इस प्रस्ताव से हिन्दुस्तानी नेताओं की बाँटें खिल गईं। उन्हें और क्या चाहिए था। वे तो इस प्रतीक्षा में ही थे कि भारतमाता की मुक्ति के लिए कोई सशक्त राष्ट्र उनकी शस्त्रास्त्र आदि से सहायता करे, पर फिर भी वे एक दम असह्यमान नहीं थे। वे स्वाभिम्व का परिवर्तन नहीं चाहते थे। यद्यपि जो जापानी मलाया में आण थे वे भारतीयों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण थे, पर इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि भविष्य में वे भी गौरांग महाप्रभुओं की ही तरह व्यवहार नहीं करने लगेगे। इसलिए भारतीयों के दिव में मेजर फुजिहारा के प्रस्ताव से जहां प्रसन्नता का संचार हुआ वहां उसकी ईमानदारी के विषय में शका भी उत्पन्न होगई। वे नहीं चाहते थे कि ब्रिटेन के खिलाफ वे जापान के साथन बन। वे तो अपने देश की आजादी के लिए जान कुर्बान करना चाहते थे। किसी के साम्राज्य विस्तार की महत्व-कांक्षा की पूर्ति के लिए वे अपना खून बहाना नहीं चाहते थे। इसलिए उन्होंने मेजर फुजिहारा को कहा कि वे परस्पर विचार विनिमय करके फिर उत्तर देगे।

२१ फरवरी, ४२ को भारतीय नेताओं की ओर से एक लिखित उत्तर मेजर फुजिहारा को मिला। उसमें लिखा था कि विषय इतना

नाशुरु है कि इस पर सम्पूर्ण मलाया की भारतीय जनता के नेताओं से परामर्श लेना आवश्यक है। उन्होंने मेजर कुनिहारा को लिखे पत्र में मलाया की सेटल इंडियन एसोसिएशन का भी जिन किया और प्रार्थना की कि उसके अध्यक्ष श्री एन० राघवन को उक्त विषय पर परामर्श करने के लिए सिंगापुर बुलाया जाय।

अतिचारी श्री राम विहारी घोष ने भारत से भ्रमकर जापान में शरण ली थी धार इस समय वे टोकियो में थे। उन्होंने इस जन जागरण का सार्वभौम और सान्द्र देखा। १६१२ की स्मृतिया हरी हा उनी। उन्हें लगा जैसे भारत को मुक्त देखने का उजा स्वप्न चरितार्थ होने को है। उन्होंने टोकियो में एक सम्मेलन करने की योजना बनाई और २८ फरवरी को उन्होंने उसमें मलाया के सब नेताओं को सम्मिलित होने का निमन्त्रण किया।

यह वह समय था जब वि० बर्मा के जंगलों और पहाड़ों को फाँटी हुई जापानी सनाए भारतीय सीमा की धार बंदी चला च रही थी। ७ मार्च को बर्मा की राजधानी रगून और ६ मार्च का पेगू का पतन हो गया था।

इधर १० मार्च को शानान में भारतीयों का एक बृहत सम्मेलन हुआ। मलाया के प्रत्येक प्रदेश के प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए। थाइलैण्ड से भी कुछ प्रतिनिधि आये। श्री राम विहारी घोष ने टोकियो सम्मेलन में सम्मिलित होने का जो अन्मन्त्रण सिंगापुर के भारतीय नेताओं के पास भेजा था उस पर काँग्रेस में विचार किया गया। जापानी लोग इस बात के बड़े इच्छुक थे कि उ सम्मेलन हो और भाषा कार्य की रूपरेखा निर्धारित कर ली जाय। पर मलाया के भारतीय नेताओं ने धीरे धीरे कदम बढाना ही श्रेयस्कर समझा। उन्होंने

यह निश्चय किया कि टोकियो में एकशिष्टमण्डल भेजा जाय जो जापान सरकार की सम्पूर्ण गतिविधि और ह्रादों का पता लगाये । जापान की मद्भावना और दृमानदारी की परीक्षा के लिये ये स्थानीय जापानी सेनापतियों पर भारतीय बंदियों को जेल से मुक्त करने के लिये जोर डालते रहे ।

उन दिनों सिंगापुर में जो भारतीय बन्दी बना लिये गये थे उनमें आपस में बड़ा विवाद चला करता था । उनमें से अधिकांश का यह मत था कि यदि जापानिया ने उ हों अपने हाथ का रिस्कीना बनाना चाहा तो वे साफ़ इन्कार कर देंगे, परन्तु यदि उहाने भारतमाता की ब्रिटिश साम्राज्य की बेदियों में मुक्ति के लिये सेना संगठित करने में सहायता की तो वे खुशी खुशी स्वीकार करेंगे । उनमें यह भावना धीरे-धीरे बढ़ती जा रही थी कि एक सैनिक के नाते निष्ठावान रहने की जो शपथ उन्होंने ग्रहण की है वह देश के प्रति है—किसी व्यक्ति विशेष के प्रति नहीं । इस अवसर पर ही एक बार मेजर फुजिहारा कुछ भारतीय अफसरों के साथ आम समर्पित बन्दी सैनिकों के सम्मुख उन्से यह अपील करने गये कि वे जापानी सेना के साथ बन्धे से कन्धा भिदाकर अपने देश की आजादी के लिये लड़े । तब क० मोहन सिंह ने यह कहा कि हम आजाद हिंद फौज का निमाण कर रहे हैं और हम भारत की आजादी के लिये ही लड़ाई लड़े गे । आप सब लोगों को उसमें शामिल होना चाहिये । बाद में कप्तान शाहनवाज, कप्तान सद्गल व ले० दिग्गं भी सैनिकों से घरीलें करते रहे । इससे पूर्व भी १५ फरवरी १९४२ को जब बनल हट ने मेजर फुजिहारा के हाथ उह सौपा था तब मेजर फुजिहाराने जापान के पाठ राशन की कमी के कारण कहा था— 'जापान सरकार आपको बन्दी रखने के लिए तैयार नहीं । अब आप

सब आजा है। मैं धार सबको वपान मोहनमिह के हवाले करती हूँ, जो सुप्रीम कमाण्डर होंगे और धार सबको उनका दुषम मानना पड़ेगा।

इसके बाद कप्तान मोहनमिह ने मै नकों की भाषण देते हुए कहा— हम एक आजा पीग बनायेंगे, जो कि हिन्दुस्तान को आजाद कराने के लिये लड़गी। क्या आप सब इसके लिये तैयार हैं? इस पर सबने दानों हाथ ऊपर उठाकर पगदियाँ उछालीं और प्रसन्नता प्रकट की।

२३ मार्च का अडमान का पतन हो गया और उसके ५ दिन बाद ही २८ मार्च को टोकियो में श्री रायविहारी दासकी अध्यक्षतामें टोकियो सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। जापान, मलाया, चीन और थाईलैंड के अनेक भारतीय उसमें सम्मिलित हुए।

इसी बीच में एक घटना घट गयी जिसमें सारे भारतवर्ष में मातम छा गया। लोगों ने आश्चर्य एवं दुःख के साथ सुना कि सुभाष बाबू एक विमान-दुर्घटना के शिकार हो गए। समाचार पत्रों ने काले बाडर में इस अत्यन्त दुःखमय समाचार का प्रकाशित करके उनके प्रति श्रद्धाञ्जलियाँ अर्पित कीं, जीवन कथाएँ छापीं और नवाओं ने उनके अद्भुत व्यक्तित्व और शौर्य के प्रति अपने हार्दिक उद्गार प्रकट किये। बोम्बेई सम्बाद समिति द्वारा यह समाचार प्रचारित किया गया कि थाईलैंड में जो विमान टोकियो-सम्मेलन के लिये भारतीय प्रतिनिधि लेकर आ रहा था वह रास्ते में ही गिर कर टूट गया, जिसके परिणाम स्वरूप श्री सुभाषबाबू दोस सहित उमर्र के नव यात्रियों की मृत्यु हो गई। पर बाद में उक्त सम्बाद समिति द्वारा ही यह समाचार देने पर अर्थात् प्रसन्नता की लहर छा गयी कि उक्त विमान में श्री सुभाष बाबू न आकर श्री स्वामी सत्यानन्द पुरी थे।

टोकियो-सम्मेलन में इण्डियन इण्डिपेंडेंट्स लीग के निर्माण का निश्चय किया गया और उसका यह उद्देश्य निर्धारित किया गया कि— 'बहु पूर्ण स्वतंत्रता और प्रत्येक प्रकार के विदेशी प्रभुत्व हस्तक्षेप और नियंत्रण से मुक्ति प्राप्त करेगा।' 'थानाद् हिंद फौज' के निर्माण तथा जून में बम्बे में पूर्वी एशिया के सब भारतीयों के प्रतिनिधि-सम्मेलन के बुलाने के निश्चय किये गये।

२२-२३ २४ अप्रैल को शोनान में इण्डियन इण्डिपेंडेंट्स लीग की सब शाखाओं का एक अखिल मलायी सम्मेलन हुआ, जिसमें सब शाखाओं के कार्य के नियंत्रण के लिये एक केन्द्रीय समिति की स्थापना की गई और स्वास्थ्य, समाज सेवा, डाक्टरी सहायता और राजनीतिक संगठन इत्यादि का निश्चय किया गया। इसका यह परिणाम हुआ कि १० मई १९४० तक इण्डियन इण्डिपेंडेंट्स लीग के कुल सदस्यों की संख्या ६५००० हजार तक जा पहुँची और पेगाग, पैराक, केदाह, सेला गोर, नेगरी सेमबिलान, मलाया और जेहोर आदि राज्यों में उसकी शाखाएँ और २३ उपशाखाएँ स्थापित हो गईं।

शोनान-सम्मेलन में पूर्वी एशिया के भारतीय प्रतिनिधियों के जिस सम्मेलन का निश्चय किया गया था वह बम्बे में १५ जून को आरम्भ होकर २० जून तक चला। जावा, सुमात्रा, इंडोचीन, थोर्निया, मलुकुओ, हागकांग, बर्मा मलाया और जापान के भारतीय प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए। हमकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि इसमें युद्धबंदियों के प्रतिनिधियाँ ने भी भाग लिया। अब इण्डियन इण्डिपेंडेंट्स लीग की अधिकृत रूप से स्थापना कर दी गई और उसके विधान को स्वीकार कर लिया गया। उसका आदर्श रखा गया—'एकता, विश्वास और बलिदान एकता से एक भण्डे के नौचे सब भारतीयों का सङ्ग, विश्वास से

भारतीय स्वतंत्रता की अविनाश्य प्राप्ति में ब्रह्मा तथा अज्ञान में स्वतंत्रता की क्षय की पूर्ति के लिए जल एक बार जेता सम्मिलित था। सम्मेलन में भाग का एक और अविनाश्य घटक बन कर हुए वह निश्चय किया गया कि उसकी सब प्रवृत्तियाँ राष्ट्रीय होंगी और उनमें अहिंसा, धर्म व सत्यता की भावना के लिए कोई स्थान नहीं होगा। उसका सम्पूर्ण सामान्य और कार्यप्रणाली भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के उद्देश्यों के अनुकूल होगी। सम्मेलन में लोग की सामान्य प्रवृत्ति के विचार में स्वतंत्रता प्राप्त की रचना प्र राष्ट्रीय सेना के रूप में घोषणा किया जायेगा, एक उभये भारतीय सेना के समान स्तर पर प्रतिष्ठित करने का निश्चय किया गया। यह बात १९४२ शब्दों में व्यक्त कर ली गई कि यह जेता भारत विदेशियों के साथ युद्ध करेगा तथा भारत की स्वतंत्रता की प्राप्ति व सुरक्षा के उद्देश्य से प्रयुक्त की जायेगी—किन्तु अन्य उद्देश्यों के लिए नहीं।

समान-सम्मति में प्रधान के अतिरिक्त ४ अन्य सदस्यों के नियुक्त किए जाने का निश्चय किया गया और इन निश्चय के अनुसार भी रास बिहारी बोस उसके प्रथम प्रधान तथा सर्वश्री एन० रायचन, के० पी० के० मनन, के० माटा सिंह और बनज जी० एच० क्लिफोर्ड सदस्य नियुक्त हुए।

सम्मेलन में यह प्रस्ताव की कि 'भारत सरकार यह घोषित करे—' 'ब्रिटिश साम्राज्य में भारत का सम्बन्ध विच्छेद होने के अविनाश्य घटक ही वह उसकी प्रादेशिक अल्पवृत्तता का सम्मान तथा राजनैतिक, सैनिक अथवा आर्थिक अवस्था प्रभाव नियंत्रण व हस्तक्षेप से मुक्त भारत की सर्वोच्च सत्ता को स्थापित कर लेगी। किन्ती भी भारतीय को शत्रु नहीं समझा जायेगा और शत्रु सम्पत्ति सम्भरकर उसकी सम्पत्ति जप्त नहीं की जायेगी।

कांग्रेसके तिरगे म्पेडेके ही इस सम्मेलाम इन्डियन इन्डिपेंडेंसलीग का म्पेडा स्वीकार पर लिया गया थीर जापान सरकार से यह प्रार्थना कर् गई कि सुभाष बानू को पूर्वी एशिया पदुचने की सुविधाण दी जाय, जिपमे कि व भारतिय स्वतन्त्रता आन्दोलन का प्रभावशाली तरीके पर नेतृत्व कर सवें ।

इस सम्मेलन का मलायावासी समस्त भारतवासियों पर इनना गहरा प्रभाव पदा कि सहस्रों व्यक्तियों ने आ० हि० फौज व इन्डियन इन्डिपेंडेंस लीग में सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की । परिणाम यह हुआ कि लीग की सदस्य सख्या १,२०,००० तक जा पदुची थीर उसही शाखाए २० वें स्थान पर अब ४० होगई ।

दिनों के बीतने के साथ १९४० का अक्टूबर माम भी आ पदुचा, अकौक-सम्मेलन में जो प्रस्ताव पाम किए गए थे, जापान सरकार का उनके विषय में कोई उत्तर प्राप्त नहीं हो सका था । लीग की संग्राम-समिति प्रथम धेणी की भारतीय सेना के निमाण के लिए जापानी अधि कारियों से क्रमवश कर रही थी । श्री सुभाष बानू के निकट भविष्य में ही पूर्वी एशिया में आने की चचा सुनी जाने लगी थी । लीग की अधोल के परिणामस्वरूप सहस्रों भारतीय नागरिक स्वेच्छामे आ० हि० फौज में सम्मिलित हो चुके थे । उधर संग्राम-समिति ने भी ५६००० युद्धवदियों में से ५०००० को आ० हि० फौज में भर्ती कर लिया था । पर लीग की यह प्रवृत्तिया निर्बाध रूप से नहीं चल सकी । मलाया के जापानी अधिकारियों तथा भारतीय नेताओं के मध्य विगड़ने लगे । संग्राम समिति ने जापानी हाई कमाण्ड से मांग की वह 'इमाकुरो किरा' (लीग और जापानी सेना के बीच सम्यध स्थापक विभाग) पर अकुश रते और लीग के आचार दिव्र फौज के संगठन व प्रचार के कार्य को

विशेष रूप से ध्यान दे। 'इवाफुरा किमन' अपनी उसी सीमा करने के लिए १९०० ई० १९०१ तथा भागीप स्वतंत्रता आन्दोलन का भारत पर जापानी आक्रमण का साधन बना। चाइता था, पर चीन के अधिकारी मूल नहीं थे। व इन्का अपनी सम्पूर्ण शक्ति से प्रिय कर रहे थे और व 'गर्वा' वा व हाथ की वस्तुतः हान के लिए किसी भी हानत में तैयार नहीं थे।

इन बीच में पनांग का स्वामी इन्कीयू के कुछ लक्ष्यों को 'इवाफुरा किमन' द्वारा जापानी के काम के लिये पनडुब्बी द्वारा अवरुद्धी भारत भेजने से जापानिया और भारतीयों के बीच सघन और भी शुरू पकड़ गया। इन्कीयू के सर्वोच्च अधिकारी श्री रावजन ने यह स्वतंत्र रूप से कहा दिया कि यह सत्ता जापानियों के लिए आमूल तैयार करने का कारखाना नहीं है। और अगर जापानी अपनी इन हरकतों से था व था तो वे सत्ता को पद कर देंगे। लोगों ने जब भी रावजा से कहा कि जापानी अधिकारी भारत के इस उत्तर ने रुट हो जाया तो उन्होंने उत्तर दिया— 'वे मुझे मार ही तो सकते हैं।' अतः यह सत्ता था भी कर ही गई और जापानियों ने भी रावजन को उनके अपने ही घर पर गिराकर कर दिया। था मं मन्नाया की शक्ति के प्रभाव पर सत्ता देने पर उन्हें मुक्त कर दिया गया।

उधर कप्तान मोहनसिंह ने जापान सरकार को यह लिखकर भेज दिया कि अब चरान का इन अभिप्रायहीन घोषणाओं से काम नहीं चलेगा कि भारत में उसका कोई अतिरिक्त हित नहीं है। उसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हमारा सम्मान करना चाहिए और हमें भारत की एक अस्थायी सरकार के निर्माण के लिए अनुमति दे दी जानी चाहिए।

पर सघन की खाई अभी और भी खड़ी हानी थी। जापानी अधि

कारियों ने लीग से परामर्श किये बिना ही आनाद हिंद फौज को आदेश दे दिया कि वह वगान व चटगाव पर आक्रमण करने के उद्देश्यसे सैनिक कूच के लिये तैयार रहे। और इसके लिये एक जहाज भी शोनात के बंशरगाढ़ पर आ पहुँचा, पर लीग की सभाम समिति हड़ थी। उसने स्पष्ट रूप से आशानो अधिकारियों को कह दिया कि वे एक भी सिपाही को घमा नहीं भेजेगी। आखिर जहाज को चाली लौट जाना पड़ा। इसके बाद ही २ दिसम्बर १९४२ को सभाम समिति के सदस्य कर्नल तिलानी आ प्रोचों की और से जासूसी करने का आरोप लगा कर गिरफ्तार कर लिया गया।

सभाम समिति ने इस स्थिति को अत्यंत अपमानजनक समझ कर स्वीका द दिया और श्री रासबिहारी बोस जापानियों और भारतियों के बीच पैदा होगये इस गतिराध के अंत के लिये जापानी प्रधानमंत्री जनरल तोजो से परामर्श करने टोकियो चले गये। प्रस्थान से पूर्व उन्होंने ने लीग की सब शाखा मभागों की अपना काम तब तक बधापूर्व जारी रखने की अपील की जब तक जापान सरकार की और से इस सम्बन्ध में कोई स्पष्ट घोषणा नहीं कर दी जाये। जापानी अधिकारियों से भी उन्होंने इस मन्व्य में कोई हस्तक्षेप करके स्थिति को और अधिक विपन्न बना देने की प्रार्थना की। पर 'इबापुरो किन्म' की शरारते चलती रहीं। उसने लीग के मुकाबले में एक अन्व जापानी कठपुतली संस्था की स्थापना कर दी। मलाया के भारतवासियों ग जापानी अधिकारियों की उक्त हक्कों से विरोध इतना बढ़ गया कि लीग की मलाया शाखा की ३ दिन तक निरन्तर बैठक हावी रही और उसके बाद यहां की विपन्न स्थिति का सूचक एक आवेदन पत्र श्री रासबिहारी बोस को भेज दिया गया।

आजाद हिन्द सरकार की ओर से नियुक्त अय्यडमान और निकोबार के चक कमिश्नर और बाद में रंगून की आजाद हिन्द फौज के प्रमुख सनापति कनल लोकनाथन ने फौजी अदायत के सामने उचित रिश्त स्थिति का कारण क० मोहनसिंह तथा श्री रासबिहारी बास के बीच मनमुटाव भी बताया और कहा कि श्री रासबिहारी बास बहुत निर्रक्त जापान में रहने के कारण जापानियों पर आवश्यकता से अधिक विस्वास करते थे और उनको इसमें कोई आपत्ति न थी कि उनमें फौज के संचालन व नियंत्रण में फाम लिया जाय। क० मोहन सिंह इसके खिलाफ थे। उनकी भाव थी कि आजाद हिन्द फौज के साथ मित्र सेना जैसा व्यवहार होना चाहिए और जिन फौजों से जापानी काम ले रहे हैं उन्हें आजाद हिन्द फौज के आधीन किया जाना चाहिए। उस समय उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि हम अंग्रेजों से ही नहीं अपितु यदि जरूरत पड़ी तो जापानिया से भी लड़े गे। क० मोहनसिंह की इन प्रवृत्तियों से उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, पर बाद में उन्हें मुक्त कर दिया गया। और मार्च १९४५ को एक सद्भारना मिशन जापान भेजा गया जिसमें क० मोहनसिंह व कनल गिल भा शामिल थे।

१६ अप्रैल १९४५ को मलाया शय्या के कार्यालयमें पूर्वी एशियावर्ती भारतीयों का एक सम्मेलन हुआ। यह घोषणा की गई कि सुभाषबाबू स्वामी के भीतर ही वहां पहुंचने वाले हैं। इस घोषणा से मारे मलाया में उत्साह व जोश की लहर दौड़ गई। सम्पूर्ण स्वतंत्रता आंदोलन को सैनिक आधार पर पुन गठित किया गया, धन एवं सामग्री एकत्र की जाने लगी। आप जय के बग्न बनाए गए और शाखाओं उप-शाखाओं को पुन संगठित करके उनमें नए जीवन फूंक दिया गया।

आजादी का विगुल

एक पनडुब्बी द्वारा २० जून १९४३ को सुभाषचन्द्र टोकियो पहुँच गये। एक मुस्लिम युवक श्री हसन उनके साथ थे। टोकियो में उनका भव्य स्वागत किया गया। लीग के प्रमुख नेता श्री रासनिहारी बोस व जापान के उच्च अधिकारी स्वयं बंदरगाह पर उनके स्वागत के लिये उपस्थित थे। जापानी भूमि पर उतरते ही उन्होंने प्रवासी भारतीयों के नाम पत्रों में निम्न वक्तव्य दिया—

“गत महायुद्ध में चालक ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा हमारे नेताओं को भ्रामा दिया गया, इसी लिए आज से २० वर्ष पूर्व हमने यह प्रतिज्ञा प्रदण की थी कि हम भविष्य में फिर कभी नहीं ठगे जायेंगे।

“२० वर्षों से मेरी पीढी के लोग अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे हैं और आज उनका यह चिरप्रतीक्षित क्षण— भारतीय स्वतंत्रता का स्वर्ण प्रभात—आ पहुँचा है।”

“हम सब भली प्रकार जानते हैं कि ऐसा अवसर आगामी

आजाद हिन्द सरकार की ओर से नियुक्त अद्यतमान और निवानार
 के चाफ कमिश्नर और बाद में रगून की आजाद हिन्द फौज के प्रमुख
 सनापति बनने लोकरान ने फौजी अज्ञान के मामले उचित विषम
 स्थिति का कारण क० मोहनसिंह तथा श्री रासबिहारी बोम क बीच
 मनमुटाव भी बताया और कहा कि श्री रासबिहारी बास बहुत
 जिनों तक जापान में रहने के कारण जापानियों पर आवश्यकता से
 अधिपति विश्वास करते थे और उनको इसमें कोई आपत्ति न थी कि
 उनमें फौज के संचालन व नियंत्रण में काम लिया जाय। क० मोहन
 सिंह इसके खिलाफ थे। उनमें मांग थी कि आजाद हिन्द फौज के
 साथ मित्र सेना जैसा व्यवहार होना चाहिए और जिन फौजों से
 जापानी काम ले रहे हैं उन्हें आजाद हिन्द फौज के अधीन किया जाना
 चाहिए। उस समय उन्होंने यह भी घोषणा की थी कि हम अंग्रेजों
 से ही नहीं अपितु यदि जरूरत पड़ी तो जापानियों से भी लड़ेंगे।
 क० मोहनसिंह की इन प्रवृत्तियों से उन्हें गिरफ्तार कर लिया
 गया, पर बाद में उन्हें मुक्त कर दिया गया। और माघ १९४५ की
 एक सद्भावना भिरान जापान भेजा गया जिसमें क० मोहनसिंह व
 फनल गिल भी शामिल थे।

१६ अप्रैल १९३६ को कराया गया के कार्यालयमें पूर्वी एशियावर्ती भार
 तीयों का एक सम्मेलन हुआ। यह घोषणा की गई कि सुभाषबानु ने भारत
 के भीतर ही बहा पहुचने वाले हैं। इस घोषणा से सारे मलाया में
 उत्साह व जोश की लहर दौड़ गई। सम्पूर्ण स्वतंत्रता आन्दोलन
 को सैनिक आधार पर पुनः गठित किया गया, घन एवं सामग्री एकत्र
 की जाने लगी। शाय अय्य के दण्ड बनाए गए और शाखाओं उप-
 शाखाओं को पुनः सक्रिय करने उनमें नर-निषेध कूक दिया गया।

आजादी का विगुल

एक पनडुब्बी द्वारा २० जून १९४३ को सुभाषबाबू टोकियो पहुँच गये। एक मुस्लिम युवक श्री हसन उनके साथ थे। टोकियो में उनका भव्य स्वागत किया गया। लीग के प्रमुख नेता श्री रामविहारी बोस व जापान के उच्च अधिकारी स्वयं बंदरगाह पर उनके स्वागत के लिये उपस्थित थे। जापानी भूमि पर उतरते ही उन्होंने प्रयत्नी भारतीयों के नाम पत्रों में निम्न वक्तव्य दिया—

“गत महायुद्ध में चालक ब्रिटिश राजनीतिज्ञों द्वारा हमारे नेताओं को मौत दीया गया, इसी लिए आज से २० वर्ष पूर्व हमने यह प्रतिज्ञा ग्रहण की थी कि हम भविष्य में फिर कभी नहीं उगे जायेंगे। ..

“२० वर्षों से मेरी पीढ़ी के लोग अपनी स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करते रहे हैं और आज उनका वह चिरप्रतीक्षित क्षण— भारतीय स्वतंत्रता का स्वर्ण प्रभात—आ पहुँचा है।”

“हम सब भली प्रज्ञा जानते हैं कि ऐसी अवसर आगामी

१०० वर्षों में फिर कभी दागरे को नहीं भिजेगा। इन नियमों हमने इसका पूरा पूरा लाभ उठाने का निश्चय कर लिया है।

“ब्रिटिश साम्राज्यवाद का -द्वेष्य भारत के लिए ऐतिहासिक पता, सांस्कृतिक विनाश, आर्थिक अवनति और राजनैतिक असतारी रहा है।

“हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपना खून देकर अपनी आजादी को हासिल करें। जो आजादी हम अपने प्रतिगमन व धर्म से प्राप्त करेंगे उसे हम शक्ति के भंगसे कायम भी रख सकेंगे।

“दुश्मन ने तलवार निगाली है और हमें तलवार से जवाब तलवार से देना है। सत्रिनय अवस्था को मशमूर सत्रपे का रूप धारण करना होगा। भारतीय लोग बड़े पैमाने पर ही प्रतिगमन की धारा में गुजर कर ही स्वतंत्रता के अधिकारी हो सकेंगे।”

इसके बाद ही श्री सुभाषचंद्र ने २० जून को टोकियो रेडियो से एक भाषण प्रसारित किया। उन्होंने कहा—

“जहां तक भारत का संबंध है, हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण सवाल यह है कि भारत के निकट युद्ध की स्थिति क्या है।”

“जब से अंग्रेज भारत में हैं किसी भी अंग्रेज सेनापति को कभी यह करपना भी नहीं हुई कि भविष्य में भारत की पूर्ण सीमा पर अंग्रेजों का कोई दुश्मन सिर उठाएगा। हम लिए ब्रिटेन की सारी सैनिक शक्ति का ध्यान भारत की पश्चिमोत्तर सीमापर ही केंद्रित रहा।

‘सिंगापुर के सामुद्रिक छटछे को अपने कब्जे में रख कर उन्होंने यह सोचा था कि हिन्दुस्तान उनके हाथों में सुरक्षित है।

र जनगल यायाजीता और ईला की वैद्युतिक प्रगति ने दुनिया
 की आँखों के आगे ब्रिटिश साम्राज्य की निरर्थकता को स्पष्ट
 कर दिया है।

‘तब से जारल नेपेल भारत की पूर्वी सीमा पर किलेबंदी
 करने में व्यस्त है, परन्तु भारतीय जनता का यह ख्याल है कि
 सिंगापुर के निर्माण में २० वर्ष लगे और खोने में केवल
 एक सप्ताह तो ब्रिटिश सेनापति या उनके उत्तराधिकारी को उनकी
 अपनी किलेबन्दियों से भागते कितनी देर लगेगी ?

‘हम भारतीयों के लिये सबसे अधिक महत्व की बात यह
 ही है कि ट्यूनिम, टिमोरूट्टू, लम्पेडूसा या अलास्का में क्या
 हो रहा है। हमें तो यह देखना है कि भारत और उसी सीमा
 के पार क्या हो रहा है।

‘हमारे लिये महत्वपूर्ण बात यह है कि बर्मा की जिस
 परिवर्तन का इनका डिंडोरा पीटा जा रहा था वह एक शर्मनाक
 परिवर्तन में परिवर्तित होगई है। सिंगापुर के पतन और बर्मा
 की हानि से भी ब्रिटिश साम्राज्यवादी के कानों पर जू नहीं रेंगी
 । हमारे शासक तो यह सोचते हैं कि आदमी आयेंगे, चले
 जाएंगे, साम्राज्य कायम होगा और नष्ट हो जायेंगे पर ब्रिटिश
 साम्राज्यवादी हमेशा बना रहेगा। आपे इस राजनीतिक दिवालि
 आपन कह सकते हैं, पर ब्रिटिश लोग जानते हैं कि उनके
 साम्राज्य का विस्तार भारत से बाहर होते हुए भी उनकी साधन
 सामग्री का प्रमुख स्रोत भारत है और इसलिये वह ही उनका
 साम्राज्य है। इसलिये इस युद्ध में और कुछ भी हो, पर वे भारत
 पर कब्जा कायम रखनेके लिये अपने खून की अंतिम वृद्ध तक

१०० वर्षों में फिर कभी देवने को नहीं मिलेगा। उन जिये हमने इसका पूरा पूरा लाभ उठाने का निश्चय कर लिया है।

“ब्रिटिश साम्राज्यवाद का यहै अर्थ है कि हम अपने अर्थ पता, मासुतिर बिनाश, आर्थिक अमानि और राजनैतिक दासता गहा है।

“हमारा यह कर्तव्य है कि हम अपना पूरा देवर अपनी आजादी का हासिल कर। जो आजादा हम अपने यल्लिमान व धर्म से प्राप्त करेंगे उसे हम शक्ति के भरोंसे कायम भी रख सकेंगे।

“दुश्मन न तलवार निसानी है और हम तलवार का जवाब तलवार से देना है। मरिन्तय अग्रज्ञा को सशस्त्र मरण का रूप धारण करना होगा। भारतीय लोग बड़ पैमाने पर ही प्रलिदान की आशा में गुजर कर ही स्वतंत्रता के अधिकारी हा सकेंगे।”

इसके बाद ही भी सुभाषकार ने २० जून को लोकियो शिपि में एक भाषण प्राडकार्ट किया। उन्होंने कहा—

“जहाँ तक भारत का सन्ध है, हमारे लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण समाल यह है कि भारत के निम्न युद्ध की स्थिति क्या है।”

“जब से अमेज भारत में हैं किमी भी अमेज सेनापति को कभी यह कल्पना भी नहीं हुई कि भविष्य में भारत की पूर्ण सीमा पर अमेजों का कोई दुश्मन फिर उठाएगा। इस लिए ब्रिटेन की सारी सैनिक शक्ति का ध्यान भारत की पश्चिमोत्तर सीमापर ही केंद्रित रहा।

‘सिमापुर के सामुद्रिक अटडे को अपने काने में रख कर उन्होंने यह सोचा था कि हिन्दुस्तान उाके हाथों में सुरक्षित है।

पर जनरल यायाशीता और ईना की वैद्युतिक प्रगति ने दुनिया की औरों के आगे ब्रिटिश गणकौशल की निरर्थकता को स्पष्ट कर दिया है।

‘तब से जनरल बैनेल भारत की पूर्वी सीमा पर क्लिब-डी करने में व्यस्त है, परन्तु भारतीय जनता का यह खयाल है कि यदि सिंगापुर के निर्माण में २० वर्ष लगे और खोने में केवल एक सप्ताह तो ब्रिटिश सेनापति या उनके उत्तराधिकारी को उनकी अपनी क्लिब-डी से भागते कितनी देर लगेगी ?

“हम भारतीयों के लिये सबसे अधिक महत्व की बात यह नहीं है कि ट्यूनिम, टिमरूट्टू लम्पेडूसा या अलास्का में क्या हो रहा है। हमें तो यह देखना है कि भारत और उसकी सीमा के पार क्या हो रहा है।

“हमारे लिये महत्वपूर्ण बात यह है कि बर्मा की जिस पुनर्जित्य का इतना ढिंढोरा पीटा जा रहा था वह एक शर्मनाक प्रत्यावर्तन में परिवर्तित हो गई है। सिंगापुर के पतन और बर्मा की हानि से भी ब्रिटिश साम्राज्यवाद के कानों पर जू नहीं रेंगी है। हमारे शासक तो यह सोचते हैं कि आदमी आयेगे, चले जाएंगे, साम्राज्य कायम होगा और नष्ट हो जायेंगे पर ब्रिटिश साम्राज्यवाद हमेशा बना रहेगा। आपे इस राजनीतिक दिवालियापन कह सकते हैं, पर ब्रिटिश लोग जानते हैं कि उनके साम्राज्य का विस्तार भारत से बाहर होते हुए भी उनकी साधन सामग्री का प्रमुख स्रोत भारत है और इसलिये वह ही उनकी साम्राज्य है। इसलिये इस युद्ध में थोर कुल्ल भी हो, पर वे भारत पर कजा कायम रखनेके लिये अपने खून की अन्तिम बूढ़ तक

बहा दोगे। यह आशा करना हमारे लिये पागलपन होगा कि हमें न स्वेच्छा से अपने साम्राज्य को छोड़ देंगे। हिंदी भारतीय को हम भ्रम में नहीं रहना चाहिये कि इंग्लैंड कभी भारत की स्वतंत्रता को स्वीकार कर लगा। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि ब्रिटिश नीतिज्ञ भारत के साथ कभी समझौते के लिये हाथ नहीं बढ़ायेंगे। हाथ तो हमी बर्ष बढ़ायेंगे, पर नै भारत की स्वतंत्रता स्वीकार नहीं करेंगे। केवल मुलाधा देने का प्रयत्न करेंगे।

“इसलिये हमें ब्रिटिश साम्राज्यवाद में समझौते की आशा सदा के लिये छोड़ देनी चाहिये। हमारी स्वतंत्रता किसी से समझौता नहीं कर सकती। स्वतंत्रता तभी प्राप्त होगी जब हमें और उनके साथी सदा के लिये भारत छोड़ जायेंगे। जो लोग सचमुच ही स्वतंत्रता के अभिलाषी हैं उन्हें हमके लिये संघर्ष करना चाहिये और हमके लिये अपना खून देना चाहिये।

“देशवासियों और मित्रों! हम लिये हम अपनी आजादी की लड़ाई को अपनी सम्पूर्ण शक्ति और उसाह से साथ भारत और भारतसे बाहर जारी रखना है। जबतक ब्रिटिश साम्राज्यवाद का दुर्ग नहीं टूट जाता और उसकी मिट्टी के अन्दर से एक घात फिर स्वतंत्र भारत का जन्म नहीं होना तबतक हम दृढ विश्वास के साथ अपने संघर्ष को जारी रखना है। हम संघर्ष से पीछे लौटने या रुकने के लिये कोई अवसर नहीं है। जबतक विजय और स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो जाती हम आगे, और आगे बढ़ते जाना है।”

इसके ३ दिन बाद ही २४ जून १९४३को श्री सुभाषबाबू ने देशकी

मुद्रि के लिये भारतीयों को आह्वान करते हुए पुन एक भाषण प्राडकार्ड किया। उन्होंने कहा—

“हमारे कुछ देशवासियों का यह ग्याल है कि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थिति से विनशा होकर ब्रिटेन जैसी साम्राज्यवाणी शक्तियों को भारत जैसे गुलाम देशों की स्वतंत्रता को स्वीकार करना होगा, परन्तु यह सब आशाएं व्यर्थ हैं

“आप लोग जानते हैं कि १९४० के वर्ष के समाप्तिकाल में जब मैंने यह देखा कि महात्मा गांधी ने एक लम्बे भद्र अवज्ञा आन्दोलन की योजना है, मुझे ऐसा लगा जैसे भारतीय लोगों के सम्मान और गौरव को चोट पहुँचायी गयी है और उसके व्यर्थ करने के लिये यह आवश्यक था कि एक बड़े पैमाने पर भारतीय क्रांति की योजना बनायी जाय। आज मैं इस स्थिति में हूँ कि यह घोषणा कर सकूँ कि उक्त उद्देश्य की पूर्ति कर ली गई है। हम अंतर्राष्ट्रीय स्थिति को समझते हैं, और हमें अपनी अन्तिम विजय में निश्चास है।

“भारत से बाहर के देशों में रहने वाले सब भारतीय आज एक सगठन सूत्र में बंध गये हैं। भारत में होने वाली घटनाओं को वे ध्यान से देख रहे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाचक्र से भी वे निर्घोष सम्पर्क स्थापित किये हुए हैं। ननरबन्दी, अत्याचार और पाशाबिकता के राक्षस आप देश में जो सघर्ष कर रहे हैं उसमें ठीक मौन पर अधिक से अधिक सहायता करने के लिये वे सब सम्भव तैयारियाँ कर रहे हैं।

“मित्रो ! आपको याद होगा कि पहले कई बार आपको यह

विश्वास दिला चुका हूँ कि जिस समय घटी बजेगी, मैं और मेरे साथ बहुत से लोग सघर्ष में भाग लेंगे, कष्ट उठाने और विजय हर्ष में हिस्सा बँटाने के लिए आपके साथ हूँगे। आज हम उन बचन को पूरा कर रहे हैं।

“भारत अवश्य स्वतंत्र होगा और वह भी शीघ्र ही। स्वतंत्र भारत जेनों के दरवाजे खोल देगा जिससे कि उसका योद्धा पुत्र जेल की काठारियों के अंधारे में भी स्वतंत्रता के प्रकाश की आर किरण बहा सकेंगे।”

सुभाषबाबू के मुर्दा में भी जान बूझ देना वाले इन भाषकों ने पूर्वी एशिया में एक क्रांति मचा दी। भारत के दरवाजे पर सेंगरशिप की कुम्भी लगी हुई थी, इसलिए वहाँ जो कुछ हुआ उसकी एक छाँटी भी भारतीयों को नहीं मिल सका। भारत की मुक्ति का जो विशाल ध्यानात्मक भारतभूमि के बाहर चल रहा था वह भारतीयों की अज्ञानता में ही चलता रहा। श्री सुभाष बाबू ने २६ जून १९४३ को पूर्वी एशिया के प्रवासी भारतीयों को भारत की मुक्ति के लिए एक सेना के निमाण में उनका हाथ बटाने की अपील करने हुए कहा—

“भारत को स्वतंत्र करने की जिम्मेदारी हमारे ऊपर है और केवल हमारे ऊपर है, परन्तु शत्रु अत्यन्त निर्दय और सिर से पैर तक शास्त्रास्त्रा से लैस है। सत्याग्रह तोड़ फोड़ और आतंक से कुछ नहीं हो सकता। यदि हम ब्रिटिश ताकत को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल देना चाहते हैं तो हमें तलवार का जवाब तलवार से देना होगा।

“मुझे विश्वास है कि पूर्वी एशिया में अपने देशवासियों की सहायता से मैं एक एसी विशाल सेना का संगठन कर सकूँगा जो

भारत में ब्रिटिश शासन को काफूर कर देगी। घन्टा बज गया है
और हर एक हिन्दुस्तानी को युद्ध क्षेत्र की ओर कदम बढ़ाना है।
जब स्वतंत्रताप्रिय भारतीयों का खून युद्ध के मैदान में बहेगा तो
भारत अपनी आजादी हासिल कर लेगा।”

कमान सभाली

२ जुलाई १९४३ का दिन था। धान जेतान में उन्हाड़ और धान-द का सागर उमड़ रहा था। गिय मुन्ध पर देखो खुशी नगर धानी थी। जिस गली में दखो, जिस पूछे में दखी एक ही चचा थी, एक ही धाल थी—'नेठा जी आगये। नेता जी आगये।' अद्दा और प्रेम के आयेग से परिपूर्ण नर-नारी अपने दिनों के बाग्शाह नेता जी सुभाष बापू के दर्शन के लिए दौड़े चले जा रहे थे। मनायो, चीनी पारानी धारि सयका एक ही हाल था। लाखों जाग इस मदान अतिकारी भारत के पार्थिव दवता से दर्शन के लिए उलसुके थे। उस दिन शीतल में एक अद्भुत दरय उपस्थित था। मलाया के इतिहास में यह एक अद्भुतपूव प्रणा थी। जाग आरुचय और अद्भानितप्र रनि से नेता जी के दर्शन कर अपन की कृतार्थ समझ रहे थे। किती सभ्राट ने भी ऐसा मन्य और आदरपूरित स्वागत क्या दखा होगा।

उन्नत छावो प्रतिभा से आलोकित रिगल भाज, आसों में दीर्घाय शक्ति और अघरों पर दवकृत की सी मुस्कराहट लिए नेता जी जाल् खान् जनसमुदाय के बीच एदे थे। उस एक मूर्ति ने लाखों आसों की

अपने पर केंद्रित कर लिया था कि भीड़ में से एक आदमी ने आगे बढ़ कर पूछा—'जापानियों का क्या विश्वास ? वे धोखा भी दे सकते हैं ।' नेता जी मुझे, उसे और कहा—'क्या तुम यह विश्वास करते हो कि मुझमें इतनी बुद्धि है कि मैं उल्टू न बनाया जा सकूँ ? विश्वास कीजिये कि जापानी हमें धोखा नहीं दे सकते । वे तबतक ही ऐसा कर सकते हैं जबतक हम अपने को अच्छी तरह संगठित नहीं कर लेते—अपनी म्यत्प्रता के मर्घर्ष के लिये भारतीयों की एक सेना नहीं रखी कर लेते । हर एक आदमी काम करने के लिये तैयार हो जाय । मैं आपको काम दूँगा । काम—काम—काम—यही मेरी और तुम्हारी टेक है ।'

श्री सुभाष बाबू के दो दिन शोनान में अत्यन्त कार्यव्यस्तता में बीत गए । हागकाग, थाइलैण्ड, बर्मा, बोर्नियो आदि की लीग-शाखाओं के कार्यकर्ताओं से उन्होंने भेंट की और परामर्श दिया । आजाद हिन्द फौज के नेताओं से भी वे मिले ।

चार जुलाई को खुला अधिवेशन हुआ । पूर्वी एशिया के सभी भारतीय प्रतिनिधि इसमें उपस्थित थे । सभामण्डप को महात्मा गांधी के एक विशाल रंग चित्र द्वारा सजाया गया था । मंचपर श्री रास बिहारी बोस ७ अन्य लीग अधिकारियों के साथ नेताजी की सुन्दर भव्य मूर्ति सुरभी थी । उपस्थित जनसमुदाय बद्धदृष्टि होकर अपने मुक्तिदाता श्री सुभाष बोस की ओर देख रहा था और इस प्रतीक्षा में था कि वे अपना बर्चस्वी भाषण आरम्भ करें । आरम्भ में श्री रास बिहारी ने अपने सक्षिप्त भाषण में आगत जनसमुदाय का स्वागत किया और नेताजी श्री सुभाष के हाथों में इण्डियन इन्डिपेंडेन्स लोग

का नेतृत्व देने की घोषणा की। यह घोषणा होते ही सारा सभामण्डप तालियां की गड़गड़ाहट 'नेताजी की जय' और 'सुभाष बाबू जिन्दाबाद' के नारों से गूँज उठा। नेताजी खड़े हुए। और इसके साथ ही सारे सभास्थल में श्मशान की सी शांति छा गई। उन्होंने अपने उद्योतिमय नेत्रों में चारों ओर दूरते हुए जलद-गम्भीर वाणी में कहना आरम्भ किया -

' मित्रो ! स्वतन्त्रताप्रिय भारतीयों के लिये काम करने का समय आ पहुँचा है। युद्ध सङ्घट के इन काल में सैनिक अनुशामन तथा लक्ष्य के प्रति अखण्ड निष्ठा की आवश्यकता है। मैं पूर्वी एशिया के सब स्वदेशवासीयों से यह अपील करता हूँ कि वे सिर पर आगू भीषण लड़ाई के लिये तैयार हो जायें।

"मैं एतबार पुन प्रत्येक को यह विश्वास दिला देना चाहता हूँ कि हमने अवतरु जो कुछ किया है और भविष्य में जो कुछ करेंगे वह भारतमाता की आत्मा की लिये रहा है और रहेगा। हम ऐसा काम कभी नहीं करेंगे जो भारत के लिये हानिप्रद हो अथवा जिसने पीछे भारतीय जनता का समर्थन न हो। ...

' अपनी सब शक्तियों को प्रभावोत्पादक तरीके से संगठित करने के लिये मैं स्वतन्त्र भारत की अस्थायी सरकार का निर्माण करना चाहता हूँ। यद्यपि अंतिम तबियत में हम विश्वास है तथापि आप शत्रु की शक्ति को कम न कते। हम एक भीषण लड़ाई लड़नी है, क्योंकि शत्रु शक्तिशाली और निर्भय है। स्वतन्त्रता के इस अंतिम अभियान में आपकी भूख, प्यास और मौत का सामना करना पड़ेगा। इस परीक्षा में से गुजर कर ही आपको स्वतन्त्रता प्राप्त हो सकेगी।"

दूसरे दिन ५ जुलाई को राठनहाल के सामने एक विशाल सैनिक प्रदर्शन हुआ। राष्ट्रगोष्ठी गाया गया। हजारों सैनिकों ने हृदय में जीवित उल्हास और धारणा में सम्मान का भाव प्रकट करने हुए नेताओं को मलामी दी। सब भगड़े और मनमुटाय भुजा दिये गए। नेताओं ने एक दिन में टुनिया बदल दी। सैनिकों को सम्योचन करते हुए उन्होंने कहा —

“आना हिंदू फौज के वीर मिश्रदियो। आज का दिन मेरे लिये अत्यन्त गरम का दिन है। विधि ने प्रसन्न होकर आज मुझे और सत्तार के सामने आजाद हिन्दू फौज के निर्माण की घोषणा करने का सम्मान प्रदान किया है। यह वह सेना है जो भारत को ब्रिटिश जुए से मुक्त करेगी। प्रत्येक भारतीय को इस बात पर गर्व अनुभव होगा कि इस सेना का सम्पूर्ण नेतृत्व भारतीयों के हाथ में है।

“साथियो! मेरे सैनिको! तुम्हारे युद्ध का नारा होगा— “दिल्ली चलो।” मुझे पक्का विश्वास है कि अंत में जीत हम लोगों की ही होगी और हमारे इस पवित्र सघर्ष की समाप्ति तब तक न होगी जब तक हम लोगों में से जीवित बचे वीर प्राचीन दिल्ली के लाल किल्ले में अपनी विजय परेड न कर लेंगे।

“बहादुर साथियो! आज तुम्हीं भारत के महान राष्ट्रीय गौरव के वीर रक्षक हो और तुम्हीं भारतवर्ष की आशाओं व आकांक्षाओं के प्रतीक हो। इसलिए तुम इस तरह चलो कि तुम्हारे देशभक्ती तुम्हें विजयवाशीवाद दें और तुम्हारी भावों से तुम पर गर्व करें। मैं तुम्हें विश्वास दिलाती हूँ कि मैं

सदैव अधिकार और प्रभुता में, दुख और प्रमत्तता में और
 कष्ट और जीत में तुम्हारा साथ दूंगा।

“भूत, त्याग, कष्ट, लक्ष्मी यात्रा, और मृत्यु के अतिरिक्त
 इस समय इस हालत में मैं तुम्हें और कुछ नहीं द सकता।
 इस बात का भी महत्त्व नहीं है कि हम लोगों में सैन्य आजाद
 हिन्दुस्तान को अपनी आस्था में देखने के लिये जीवित बचेगा।
 वस, दतना ही पर्याप्त है कि हिन्दुस्तान आजाद होगा और
 हम लोग उसे आजाद करने में अपना सर्वस्य अर्पण कर देंगे।

“ईश्वर, हमारे सैनिकों को धरतल दे। और आगामी
 सर्पर्ष में हमें विजय प्रदान करे ॥”

प्रथम आजाद हिन्द फौज के पृथक एवं सर्वथा स्वतन्त्र संगठन में
 ‘हवानुरी किकन’ ने बाधाओं का जो पहाड़ खड़ा कर दिया था, सुभाष
 बाबू की जोड़ना स बह हवा में उड़ गया। शेर मैदान में आया और
 उसने एक ही दहाड़ में सब विरोधियों के मुँह बन्द कर दिए। मलाया
 पार्लैमेंट आदि के हजारों भारतीय भारत की मुक्ति के लिए हृदयप्रतिज्ञा हम
 दूसरी आजाद हिन्द फौज में भरती होन लगे। इस आजाद हिन्द फौज
 में जाने वाले प्रत्येक सैनिक को निम्न प्रतिज्ञा पत्र पर हस्ताक्षर करने
 पड़ते थे —

मैं स्वेच्छा से आजाद हिन्द फौज में अपना नाम लिखवा रहा हूँ।
 मैं हृदय से अपने आपको भारत की भेंट खदाना चाहता हूँ और प्रतिज्ञा
 करता हूँ कि मैं अपना जीवन भारत की स्वतन्त्रता के लिए अर्पित
 कर दूंगा। अन्ते ही मुझे मौत के स्वतरे स खेचना पड़े, मैं भारत की
 आजादी के आन्दोलन में तन मन से सम्मिलित होने में कुछ उठान

रखूँगा। और इससे किमी निजी लाभ की आशा न रखूँगा। यदि और धर्म में ऊपर हर एक भारतीय को मैं अपना भाई कहितूँ तो मैं कहूँगा।'

६ जुलाई को एक और ही मध्य रात्रि उपस्थित हुआ। जापान के प्रधानमंत्री जनरल तोजो शानान और नेताजी के साथ एक उच्च पादपीठ पर गढ़े होकर आजाद हिंद फौज के एक विराट सैनिक-प्रदर्शन को देखा। १॥ घण्टे तक उनके सामने के मैदान में से पत्रियट सेनाएँ अपना तिरगा झण्डा उठाये और कदम से कदम मिलाये गुजरती रहीं और वे तथा नेताजी पूर्ण स्थिर भाव में उभरे देखते रहे। जनरल तोजो को उस दिन पता लगा कि नेताजी क्या हैं और उनकी स गठन शक्ति और प्रभाव का वस्तुतः क्या अर्थ है। हृदय पर एक अमिट छाप लेकर वे यहाँ से विदा हुए। उस दिन के बाद से आजाद हिंद फौज के स गठन का कार्य अग्रन्त निषाध रूप में चलता रहा। किमी जापानी अधिकारी को यह हिम्मत नहीं हुई कि वह उनके कार्य में हस्तक्षेप कर सके।

मलाया के प्रवासी भारतीयों में लगी इस आग को देखकर मलायी लोग भी चुप नहीं थे। वे बड़ी तीव्रता से अनुभव कर रहे थे कि किस प्रकार ब्रिटिश लोगों ने बिना तलवार का एक धार किये सिर्फ धोखाधड़ी और चालाकी से मलाया को खरीद लिया। सिंगापुर पेनांग, मलक्का, पैराक, सीलांगर, नेमी सेमबिलान और पडंग आदि सब अंग्रेजों ने इसी प्रकार या तो खरीद लिये अथवा बहा अंग्रेजों की हथिया के सिलसिले में दृग्दस्वरुप हस्तगत कर लिये। उसी का परिणाम यह हुआ कि मलायी लोग भी इस आंदोलन के साथ ही गये और उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे ब्रिटिश प्रभाव और शासन में सुक्ति पाने के लिये सब कुछ दाँव पर लगा देंगे।

नगरों की लाकड़ियाँ की मगधि दूर दूर तक फैलती जा रही थी। उनके एक एक शरण पर खाम अपना गिर तब काने के लिए तैयार थे। स्त्री-बच्चों के प्रति नताजी अर्थात् धडापूय व सहारय थे। २ जुलै को आगाहि हिन्दू कौर के महिला विभाग के कार्यालय में उषा पठानी आण से एक वृद्धा स्त्री ने दूध पर उनके चरखरय करन का प्रयत्न किया। नेताजी ने उस बीष में ही उगने हुए अज्ञाविहल भाय में बहा 'भा'। इस कण्य शरय की दमर उपस्थित महिलाओं की आँखें अश्रुपूर्ण हो गईं।

६ जुलाई को पडगा म इण्डियनिल पवार के मामन एक विाद संवर्गिक मभा हुई। दूर दूर तक लोगों के गिर ही गिर नगर भात थे। 'नेताजी जिन्नाबा' क नारा के बीच भारतीय स्वतन्त्रता के अमदूर सुभाय माइ मके हुए भीर गगा क डकडल वेग की तरह उनकी विमल चाणी प्रगडित होने लगी। यह चाणी जिसके बानों में पड जाती थी वही अदने को वृत्तव्य समझ-लता था। उनके शब्द म धीन था, यीर्य था पर प्रदर्शन न था। चाणी म वेग था, गति थी, पर निस्सारता नहीं थ। उनके शब्द जाइ की तरह लोगों पर अमर कर रहे थे। जो सुनता था मुग्ध हो जाता था। पैनी धार की तरह उनका तर्कपूर्ण भाषण प्रवाह उपस्थित जन-समुदाय के हृदय भीर मस्तिष्क पर एक साथ सीधी चोट कर रहा था। उन्हें लग रहा था जैसे कि वे गुलामी की गंध से मुक्त स्वतन्त्र वातावरण म साम्य ले रहे हैं। नेताजी धोल रहे थे
 "यदि भारत और भारत से बाहर के रहने वाले हिंदुस्तानियों ने अपना कर्तव्य पूरा किया ता भारतीय मिटिश ताकत का हिंदुस्तान से निकल बाहर कर सकेंगे और अपने देश के ३८ करोड़ आदिमियों का मुक्ति प्रदान कर सकेंगे। मित्रो! पूर्वी एशिया

के आप ० लाख लोगो का नारा होना चाहिए — अतिम युद्ध के लिए पूर्ण संगठन। मैं आशा करता हूँ कि इस काम के लिए कम से कम ३ लाख मैनिफ़ और ३ करोड़ डालर एकत्र कर लिए जायेंगे। मैं बहादुर भारतीय महिलाओं की भी मान को चुनौती देने वाली एक रेजिमेन्ट गठनी करना चाहता हूँ। यह रेजिमेन्ट उस तलवार को पकड़ेगी और घुमाएगी जो कभी १८५० में झाँसी की रानी ने पकड़ी थी और घुमाई थी।'

नेताजी के इस धाराप्रवाह भाषण के बीच में ही आकाश से भी धारासम्पात वर्षा होने लगी। नेताजी ने अभ्रभेदी स्वर में कहा— 'आप लोगो मे से कोई न उठ। सध बैठे रहें। वर्षा हमे नहीं डरा सकती।' एक भी आदमी अपनी जगह से नहीं उठा। चोटी से ष्ठी तक पानी से सराबोर हुआ प्रथेक स्त्री पुंस्य नेता जी के भाषण को सुनता रहा। नेताजी अनुरामन के इस अद्भुत दरय को देखकर गद्गद हो गये और विशेषकर तब जब उन्होंने देखा कि उपस्थित महिलाओं की गोदियों में बच्चे भी हैं।

अब तक इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग के नेता महिला-नेता रानी करने के विरुद्ध थे, पर अब सुभाषबाबू के आदेश से 'झाँसी की रानी रेजिमेन्ट' की स्थापना कर दी गई। १० जुलाई को इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग के महिला विभाग की घोर से एक विराट सभा की गई। नेताजी उममें भाषण देने के लिए आमंत्रित थे। सैकड़ों औरतें नेताजी के भाषण का सुनने के लिए आमंत्रित थे। सैकड़ों औरतें नेताजी के पहुँची थीं। मभा भवन में पर रखने का जगह नहा थी। नेता जी को फूलों के हारों से लाद दिया गया। आज सभा मखडर क्रांतिकारी गानों से गूँज रहा था कि इतन में ही उपस्थित स्त्री समुदाय के बीच में मे

एक गुजराती महिला उगी धार डमने अपने शरीर पर चिाने हीरे जवाहरात, चूकियां, अगुणियां व हार पहिने हुए थे सब नेता जी के चरणों में समर्पित कर दिए। उपस्थित नेता मे मांस रोस कर त्याग के इस अनुपम दृश्य को दृग्ग। नेता जी गद्गद हा गये। उ होने पडा—

“महिना ! आप मत्र जानती हैं कि १९२१ मे महात्मा गांधी द्वारा कांग्रेस की धागदार सभालने के बाद महिलाधां न आनापी के इस आँगलन मे क्या भाग अदा किया है। न केरल कांग्रेस क मत्यामत्र, पिक्टिंग, जट्टम, लाटिया राने और जेल की यातनाए सुगतने में अपितु गुप्त क्रांतिकारी आन्दोलन म भी उनका बडा भारा हिस्सा है। मैं जानता हूँ कि हमारी बहिनें क्या कर सकती है। मैं यह कह सकता हूँ कि वे हर मुसीबत और हर कष्ट को बरदास्त कर सक्तो है ।

“जा लोग यह कहते हैं कि उनको गइफल लेफ्ट चलना शाभा नहीं दना उनसे मैं कहूंगा कि वे इतिहास के पन्ने पलटें। भूतकाल म बहादुर औरता ने क्या किया ? १८५७ मे प्रथम भा तीय स्वतंत्रता संघर्ष मे भौमी की रानी लक्ष्मीबाई ने क्या किया ? यह एक रानी थी जिसने तलवार खीचकर और घाडे पर सवार होकर युद्ध के मैदान में सेना का नेतृत्व किया। हमार दुर्भाग्य से यह खेन आयी और भारत पराधीन रह गया, परन्तु उनके १८५७ म छाडे हुए काम को हमे जारी रखना है

“आनादी की इस अन्तिम लडाई मे हमे हजारो भौमी की रानियो की जरूरत है ”

विभि न कैम्पों में ट्रेनिंग के लिय इन्सपेक्टर तैयार करने के लिए दा 'धाना' स्कूल, खोल दिये गये। उधर नेता जी के मलाया भर में

इष्टियन निरुद्धैर हेम लोग का प्रगतिशिर भी गोनन से ० १२
मेव निदा पायगा ।'

धीनुभापका न कपन इम भयन में गगना गन्धी क म्क ही
स्व- महादय माई देगा के प्रति भी अशक्ति दर्शन की । नर कल्प
को मेतानी मे धारा दिष्ट कीज की कमान मीधी कपने हाथ में धे
धी धीर उम दिन निम्न निशिष्ट गेना धारा जारी बिया—

“मेरे हिने धान अत्यन्त प्रगता और अभिमान पर दिन
दे । किसी भाराण के विना इममे अधिक सम्मान का और क्या
पात हो सकती है वि बह भारत की पुष्टि सेना का समरडा
हो ।

“मैं अपने को अपा ३० करोड़ आदमियों का सेवक
ममला हू । मैं परतय को इम तरह मे निवाहन म लड़ निरपय
हू कि इन ३० करोड़ जनता के हित सुरक्षित रहें तथा प्रत्येक
भारतीय सुकर्म पूर्ण विश्राम प्रतिष्ठित कर मरे ।

भारत-माता की मुक्ति के भाषी मर्प में आजाद हिंद
सैन को एक महत्वपूर्ण भाग अशा करना है । हमने अपने को
एक ऐसी सेना के रूप म संगठित कर लना है विमय एक ही
लक्ष्य होगा—‘भारतपो स्वतंत्रता’ और गर ही आजादागी—मा-
भारती को मुक्त करलेंगे या हमने विना प्राणु निडाधर कर देंगे ।
भारत का मम सुरल नहीं है । दुद्ध लम्बा आर रठिन हागा, परतु
अपने लक्ष्य की सिद्धि में मुक्त पूर्ण विश्राम है । दुनिया की कुल
आबादी के पच-माश ३० करोड़ आदमियों को स्वतंत्र होने का
धिकार है और वे उनके लिए धीमत बुझाने में तैयार हैं ।

बौक्वानेर ।

पृथीतल पर ऐसी मोई शक्ति नही हे जो स्वतंत्रता के हमारे जन्ममिद्ध अधिहार को प्राप्त करने से हमे रोक सके ।

“सार्थियो ! हमारा काम पहले ही शुरू हो गया है । अपने होठों पर ‘लिली चलो’ के नारे के साथ हमे तब तक अपने सर्प को जारी रखना होगा जब तक कि लिली मे वायसराय भवन पर तिरंगा भडा नही । फहराया जाता और प्राचीन लाल किले के मंगल आजाद हिन्द फौज विजय—परेड नही कर लेती ।”

रथोनान, कुथाला लम्पूर और सालेटार म ट्रेनिंग कैम्प खुल गए और नेताजी ने अनेक कैम्पों का स्वयं बहा जाकर निरीक्षण किया । कुथाला लम्पूर का दौरा करते हुए नेताजी ने लोगों से कहा कि अथ प्रत्येक व्यक्ति क लिये अधिक से अधिक बलिदान करने का समय आ पहुचा है । १६ सितम्बर का रगून म अन्तिम मुगल सम्राट बहादुर शाह की कब्र पर अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करते हुये अन्तिम दम तक भारत की आजादी की लड़ाई जारी रखने के अपने दृढ निश्चय को दुहराया और बहादुरशाह के दृग शेर को दुहराया—

गाजिया में बू रहेगी जब तलक ईमान की,
तब तो खदान तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की ।

२ अक्टूबर को महात्मा गांधी का जन्मदिवस सारे पूर्वी एशिया में बड़ी शान के साथ मनाया गया । प्रभातकेरियां निकाली गईं राष्ट्रीय गीत गाये गये और हर घर पर तिरंगे झण्डे उठाये गए । इस अवसर पर नेताजी ने एक बिरात सभा में महात्मा गांधी द्वारा देश के प्रति की गई उनकी प्रतिममेवामों के प्रति श्रद्धाजलि अर्पित करते

दृष्ट १६२० की नागपुर-कॉन्फ्रेंस में महात्मा गांधी द्वारा की गई इस घोषणा की मार दिखाई—“यदि आज हिन्दुस्तान के पास तलवार होती तो उसने तलवार खींच ली होता, परंतु आज जब कि सशस्त्र प्रतिष्ठा का फोड़ सत्राल पैदा नहीं होता, देश के सामन अहिंसक और सत्याग्रह का ही मार्ग है।” नेताजी न बंद कि अब समय बहुत बदल गया है। अब भारतीय जनता के लिए तलवार खींचना सम्भव है। हमें इस बात का हृदय है और यह है कि भारत की आजादी की सेना की सख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है ।’

आजाद हिंद जिदावाद

२१ अक्टूबर १९४३ का डचल दिन था। १७ अक्टूबर ४३ को इपोहमें एक नया शिक्षण शिविर खुला। 'इण्डियन इण्डिपेंडेंस लीग द्वारा एक ऐतिहासिक सम्मेलन डाय-तोया गोकिओ में बुलाया गया था। पूर्वी एशिया के समस्त भारतीय प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित थे। स्वागत-परम रिपोर्ट के बाद नेताजी ने आजाद हिंद सरकार की स्थापना की घोषणा करते हुए उपस्थित जनता को उसका महत्व बतलाया। ११ घण्टे तक निरंतर भाषण देने के बाद जय धे भारत के प्रति निष्ठावान रहने की शपथ ग्रहण करने लगे तो सारा सभाभवन मुमुल परतल ध्यनि से गूँच उठा। भावनाओं के आवेग से नेताओं का कण्ठ अवरुद्ध होगया और कुछ मिनट तक धे कुछ भी न बोल सके। सभा में मनाना खिच गया। अंत में रड गम्भीर आवाज में नेताजी ने कहा—“इंटरनेशनल नाम पर मैं अपने देश भारतवर्ष और अपने उन अड़तीस करोड़ भारतवासियों को स्वतंत्र करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। मैं सुभाष चंद्र बोस स्वतंत्रता के इस पवित्र युद्ध को अपने जीवन की अंतिम साम तक जारी रखूंगा।” यहाँ पर धे कुछ देर के लिए ग्ने

धीरे उधो ने फिर कहना शुरू किया—“मैं सदैव अपने देश भारत वर्ष का सचक रहूँगा और सदैव अपने ३८ करोड़ भाइयों के कल्याण में लगारहूँगा। यहाँ भर लिए मेरा सबसे प्रमुख फलव्य होगा। स्वतंत्रता प्राप्त कर लेने के बाद भी मैं उमको रक्ष के लिए अपने रक्त की अतिम नूद तक बहाने को तत्पर रहूँगा।”

इसके बाद आजाद हिंदी अस्थापी सरकार का प्रथक सभ्य सभा के स मुख उपस्थित हुआ और व्यक्तिगत रूप से शपथ ग्रहण की—
 “इसके के नाम पर मैं यह प्रतिष्ठा करता हूँ कि अपने दशके ३८ करोड़ दशवामियों को मुक्त करने में मैं सदैव पूर्ण रूप से अपने न्यायी श्री सुभाषचंद्र बोस के प्रति मन्चा और विश्वासपात्र रहूँगा और उस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपना जीवन और अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति हर समय अर्पित करने को तैयार रहूँगा।”

आजाद हिंदी सरकार के सर्वोच्च अधिकारी और मन्त्रियों द्वारा शपथ ग्रहण किये जाने के उपरान्त निम्न घोषणाग्र पदा गया—

“१८५७ में बंगाल में अंग्रेजों द्वारा भारतीयों का मिली प्रथम परानय के बाद से भारतीय जनता १०० वर्ष तक निरन्तर कठोर संघर्ष करती रही है। इन १०० वर्षों का इतिहास अभूत पूर्ण वीरता और आत्म बलिदान के उदाहरणों से भरा पडा है। और उस इतिहास के पृष्ठों में सिराजुद्दौला, मोहनलाल, हेरअली, टीपू सुलतान, वेल्लू थाम्पी, अपना साहिब भोसले, वाजाराव पेशवा, अवध की बेगम, सरदार श्यामसिंह अगरीवाला और अतिम किंतु अत्यंत महत्त्वपूर्ण राजा लक्ष्मीबाई, महाराजा कुवरसिंह, और तातिया टोपे इन तथा अनेक योद्धाओं के नाम स्वर्णोच्चरों में लिखे हुए हैं। हमारे

दुर्भाग्य से हमारे पूर्वजों ने यह अनुभव नहीं किया कि अंग्रेज सम्पूर्ण भारत के लिए महान ग्यारा हैं और इसी लिए उसके गिज़ाफ उद्देशों को कोई मयुक्त मोर्चा नहीं लिया। अतः मजबूत भारतियों ने स्थिति को घामनविक्रता को अनुभव किया तो उन्होंने मयुक्त रूप में १८५७ में मघाट बहादुरशाह के नेतृत्व में अनेक व्यक्तियों के रूप में अतिम साम्राज्य लड़ा। इस युद्ध के शुरू के हिस्से में उन्हें शानदार विजय हासिल हुई, लेकिन बदकिरमती और दोषपूर्ण नेतृत्व ने अंत में वे पराजित हो गए, मगर फिर भी कौंसी की रानी ताँतिया टोपे, कुजरसिंह और नाना साहेब राष्ट्र के स्मृतिआकाश के अक्षीण नम्रों के समान हमें बलिदान और धीरता के महान कार्यों के लिए अनुप्राणित कर रहे हैं।

"१८५७ के बाद अंग्रेजों द्वारा जयन्ती निःशस्त्र किये जाने तथा आतंक और पशुता के शिकार होने पर युद्ध काल के लिए जाता निश्चल पड़ गई, किन्तु १८८५ में गत महायुद्ध की समाप्ति तक भारतीय जनता ने अपनी खोई हुई स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिए सब सम्भव प्रयत्न किए—अर्थात् आन्दोलन, प्रोपेगैंडा, ब्रिटिश माल का बहिष्कार, आतंकवाद और तोड़ फोड़—और अन्त में सशस्त्र क्रांति, किन्तु ये सब प्रयत्न युद्ध समय के लिए व्यर्थ गये। आखिरकार १९२० में जब भारतीय जनता कोई नया रास्ता ढूँढ रही थी, महात्मा गांधी अपने असहयोग तथा अहिंसक अग्रहार के नये शस्त्रों के साथ सामने आये।

"इसके बाद २० वर्ष तक भारतीय जनता प्रगाढ़ देशप्रेम के कार्यों से आप्लावित रही। स्वतन्त्रता का सन्देश प्रत्येक हिन्दुस्तानी के घर जा पहुँचा। व्यक्तिगत आदर्श द्वारा जनता

की म्हायता के लिए तपस्या, यज्ञदान और मृत्यु के पाठ पढ़ाया गया। पेट्र से नरक दूर मै दूर के गाव तक सब एक गवर्नेटिक मगटा म आवड हो गए। इस प्रकार भारतीय जनता न न कबल अपनी गार्तातिक चेतना फिर प्राप्त करना अपितु यह एक बार पुन एक सामर्थ्यपूर्ण राजनैतिक सत्ता बना गई। १९३७ म १९३९ तक कांग्रेस 'सवि-महाद्वेष' के ५ व भाग दम ने अपनी शानत धमता का प्रमाण दिया।

"इस प्रकार वर्तमान विश्वयुद्ध के ठीक पूर्व भारत का मुक्ति के अंतिम सपने का भीदी तैयार हो चुकी थी।

"यूरोप म जर्मनी और पूर्वी एशिया म जापान ने हमारे शत्रुओं पर हमला कर लिया है। आज्ञाने प्राप्त करो वा हमारे सामने यह बड़ा मुन्दर मुयोग उत्पत्ति हुआ है।

"पूर्वी एशिया म इस समय २० लाख भारतीय मंगडित हैं और 'मुकम्मिलत भती' ननध नारा है। इसी पद्वी पतार म भारताय सेवा के अकसर है तिनके दोर्ता पर 'ग्लिनी चना का नारा गूच रहा है।

"अपने छल-कपट से भारतीयों का निराश करण और अपनी लूट-व्यमाट मे उन्हें भूला मारकर ब्रिटिश शासन भारतीयों की मदुभावना का पुत्र है और अब वह अपने अन्तिम सास ले रहा है। इस अभागे शासन की समाप्ति के लिए अंतिम चिगारी की आवश्यकता है। इसी चिगारी को लगाने का काम भारत की मुक्ति मेना करेगी। इस सेना का हृद निरचय है कि यह अपने उद्देश्य मे सफल होगी।

"आज जबकि स्वतन्त्रता का उप काल निकट था रहा है,

भारतीयों का कर्तव्य है कि वे अपनी अस्थायी सरकार की स्थापना करके उसके भंग के नीचे अपनी अंतिम लड़ाई शुरू करें। परन्तु मत्र भारतीय नेताओं के जेल में बंद तथा जनता के पूर्णतया निःशस्त्र होने के कारण भारत भूमि में इस सरकार का बनाना सम्भव नहीं है। इसलिए पूर्वाशियाई आजाद इंडियन इन्फैंट्री लीग का यह कर्तव्य है कि वह देश और विदेशक सब देशप्रेमी भारतीयों के सहयोग से एक आजाद हिंद सरकार बनाये और लीग द्वारा आयोजित आजाद हिंद फौज की सहायता में आजादी की अंतिम लड़ाई छेड़ दे।

“पूर्वी एशिया की आजाद इंडियन इन्फैंट्री लीग द्वारा बनाई गई अस्थायी सरकार के सन्ध्य होने पर हम अपनी पूरी जिम्मेवारी को ममभते हुए अपना कार्य अपने ऊपर लेते हैं। हम प्रार्थना करते हैं कि भगवान हमारी मातृभूमि को दासता से मुक्ति के हमारे सघर्ष में हमें आशीर्वाद दे और हम आज अपने और अपने साथियों के जीवन अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता, उसके सुख व उत्थान के लिए समर्पित करने की प्रतिज्ञा करते हैं। इस अस्थायी सरकार का यह कार्य होगा कि वह ब्रिटेन तथा उसके साथियों को मातृभूमि से बाहर करने के लिए सम्राट करे।

“यह अस्थायी सरकार प्रत्येक भारतीय की निष्ठा की अधिकारी व दावेदार है। वह अपने मत्र नागरिकों के लिए धार्मिक स्वतंत्रता तथा समान अधिकार व अंतरसर की गारण्टी करती है।

“भगवान के नाम पर, उन पीड़ियों के नाम पर जिन्होंने

भारतीय जनता को मिलाकर एक राष्ट्र में परिणत कर दिया और उन शहीदों के नाम पर जिन्होंने हमारे लिए शौर्य और आत्म-प्रतिष्ठान की परम्परा विरासत में दी है—इस भारतीय जनता का आह्वान करते हैं कि वह हमारे ऊँचे तले एकत्र हो और भारत स्थित ब्रिटिश व उनके साथियों के खिलाफ अंतिम संघर्ष छेड़ दे, विजय में पूर्ण विश्वास रखते हुए बहादुरी और दृढ़ता के साथ उसे तब तक जारी रखें जब तक भारत को सरजमीं से दुश्मन को निकाल नहीं दिया जाता और भारतीय लोग फिर एक स्वतंत्र राष्ट्र नहीं हो जाते।”

आजाद हिंद की अस्थायी सरकार की छार में हस्ताक्षरित —सुभाष चन्द्र बोस (राज्य के अध्यक्ष, प्रधान, युद्ध तथा विदेश मंत्री), के० श्रीमती लक्ष्मी (महिला संगठन), एम० ए० अय्यर (प्रकाशन व प्रचार मंत्री), ले० क० ए० सी० चटर्जी (धर्म-मंत्री), सव ले० कनल अनीस अहमद एन० एस० भगत, जे० के० भोंसले, गुलनारा सिंह, एम० जेड० कियानी, ए० डी० खोवनाथ, अहसानादिर, शाहनवाज (सशस्त्र सेनाओं के प्रतिनिधि) ए० एम० सहाय (मेकैटरी) रायबिहारी बोस (सर्वोच्च सलाहकार) करीम गनी, देवनाथ दाम, डी० एम० खान, ए० थेलप्पा, जे० धिवी, सरदार ईशरसिंह (सलाहकार), ए० एन० सरकार (कानूनी सलाहकार)

इस अवसर पर दिवस अपने आप में नेताजी ने भारत की तात्कालिक दुर्भिक्षपूर्ण स्थिति का विश्व खींचते हुए कहा —“लक्ष्य सिद्धि का उपयुक्त अवसर आ पहुँचा है और हमें विश्वास है कि हमारी फौज के भारत-भूमि पर अपना भयंकर गढ़ते ही

दस में वासाविह क्रान्ति फूट पड़ेगी और उसके साथ ही
भारत में ब्रिटिश शासन का खात्मा हो जायगा ।”

नेताजी के इस भाषण की सम्पत्ति के बाद ही सहस्रों कण्ठों से यह
राष्ट्रीय गीत पूरा पढ़ा —

सब सुख चैन की बरगना बरसे भारत भाग है जागा,
पंजाब, सिन्धु, गुजरात, मराठा, द्राविड, उत्कल, बंग,
बचल सागर विन्ध्य हिमालय नीला जमना गग,

तरे नित गुन गायें

तुम्हारे जीवन पायें

सब तन पाये आशा

सूरज बनकर जग पर चमके भारत नाम सुभागा

जय, हो जय, हो जय हो,

जय, जय, जय, जय हो !

सबके दिल में प्रीति बसाये तेरी भीठी बानी,

हर सुख के रहने वाले हर मनहब के प्राणी,

सब भेदो-फराक मिटाके,

सब गद में तेरी छाके,

गूँथे प्रेम की माला,

सूरज बनकर जग पर चमके भारत नाम सुभागा,

जय हो, जय हो, जय हो,

जय, जय, जय, जय हो !

सुबह-सबेर पाँव-परसेरु तेरे ही गुन गायें,

बास भरी भरपूर हवाएँ जीवन में गूँथ लायें,

सत्र मिलकर हिन्दु पुकारें,
जय आजाद हिन्द के नारे,
प्यारा देश हमारा,

सूरज बनकर जग पर घमके भारत नाम सुभागा,
जय हो, जय हो, जय हो,
जय, जय, जय, जय हो,
भारत नाम सुभागा ।

नेताजी ने इस अवसर पर यह भी घोषणा की कि आजाद हिन्द सरकार के प्रधान शिविर में भारत में युद्धात्तरवर्ती पुनर्निर्माण की योजनाएँ तैयार करने के लिए एक विभाग स्थापित कर लिया गया है । २३ अक्टूबर १९४३ को जापान की सरकार ने इस अस्थायी सरकार की स्वीकार कर लिया और यह बचन दिया कि भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्ति के लक्ष्य की पूर्ति में यह उसकी सब सम्भव सहायता करेगी । २३ अक्टूबर की इस आशय की एक विज्ञप्ति भी जापान सरकार ने प्रकाशित की । जापानी सेना की सर्वोच्च कमान के स्टाफ अधिकारी मेजर जनरल काता क्यूग ने यह स्वीकार किया है कि उन्होंने भारत पर आक्रमण की एक विशाल योजना बनायी थी और यह तय हो गया था कि हिन्दुस्तान का नितना भाग मुक्त किया जायगा वह आजाद हिन्द सरकार के सिपुद कर दिया जायगा आजाद हिन्द सरकार का ही उस पर शासन रहेगा और उक्त क्षेत्र में हाथ लगी सब कुछ सामग्री भी उसी को दे ली जायगी । २६ अक्टूबर को जर्मनी, आजाद बर्मा व फिलिपाइन का सरकारों तथा ८ नवम्बर को थायर, क्रोशिया, मंचूरिया, मानार्डंग, स्याम और इटली ने उसकी स्वतन्त्र सत्ता को स्वीकार कर लिया । थायरलैण्ड के प्रजातंत्रियों ने बर्माई का स्वतन्त्र भेजा । आजाद

हिंद फाज द्वारा सुरक्षित गण प्रवेश के लिए शांति तैयार करने की
 दृष्टि से एक शिष्ट शिष्टि की स्थापना की गई ।

भारत के इतिहास में २५ अक्टूबर १९४३ का दिन महा अवि
 स्मरणीय रहेगा, जबकि आजाद हिंद सरकार के मन्त्रिमण्डल की एक
 बैठक ने मध्यरात्रि में १२ बजकर ५ मिनट पर यह प्रस्ताव पास किया—
 'आजाद हिन्द की यह अस्थायी सरकार ब्रिटेन और अमेरिका
 के खिलाफ युद्ध की घोषणा करती है ।' पढांग के स्युनिसिपल भवन
 के सामने हुई विराट सभा में जय नेताजी न उग्र युद्ध की घोषणा की तो
 आकाश 'जय हिन्द' और 'आजाद हिन्द जिंदाबाद' के नारा से गूँज
 उठा । उसी के आवेग में लोगों ने रस्ते चौक दिग् और लाखों हाथा
 ने आममान में उठकर उक्त घोषणा का समर्थन किया । फौजी विपा-
 दियों ने अपने कंधों पर बटूके रखीं और दूर दूर तक का आकाश
 'दिग्गी बलो के युद्ध घोष से फट गया । प्रात नेताजी ने सेना का
 निरीक्षण किया और सलामोली । फौज को लक्ष्य करते हुए आने कहा—
 "कौज का केवल एक लक्ष्य है—भारतमाता की स्वतंत्रता और
 एक ही उद्दिष्ट स्थल है—दिल्ली का लाल मिला । जो लोग इस
 के लिए तैयार न हो वे सेना से अलग हो जाय ।" दुनिया ने
 देखा कि कई सैनिक अपनी जगह से न हिला । नेताजी फिर
 बोले —"आजाद हिंद फौज जिन दिन युद्ध के लिए कूच करगी
 अपनी ही सरकार के नेतृत्व में करगी । और जब वह भारत
 में प्रविष्ट होगी, तो मुक्त प्रदेशों का शासन स्वत ही अस्थायी
 सरकार के हाथ में आ जायगा । भारत की मुक्ति आ० हि० फ०
 के जरिये भारतीय प्रयत्न व चलिदान द्वारा ही प्राप्त की जायगी ।"
 ३ दिन पूर्व २० अक्टूबर को नेताजी ने भापी की रात्री रेजिमेण्ट सचिव

शिविर का उद्घाटन किया था और उपस्थित महिला को सम्बोधन करते हुए कहा—“हम अपने राष्ट्र के पुनर्निर्माण के कार्य में लग हुए हैं। यह उचित ही है कि ऐसी समय महिलाओं में एक नयी जीवन आदोलन हो।”

२६ अक्टूबर को टोकियो के कोनाल बल्लम में हुए एक पत्रकार सम्मेलन में नेताजी ने प्रस्ट किया—“आजाद हिंद की अस्थायी सरकार के निर्माण के साथ ही मेरे राजनैतिक जीवन का दूसरा स्वप्न पूरा हो गया है। राष्ट्रीय सेना के संगठन का स्वप्न तो पहले ही पूरा हो चुका था। अब केवल तीसरा स्वप्न पूरा होना शेष है और वह है—सर्प और मृत्यु की प्राप्ति। हमारी युद्ध की यह घोषणा काइ प्रोपगेण्डा स्ट्रट नहीं है। अपने कार्यों से हम यह निर्यातेंगे।”

८ नवम्बर ४३ का टोकियो में शूहतर पूर्वी एशिया के राष्ट्रों का एक विराट् सम्मेलन हुआ। नेताजी ने उसमें एक दर्शक के रूप में भाग लिया। वहाँ के भूतपूर्व प्रधानमंत्री डा० वा मा ने भारत की स्वतन्त्रता के लिए किए जा रहे संघर्ष में पूरी सहायता देने सम्बन्धी प्रस्ताव रखा। भारतीय समस्या के विषय में प्रामाणिक समझे जाने वाले डा० जुमेरी-ओकावा ने घोषणा की कि पूर्वी एशिया की शांति के लिये भारत की स्वतन्त्रता अनिवार्य है। इस अवसर पर जापान के प्रधानमंत्री जनरल टोजो ने अचटमार और निकोबार द्वीप आजाद हिंद की अस्थायी सरकार को सौंपने की घोषणा की। इसके बाद ही नेताजी ने इन द्वारों द्वारों का नाम क्रमशः ‘शहीद’ और ‘स्वराज’ रख दिया। कनक लौकनाथन को वहाँ चीफ कमिश्नर बनाकर भेज दिया गया। शासन के मुख्यव्यवस्थापक रूप से सचालन के लिए उनके साथ मेजर आरक्षी,

ले० मुहम्मद इकबाल और धीनिवासन भी गये। मेजर आलवो के आधीन शिक्षा-विभाग, ले० मुहम्मद के आधीन लगान तथा धर्म विभाग और ले० मुहम्मद इकबाल के आधीन पुलिस तथा न्याय विभाग थे। नेताजी के पास वहाँ से नियमपूर्वक सारे कार्य व स्थिति की रिपोर्ट भेजी जाती थी। जापान सरकार ने यद्यपि यह दोनों द्वीप आजाद हिंद सरकार को दे दिये थे, पर वहाँ की पुलिस व्यवस्था में यह बराबर हस्तक्षेप करती रही और हम विषय पर वहाँ के चाफ कमिश्नर कर्नल लोकरनाथन का जापानी सरकार से हमेशा संधर्ष रहा।

यमा में त्रिपावाड़ी नाम की २० घनमील की एक छोटी सी रियासत थी। जापानी सेना द्वारा यमा विजय के बाद-जापान सरकार ने वह समस्त इलाका आजाद हिंद सरकार को सौंप दिया था, क्योंकि हमसे हिन्दुस्थानिया की आजादी लगभग १२ हजार थी। आजाद हिंद सरकार ने वहाँ का शासन सूय करने हाथों में लेने ही वहाँ एक ग्रासक के नये अर्थ, माती शिक्षण, प्रचार तथा प्रकाशन, स्वास्थ्य, भारतवासियों के हितों का रक्ष तथा भागे हुए हिन्दुस्थानियों की सम्पत्ति को देखभाल करने के लिये अनेक विभाग स्थापित कर दिये गये। यहाँ चीनी, सूत, कम्बल वगैरे आदि बनाने की फैक्ट्रियाँ थी और उनका सारा माल तथा उत्र क्षेत्र में उपन्न होने वाली सब सामग्री अस्थायी सरकार को सौंप दी जाती थी। आजाद हिंद फौज का एक शिक्षण शिविर भी वहाँ स्थापित किया गया।

इधर सम्पूर्ण मलाया में नेताजी के इस असाधारण प्रभाव, मग-टन शक्ति एवं कायचमता का फल यह हुआ कि श्योनान, जोहोर और मलक्का की भारतीय आजादी का २४, ६६ और ६० प्रतिशत

नाग आज़ाद हिंद लीग का सदस्य बन गया तथा मनाया भर
 म फैली उसनी सय शाखाओं में सामाजिक सेवा,
 राजनैतिक प्रचार भर्ती, धन संप्रद व सांस्कृतिक कार्य बड़े उत्साह
 और वेग से किया जान लगा । हिन्दुस्तानी भाषा का शिक्षा के लिए
 मनाया के अन्तर्वर्ती प्रदेश में, जहा की अधिराज्य आयादी तामिल थी,
 पाठशाला खोल दी गई । कुथाला लखपूर के रेडियो से हिन्दुस्तानी
 पाठ प्रकाशित किए जान लग । लीग के सदस्यों की संख्या ७ लाख
 २५ हजार तक जा पहुंची । लीग का एक लक्ष विभाग स्थापित कर
 किया गया । दैनिक 'पूर्ण स्वराज्य' और साप्ताहिक 'नय हिंद' प्रकाशित
 किए गए और वे गूब लोकप्रिय हुए । इस सम्पूर्ण संगठन' की सदसे
 वही विशेषता यह थी कि टलमें कार्य करने वाले सब व्यक्ति पर दूसरे
 का भाई समझते थे और उनमें जाति, धर्म या विरवास की दृष्टि से कोई
 भेद-भाव नहीं था । शिक्षण शिविरों में रहने वाले तथा आजाद हिंद
 फौज के हिन्दू मुस्लिम सब सदस्य एक साथ बैठकर एक ही पत्रित में
 भोजन करते थे । प्रथम शाकाहारियों को भोजन परोसा जाता था और
 बाद में जो लोग आमिषभोनी थे उनको आमिष परोसा जाता था ।
 जाति व धर्मगत इस भ्रम भावना को निमूल करन में कनल चर्जी और
 श्री रासबिहार बोस का बहुत बड़ा हाथ था ।

नेताजी ने आजाद हिन्द सरकार के मातहत जिस आजाद हिंद
 फौज की स्थापना व संगठन किया था, उसकी शक्ति दिन पर दिन
 बढ़ती जा रही थी । जे० नाग ने, जे० आजाद हिंद फौज के कानूनी
 सलाहकार थे, इसका विधान बनाया था और जे० गहसान कादिर
 इसके प्रमुख संगठनकर्ता नियत किए गए थे । मेजर जनरल शाह
 नवाज को चीफ आर्य स्टाफ के स्थान पर आजाद हिंद फौज का सुप्रीम

कमाण्डर नियुक्त कर दिया गया था। तबतक कर्नल सहगल मिलिट्री सेक्रेटरी का कार्य करते थे। मार फौजी संगठन को निम्न ६ भागों में विभक्त कर दिया गया था—

- (१) प्रधान शिथिर
- (२) हिन्दुस्तानी फील्ड ग्रुप
- (३) शेरदिल गुरिल्ला ग्रुप,
- (४) स्पेशल सर्विस ग्रुप,
- (५) गुप्तचर विभाग
- (६) सैन्य सहायक ग्रुप

हिन्दुस्तानी फील्ड ग्रुप में न० १, २, ३ पैदल पट्टन, न० १ भारी टापटाना पट्टन, न० १ इजीनियरिंग कम्पनी, न० १ सिगनल कम्पनी, न० १ मैडिकल कम्पनी और न० १ ट्रांसपोर्ट पट्टन आदि शामिल थीं। शेरदिल गुरिल्ला ग्रुप में ३ रेजीमैण्ट शामिल थे— गांधी गुरिल्ला रेजीमैण्ट, आना गुरिल्ला रेजीमैण्ट और नेहरू रेजीमैण्ट। दो रेजीमैण्टों का निर्माण और किया गया था जिनमें से एक सशस्त्र भारतीय युद्धवीरों तथा दूसरे में पूर्णतः नागरिक थे। जो भारतीय युद्धवीरों आत्म समर्पण करके आजाद हिंद फौज में शामिल हो गए थे उनके सनापति क० जिलानी थे। बाद में वे आजाद हिंद फौज के जनरल आफिसर कमांडिंग बना दिये गये थे। २ से १२ वर्ष की आयु के बालकों की एक बाल सेना रखी गयी थी जिसके एक विभाग का नाम जा-बाज बाल सेना रखा गया था। ये बालक अत्यन्त निर्भीक और साहसगील थे। जीवन के प्रति उनके हृदयों में कोई मोह नहीं था। नेताजी के धीरत्वपूर्ण आह्वान और असाधारण मधुर व्यवहार ने इनको सज्जमुच ही 'जा बाज' बना दिया था। १९४४ में

जब आज़ाद हिन्द फौज का ब्रिटिश सेना के साथ युद्ध हुआ तो वे मामूम बरबे अपनी पायों पर मुरगों बाघघर तुमना क रागने में लड़ जाने थे और जब शत्रु क टंक उनकी छानियों पर हाकर गुजरने थे तो उनक घर उड़ जाने थे । आज़ाद हिन्द फौज का भयना हिन्दुस्तान का राष्ट्रीय भयना ही था । उसके सैनिक जा उदा पहनन थ वह भा हिन्दुस्तानी पी-जापानी नहीं । सिफ उन पर आज़ाद हिन्द फौज के बिल्लो लग रहते थे । उसके अपसर के बतन के सम्बन्ध म स्वान किले की पीपी अदानत में सरकारी गवाह ल० माग ने बताया था कि लेफ्टिनेंट को (८०), फ्लान का १ ५) मेजर को १००) (बमा म २३५), ल०-बनल को ३३०) और ४०) मिलते थ । इतना कम बतन प्राप्त हान पर भी मय अपसर व सनिक पूणतया मनुष्य थे । उनके हृदयों में एक ही भावना काय कर रही था कि वे अपने दूग का आगाद करेंगे और उनके लिए माग की सब बिपन बाधाओं तथा कठों का सुगी सुराही स्वीकार करेंगे । आज़ाद हिन्द फौज के इन सैनिकों का अरिष्र अत्यन्त उच्च था । दूग के लिए सब बलिदान करने की उच्छ्र भावना ने उनकी स्वाभाविक यौन भावना को भी मूर्छित किया हुआ था । वे नहीं कहीं जाने थे स्त्रियों को मा पहिना के रूप में अपत्य सम्मान की दृष्टि म म्बने थ । लाल किले को फौजी अनालत में हुई सरकारी गवाहियों म से क्लिमी गयाही से यह मूर्च्छित नहीं होना कि उ कभी एक भी स्थल पर पयथ्र हुए हों, गाव लूटे हों और स्त्रियों के मनीष का अपहरण किया हा । आत्मी की रानी फौज की महिलाएँ उनसे साथ हा काय करती था पर अनुशासन और नियन्त्रण इतना कठोर था और दश प्रेम की भावना इतनी दबल थी कि कोई सैनिक महिलाओं को धाँव उठाकर भी नहीं देखता था । नेता जी ने जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण ही पाल लिया था । उनके लिये

जो मन्तर इन के माधन उपस्थित रिय जाते थे वे भी दोपहीन होते थे। रेडिया म उह फौजी तरान सुनाए जाते थे और 'चलो दिल्ली' 'भारतपुत्र' और 'जलियान वाला बाग' के नाटक दिखाए जाते थे। गैमान-सम्मेलन आदि की फिल्म भी तैयार करके दिखाई जाती थीं।

आजाद हिंद फौज के इस संगठित रूप और प्रभाव को देखकर जापानी सौके। नेताजी को जापान आन का निमंत्रण देन से पूव उन्हे यह आशा नहीं थी कि वे इस प्रकार शुद्ध राष्ट्रीय आधार पर कार्य करेंगे। आजाद हिंद फौज की दिन प्रतिदिन बढ़ती हुई लोकप्रियता तथा आजाद हिंद लीग की बढ़ती हुई सदस्य-संख्या उन्हें भयभीत करने लगी थी और उनके मन एक अज्ञात आशंका से आच्छन्न हो गए थे कि वही यह फौज जापानी सेना से भी अधिक संगठित और माधन सम्पन्न न बन बैठे। इसका अनिवार्य परिणाम यह हुआ कि आजाद हिंद फौज की सदस्य-संख्या ५० हजार से अधिक नहीं बढ़ायी जा सकी। जापान के तासम्बन्धी आदेश की अवहेलना करके भी सेना की संख्या बढ़ाना सम्भव नहीं था, क्योंकि उनकी शस्त्रास्त्र व अन्य साधन सामग्री मुँर्या करने के लिए जापान-सरकार का ही मुँह ताकना पड़ता था और यह आजाद हिंद फौज के बढ़ते हुए प्रताप को देखकर अपने ही सैनिकों की सामान न दे सकन तथा नागरिकों की आवश्यकता पूर्ति न कर सनन के बहान लगा दिया करती थी। स्थिति यह थी कि एक बार आसो की रानी फौज के लिए कम्बल चोर बाजार से खरीदने पड़े थे। यह आजाद हिन्द फौज एक पूणत स्वतंत्र और स्वयत्सेवक सेना थी। शिष्टक या अधिरारी के रूप में कोई जापानी उममें नहीं था। उमके कार्य में किसी दूसरे का हस्तक्षेप भी नहीं था। जापानी सेना के समान ही उसके साथ भी व्यवहार किया जाता था। इतना अवश्य था कि शस्त्रास्त्रों तथा अन्याय युद्ध सामग्री के लिए उन्हें

जापानियों पर आक्रामक गंगा पड़ता था, पर आजाद हिन्द सरकार उस सब सामान की एक एक पाई जावान सरकार का खुदता पर दती थी। इस प्रकार आजाद हिन्द फौज न सम्पूर्ण मनाया न अपनी शक्ति का तिका कायम कर लिया था।

इस आजाद हिन्द फौज का सम्पूर्ण नियंत्रण जिस आजाद हिन्द सरकार के हाथ में था उसका दायरा सार पूर्वी एशिया में छाया हुआ था। नेताजी ने अपनी कार्यक्षमता और व्यक्ति व से जापान सरकार के ऊपर भी एसी छाया बिगा दी थी कि व उनका क्रिमो कायम हस्तक्षेप करने की हिम्मत नहीं करती थी और उन्ही सरकार के साथ समान सरकार का व्यवहार करती थी। एक बार की घटना है कि एक मन्नाथाशामी भारतीय फौ, जिसके पास बहुत शक्ति थी पर जिमने आजाद हिन्द फौज के लिए बहुत दान से इकार कर लिया था, जापानियों ने गिरफ्तार करने और उमकी सारी सम्पत्ति को जप्त करने का आदेश दे लिया। वह शौदता हुआ नेताजी के पास आया और उनके चरणों पर गिर कर आग्रह याचना की। सुभाष बाबू ने परमन्य भरे शब्दों में उसे सांत्वना दी और पास पड़ फौज को उठाकर जापानी सयोजन विभाग को फौज कर दिया कि जिम व्यक्ति की गिरफ्तारी का आदेश दिया गया है वह हमारा आत्मी है। इतने मात्र में उसकी गिरफ्तारी व सम्पत्ति जती का आदेश रद्द कर लिया गया।

इसी प्रकार जापानियों ने एक टास्कर का उमकी पंती के अग्रज होने के कारण सन्देश में गिरफ्तार करके जन्म में डाल दिया था। जब यह मामला नेताजी के स मुख पेश हुआ तो उन्होंने जापानी अधिकारियों को लिखा—'यदि वह वस्तुतः सुकिया हो तो उस गोली में उड़ाया जा सकता है, अन्यथा एक भारतीय नागरिक होने के नाते रिहा कर

देना चाहिए। वह उसी समय रिहा कर दिया गया। ऐसी ही एक और घटना है। नेताजी ने एक डाक्टर को रिहा करने का आदेश जारी कर दिया था। जापानी पुलिस अधिकारी ने इस पर आपत्ति की और कहा 'सम्राट् बोसको हमारे मामलेमें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार नहीं है।' इस पर जब मामला उच्च जापानी अधिकारियों के पास पहुँचा तो पुलिस अधिकारी ने नेताजी से समा मागते हुए मुक्ति का आदेश जारी कर दिया। इसी प्रकार नेताजी ने शोनान में खुफिया होने के सन्देह में गिरफ्तार ४०० भारतवासियों को जापानी जेल से मुक्त कराया था।

नेताजी का प्रभाव अद्भुत था। अपने अधिकार का प्रयोग करने में वे कभी न चूकते थे। इसी के बल पर उन्होंने आजाद हिंद सरकार को सब डी धुरी देशों की दृष्टि में अत्यन्त सम्माननीय बना दिया था। २ जून १९४४की घटना है। आजाद हिंद सरकारका प्रधान शिविर रगून था चुका था। जापानी सरकार ने अपना एक राजदूत नियुक्त करके वहाँ भेजा था। रगून पहुँचने पर जब उसने नेताजी से भेंट करनी चाही तो उन्होंने उसे यह कहकर भेजा कि अपने राजदूत होने के प्रमाणपत्रों को आ० हिंद सरकार के परराष्ट्रविभाग को भेज दो, जिसमें कि उनकी जांच की जा सके। उत्तर मिला—'प्रमाण पत्र तो टोकियो ही झूट गए हैं।' नेताजी दृढ़ रहे और कहला भेजा—'प्रमाण पत्राकी जांच के बिना मुलाकात असम्भव है।' इस पर प्रमाण-पत्र भेजने के लिए टोकियो तार दिया गया और उनके जाने तक उसे भेंट के लिए प्रतीक्षा करते रहने पड़ी। खान किने की पोली अदालत में गवाही देने हुए उक्त जापानी राजदूत श्री हायिवा ने उपयुक्त घटना की वास्तविकता को स्वीकार किया है।

आजाद हिंद सरकार की प्रतिष्ठासूचक इसी प्रकार की एक घटना

और है। भारतभूमि पर आक्रमण से पूर्व सुद्ध-संघालोक के लिए एक
 सुद्ध महयाग घोषणा की योजना थी। जापान का प्रभाव था कि
 उसका अध्यक्ष जापानी हो। नरेशों में इसका विरोध किया और कहा
 कि भारतीय जनताको यह बात स्वाभाविक ही भवती, इसलिए बिना
 किसी अध्यक्ष के समानता के आधारपर लोगों सरकारों के प्रतिनिधि भेजा
 करें। जाह्नविक की फौजी सरकार में गवाह बनल छात्रागण ने
 उन घटना का उल्लेख करत हुए कहा था कि आगिर कोई भी अध्यक्ष
 नियुक्त नहीं किया गया। इसी प्रकार की एक अन्य घटना का उल्लेख
 करते हुए बनल छात्रागण ने बताया कि जापान-सरकार का यह आग्रह
 था कि रक्त विभाग के मंत्रियों की नियुक्ति से पूरे उल्टे नाम बता
 लिये जाय। श्री थोम ने इसका विरोध किया और कहा कि—“यह मेरा
 अपना नियम है। यह आग्रह है कि मैं नियुक्ति के बाद सीधे पद
 उनका नाम आगरो प्रकट कर दूँ। श्री थोम ने जापान सरकार को यह
 भी स्पष्ट कर दिया था कि मुझे प्रदर्शों में कोई जापानी कम नहीं सुन
 सकगी और वही धैर्य भी तिरफें आजाद हिंद बैंक हागा।

मेगाणी द्वारा स्थापित यह आजाद हिंद सरकार एक अध्यक्ष
 सुद्धगन्तित सरकार थी। अकेले मन्नाया में २ लाख ३० हजार आगिया
 ने लिखित रूप में उसका प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की थी। उसका
 प्रधान सिविल गिगापुर था। उसके पास माइकास्टिंग स्टेशन तथा प्रचार
 के अर्थ आधन भी थे। उसका सिविल व मिलिटरी गणन नियम
 एक निश्चल था। भारत का राष्ट्रीय तिरगा मन्नाया उसका मन्नाया था
 उसकी आजाद हिंद फौजका बैज बैज हूँ च लम्बा और लर हूँ च चौड़ा
 था। उसके ऊपरी भाग में थाई लन ए अमेजी भ लिखा रहता था।
 एक फान में भारत का मान चित्र और नीच के भाग में रामा लिखि में

'इतिहास' 'इमाम' और 'कुषानी' शब्द लिखे रहते थे। दो घ य प्रचार के बज भी थे, जिनमें एक पर शेर व तिरग झण्ड का चिह्न तथा दूसरे पर नेताजी का फोटो था।

उसके पास अपनी सेना थी, शासन के लिए अपना प्रदेश था, और अर्थ-योजना के लिए आमदनी के स्रोत थे। आजाद हिन्द फौज तथा आजाद हिन्द सरकार के मर्चों की पूर्ति के लिए जनता पर अन्याय टैक्स नहीं लगाया गया था। स्वेच्छा से ही सब लोग सरकारी कोष में दान करते थे और उसी से सब कार्य चलता था। १९४३ के अन्त में इस प्रकार स्वेच्छा से दी गई धनराशि ७७०७८४७ डालर (लगभग २॥ कराड़) तक पहुँच गई थी। इसमें हीरे जवाहरात व चांदी मोने के उन बर्तनों की कीमत शामिल नहीं है जो उपहार के रूप में दिये जाते थे। उनकी कीमत भी कम से कम २६ हजार डालर थी।

आजाद हिन्द सरकार के १६ विभाग थे। भाषा हिन्दुस्तानी थी और निधि रोमन। 'जय हिन्द' उनकी सलामी ली। सब लोग 'जय हिन्द' कह कर परस्पर मिलते थे।

शही हाल में नेता जी जय पेनाग गए तो उन्होंने एक सावजनिक सभा में आजाद हिन्द सरकार के लिए फण्ड की अपील की। नीचे में से एक जवान धरेलू नौकर निकला और उसने नेताजी के घरणों में चाणी का एक फलदान उपहारस्वरूप भेंट करते हुए कहा—
 "मेरे पास यही एक पेशीमती चीज है और वह भी मरा नदा के लिए त्रियुक्त माँ की पत्रित स्मृति स आभासित है। नेता ने विशाल जन समुदाय को उग्र फूलगान का इतिहास बताया। उसे नीलामी पर चढ़ा दिया। पहली बोली २५ हजार डालर से

की बोली गई और फिर उसक बाँध खोती पर बोची बढ़ती गई।
आगिर वह कृतदान एक लाख ५ हजार दानर में विक गया।

मसतार क इतिहास में शापक यह पहली ही सरकार होगी जिसने
अपनी प्रजा पर किसी प्रकार का बाधित टैक्स नहीं लगाया हुआ था
और जिसकी सारी अथ व्यवस्था उन्नत प्रकार के जनों और उपहारों के
यज्ञ पर चलती थी।

नेता जी का जादू

पूर्वी एशिया के आकाश में नेताजी की लोकप्रियता और ख्याति का मूर्य मध्याह्न के सूर्य के समान चमक रहा था। भारतवर्ष की मुक्ति के लिए उन्होंने अपने अभ्यवसाय और कमनिष्ठा जो वातावरण उत्पन्न कर दिया था उससे सम्पूर्ण मलायावासियों का यह विश्वास हो चला था कि उनका मसीहा आगया है और अथ मुक्ति का दिन निकट है। नेताजी के प्रति जनता के अद्भुत विश्वास का क्या पृथक्ता है। उनके एक एक शब्द पर हजारों जवान अपनी जान लका देने को उद्यत हो और उनके पक्षीने की एक वृद्ध पर रत्न की नदिया बहने को तैयार रहती थीं। मलाया, थाईलैंड इत्यादि के विविध स्थानों पर जब उन्होंने दीर किये तो उनके एक एक शब्द पर हजारों की सम्पत्तियाँ उनके चरर्षा पर लुटा ही गईं। क्या यह कुछ कम आश्चर्य की बात है कि वे जिन सभा में भाषण देते थे उसमें ही उन्हें आजाद हिंद फौज और आजाद हिंद सरकार के लिए छ छ मातृ सात लाख रुपया मिल जाता था।

रचना की बात है। नेपा, का के यहाँ पहुँचने के बाद से उाके ऊपर उपहारों और सखी की बधा हा रही थी पर वे उमर समुद्र महा थे। उन्होंने जापान एरुए गवार अग्निम सं शपोरान के धर्मिक व्यापारियों को आमंत्रित किया और कहा —

‘जब आत्मा दिद फौज को विजय के मार्ग पर कदम बढ़ाया करते म ही अपने गवा का अतिम युद्ध बधा दन और पीछे फिर कर न दमन भी शिखा दी जा रही है, अमीर लाग मुझसे यह पूछ रहा है कि उनसे १० प्रतिशत सम्पत्ति अपेक्षा है या ५ प्रतिशत। तो हम प्रसार प्रतिशतम बात करते हैं जामे मैं यह पूछता हूँ कि क्या हम अपने र्मिवा का यह वह मरते हैं कि चलाइ म कवल अपना १० प्रतिशत गून बहायें

“गरीब लाग हजारों की मददा मे भावता मे भरे हुए मित्र लेकर आत है और हर चीज दन को उदात रहते है। पहरदार, घावी, नाई, छात्रे छात्रे दूसादार और गवाज अपना मध बुद्ध दने के लिय आत है। उनमे म बड़यो न त कयन मुझे अपनी जेब के बचे मुचे पैसे द न्ये है अपितु वे सेविंगस बैंक को वे कृतावे भी मुझे द गये है तिममे उनरे जीवत की मारी सचित सम्पत्ति जमा है। मलाया के भारतवासियों मे क्या ऐम धनी नहीं है जा हमी भावतासे आगे बढ़कर यह कह सकें—“भारत की स्वतंत्रता के लिये यह लीजिये हमारी बैंक पुस्तक।’

‘एक राष्ट्र के रूप मे भारतवासी आत्मबालदान मे विश्वास करते हैं। हिन्दुओं म हमार सामन सय्यासिया और मुसलमानों मे फरीरो का आदर्श उपस्थित है। ३८ करोड़ मानवीय

मलाया की मुक्ति से बढ़ कर भी क्या कोई पवित्र महान, और
उपदेश्य ही मरता है ?

‘मलाया मे मे १० करोड रुपये चाहता हूँ, जो मलाया की
ले भारतीय सम्पत्ति का नशमाश भी नहीं है ।

इसके बाद जब धन एकत्र किया जाने लगा तब वहाँ हा ७० लाख
लेर पकन होगए और अगले २४ घण्टों म ही एकत्रित धन गशि का
रिया १ करोड ३० लाख डालर तक जा पहुची ।

आजाद हिन्द फौज के लेफ्टिनेंट के० सुहम्मद अच्युतला ने राय-
तादा हसरान मम० एल० ए० के निवासस्थान पर दि० गण एक प्रीति
भोज के अन्तर पर यह प्रकट किया कि नेताजी की लोकप्रियता
१६ ४ म परकाटा तक पहुच गई थी । २३ जनवरी १९४४ को उनके
जन्मदिन पर उनका एक चित्र (६५०००) मं बिका । नेताजी के
व्याख्यानों से प्रभावित होकर सिंगापुर के धन कुंशर श्री हवीश ने अपनी
१ करोड ६७ लाख रुपए की सम्पत्ति उनके हवाले कर दी ! ‘वे स्वय-
आजाद हिन्द फौज में भर्ती होगए और उनकी दोनों पुत्रिया स्वय-
सेविका बन गईं । यह यह बात स्मरणीय है कि जिन लोगों को
आजाद हिन्द फौज में विरोध अभिन्धि नहीं थी उहे नेताजी ‘हवीश
मिक्सचर’ लेने को कहा करते थे । श्री हवीश के इस अद्भुत त्याग पर
नेताजी ने उस सेवक ए-हिन्द की उपाधि देकर सम्मानित किया था ।
इसी प्रकार एक मद्रासी महिला द्वारा भी अपना सर्वस्व आजाद हिन्द
सरकार के लिए अर्पण कर देने पर नेताजी ने अत्यन्त गद्गद भाव से
उसे सेवक-ए हिन्द की उपाधि दी थी ।

२६ जनवरी ४४ का दिन था । मलाया की तरह तारे बर्मा के मरु

प्रदेश में स्वतन्त्रता दिवस मनाया जा रहा था। नेताओं को उन दिनों गृह
में थे। वहाँ एक विराट सभा का आयोजन किया गया। भाषण में
नेताओं का वृत्तमाला का स्वर दिया गया। अपनी अज्ञात भारत के
सारे समय व टन मानाओं की पहन रह। भाषण की समाप्ति पर उठे
न जाने क्या हुआ। कह उठ—“यश फोर्ट इम भाषा का गरीशर
है? इसरी मारी कोमा आन टिंड फौज परउ म सु नी
जायगी।”

भीड़ में से आवाज आयी—“एक लाख रुपया। कुछ ही दिनों
में घोड़ी १॥ लाख ३ लाख, ४ लाख तक जा पहुँची। एक लाख की
घोड़ी बोलनेवाला पत्थरी युवक चिल्लाया—५ लाख। पर वाला चीर
भी आगे बढ़ी—६ लाख।—७ लाख।

पत्थरी युवक धैर्य खो बैठा। मुँह पर आन्तरिक सघर्ष के चिह्न
अंकित थे। हार बेधा ही जाने की था कि वह मंच की ओर झुका
और चिल्लाया—“मरी मरी सम्पत्ति। एक एक पाई जो मेरी
अपनी है।” सुभाष बाबू ने उस ताँपते हुए युवक को दोनों हाथों से
पकड़ लिया और कहा—“तो हार तुम्हारा हुआ। मुम्हारे जैसे
देशभक्त युवक हमारी पौच द्वारा अर्जित किये जाने वाले गौरव
के अधिकारी हैं।”

परन्तु युवक न जैसे मुना ही नहीं। उसने हार को पकड़ लिया,
उसे अपनी ओर खींचा और अपनी संसय चिरका लिया और चिल्लाया—
“अब मैं सब भौत्तिक सम्पत्ति से मुक्त हो गया हूँ। मैं फौज से
भर्ती होना चाहता हूँ। अपने देश की स्वतन्त्रता के लिये मैं
अपने जीवन को अर्पित करता हूँ।” तब वह युवक सभा से बाहर

निष्पला तो उसकी छाखें चमक रही थीं और मुख पर प्रसन्नता की ज्योति थी।

रगून का एक करोड़पति मुस्लिम व्यापारी नेताजी से मिलने आया। नेताजी आठ हिन्दू सरकार क बैंक की स्थापना के लिये चिंतित थे। उन्होंने इस समस्या को उसके सामने रखा और कहा कि इम्फाल का पतन होते ही हमें यहाँ अपना सिक्का चलाना होगा। बैंक के बिना यह कैसे सम्भव है ?

'आपको शुरू में कितने रुपए की आवश्यकता है ?' प्रश्न हुआ।

"५० लाख रुपया काफी होगा"—उत्तर मिला।

'ओह ! बस ! इतना ही ! यह लीजिए ३० लाख रुपए। २० लाख रुपए मैं आपको एक सप्ताह के भीतर दे दूंगा।"—करोड़-

१५ दिन के भीतर बैंक स्थापित हो गया और यर्मा रजिस्ट्रेशन कानून के अनुसार उसकी रजिस्ट्री करा ली गई। सब व्यापारी उसे भ्वी कार करने लगे। जनता द्वारा उसका इतना स्वागत किया गया कि विभिन्न स्थानों पर उसकी शाखाएँ खोल दी गईं। श्री एल० ए० अय्यर, श्री दीनानाथ, श्री एल० एम० रशीद, श्री एच० आर० वेताइ, श्री एच० ई० मेहता और कर्नल अलगप्पुन इस बैंक के डाइरेक्टर नियुक्त किये गये। यर्मा से कुल १५ करोड़ तथा मलाया से ५ करोड़ रुपया इस बैंक के लिए दिए जाने की बात डाइरेक्टर दीनानाथ ने फौजी अदालत के सामने कही है। यद्यपि इस सरकारी बैंक में धन एकत्र करने के लिए आम जनता पर टैक्स नहीं लगाया गया था परन्तु व्यापारियों की एक कमेटी बाजार धनी हिन्दुस्तानियों की कुल सम्पत्ति का अनुमान लगाने तथा उसका १० प्रतिशत वगूल कर्न की व्यवस्था कर ली गई थी। यर्मा में 'नेताजी फण्ड यर्मा' स्थापित करके

घदा भी जमा किया गया था। मनाया में भी इसी प्रकार की एक कमेटी स्थापित की गई थी। इस घरे में गेहूँ, आटा, चावल व कपड़ा आदि सभी कुछ मिलता था। कहा जाता है कि आगद हिंदू फौज के सर्वे के लिए मह बवं प्रतिमास ३० लाख रुपया देता था। इसके रेकाड को अब भारत-सरकार न बद कर दिया है और इसके अवशिष्ट ३५ लाख रुपया खर्च कर खिण बतलाये जाते हैं।

मई मास की बात है। नेताजी श्योनान जाने के लिए रंगून के हवाई अड्डे पर उपस्थित थे। चेहरे पर चिंता की हलकी छाया थी। विदा करने के लिए अल्प लोगों में से श्री. चेदियर १ उनकी इस चिन्ता का कारण पूछा। नेताजी ने कहा—“अवस्था चिन्तनीय है। मुझ फौज के लिए २० लाख रुपया चाहिए।” १० मिनिट में उसी स्थान पर २० लाख रुपया एकत्र कर दिया गया।

नेताजी की घाणी में जादू था। इसीलिए शायद उनका एक भी बोल व्यर्थ नदा जाता था। देवताओं की घाणी की तरह यह सदा ही साधक सिद्ध होता था। किसी एक व्यक्ति के प्रति भारतीयों के हृदय में इतनी ममता होने का सौभाग्य थी सुभाष का छोड़कर शायद ही किसी भारतीय को मिला होगा।

श्राकर्वक व्यक्तित्व व तापसी दिनचर्या

बड़ा नेताजी की घाथी में जादू था, बड़ा यक्रित्व में अद्भुत आकर्षण भी। और वर्ण, भव्य आकृति और प्रकाशद्वय के पीछे उनके हृदय जिस सरलता, साधुता और स्नेह का सागर हिलो ले रहा था वह अर्क म आने वाले प्रत्येक यत्रि को बरबस ही अपनी ओर खींचे लेता था। क्या मर् क्या श्रीरत— बच्चे, यूँ, जवान सभी उनके अद्भुत यत्रित्व और अलौकिक प्रतिभा से प्रभावित थे।

आजाद हिन्द सरकार के प्रधान होते हुए भी उनका जीवन अत्यन्त आदर्शीपूर्ण था। किसी प्रकार की बाह्य सज्जा के शौक से वे सवथा अन्य थे। उनका सारा समय प्रायः भारतमाता की मुक्ति की साधना में ही बीत जाता था। उनके एक एक योज पर लाखों मोती बिरर जाते थे, पर व उन मयमे सवथा निरपेक्ष थे। प्राचीन ऋषिमुनियों की तरह वे कामिनी और पाञ्च के प्रति पूण विरवत थे। आपके जन्म दिवस पर जब एक बर्मा सौदागर ने यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि इस सुश्रवसर पर उन्हें हीराजडित स्वयं मुकुट पहनाया जाय, सुभाष बाबू ने उस

प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। बड़ा नेताजी अत्यंत प्रतिभाशील और मनस्वी थे वहां भावुकता भी उनमें बूट बूट भर भी। एक बार सन १९४३ के गम्बर माम में वे जलियावाला बाग की शपथानी मनीला गए। वहां समुद्र तट पर स्थित जात्र शिवालय की प्रस्तर मूर्ति के सामने बड़ी दर तक वे ध्यानायस्थानमें बसे रहे। इसी प्रकार ही एक बार धनाका का शाहनवाज ने ध्यान किया है। कहते हैं कि परधरी ४५ में जब नेताजी बर्मा आये तो वहां के आजाद बागान ने फाई चढ़े पर आपका स्वागत किया और यह उन्हें धपत घर पर ख जाकर मेमान बनाने की आशा में था, परन्तु विमान से उतरते ही वे मघा महाशुशाद के मरुधरे पर गए और वहां अपनी अदाअलि धरित करते हुए वे रो पड़े। उ होंन सब धापणा की कि आजाद हिंदुस्तान में महाशुशाद के अशुशुओं का वहां से उठारर शिहत से जाया जायगा और लात्र मिल में इनका मरुधरा बनावा जायगा। इसके शिण वहां का क्षान्त रूपया भी एकत्र किया गया।

इतनी भावुक प्रकृति होने पर भी उनका अरिष ध्यान की तरह रद था। मिद्धत के पाए वे मर मिग्ने वाले थे। उनकी भावना के धोडा की बुद्धि तथा आरश के प्रति निष्ठा ने सबत किया हुआ था। एक स्वतंत्र सरकार के सर्वोच्च पद पर हाते हुए भी उनमें अभिमान की बू नहीं थी और प्रभु की लालमा से ये सर्वथा शून्य थे। मेजर जनरल शाहनवाज न बताया है कि जब वे टोरियो सम्मेलन में गए तो आरान के तत्कालीन प्रधानमन्त्री जनरल लोजो ने उनकी श्रमता और व्यक्तित्व से प्रभावित होकर कहा कि हमें उम्मीद है कि सुभाष चान्द स्वतंत्र भारत के प्रथम शिक्के हों। सब नेताजी ने एक दम उठकर कहा—
 “भारत का यौन र्थाक्त दिवटेटर होगा और स्वतंत्र

भारत में क्या शासन-प्रणाली होगी, इसका निश्चय आप नहीं भारत की जनता करेगी।”

नेताजी जहाँ एक मान हुए राजनीतिक नेता थे वहाँ उनका सामरिक ज्ञान भी अत्यन्त गहरा था। मलया थाईलैंड और चमा में घूम घूमकर आगद हिंद मेना का संगठन और युद्ध शुरू होने पर मोर्चा समालने सम्यन्धी निर्देश तक वे स्वयं देते थे। फप्तान शाहनवाजनेयह प्रकट किया है कि जापानी लोग उनकी इस सामरिक विचक्षणतासे इतने अधिक प्रभावित थे कि वे आक्रमण योजनाओं तथा सेनाघोषों नियुक्त करने के सम्यन्ध में उनमें परामर्श लिया करते थे। तथा व बंगाल पर आक्रमण करने की जापानी योजना उनके कहने पर ही स्थगित कर दी गई थी। उनकी इस संगठन और सामरिक योग्यता से प्रभावित होकर गांधीजी ने उनके प्रति आदर व्यक्त करते हुए यह प्रकट किया है—‘श्रव तक मैं उनकी राजनीतिक क्षमता से ही परिचित था, पर वे इतने सफल संगठनकर्ता और सेनागति हो सकते हैं यह मुझे उनके विदेश में किये गये कार्य से ही मान्य हुआ।’

नेताजी का दैनिक जीवन भी अत्यंत तपस्यापूर्ण व व्यस्त था। वे दिनरात काम में जुटे रहते थे। रातको ११ बजे सोना और सुबह ४ बजे उठना उनका नियम था। उठते ही वे ५० दि० फौज का राष्ट्रीय गान गाया करते थे। कार्याधिक्यके कारण वे केवल दो घण्टे ही सोने लगे थे। आनाद हिंद फौज को जो पाना मिलता था वह ही भोजन वह स्वयं भी ग्रहण करते थे। ५० शाहनवाज ने तो यहा तक बताया है कि जब उनकी फौज घायल खाती थी तो नेताजी भी घायल खाते थे। नेताजी जिस कमरे में रहते थे उसमें १० दरवाजे थे। प्रत्येक दरवाजे पर दो दो राष्ट्रसन्निहत सतरी तैनात रहते थे। उनमें से एक का मुह बाहर की

शोर तथा एक का अन्तर की ओर रहता था। इसके अतिरिक्त एक अफसर रात भर रिवांस्वर लिफ्ट पूरे भवन का घूमकर लगाया करता था। इतनी सतकंता के वाग्वृत्त भी उनकी हरया के लिफ्ट कई प्रयत्न किये गये। १९४४ के फरवरी मास में नेताजी अपने निवासस्थान पर आठ दि० पौ० के कुछ उच्च अफसरों के साथ बात कर रहे थे। रोप की तरह सन्तरियों का एक दल दूसरे दल के आ जाने पर लौट रहा था। गार्ड कमाण्डर को शक हुआ। उसने लौटनेवाले दल की गणना की। एक आत्मी फाजिल निकला। उसके नाम और नम्बर पूछने पर श्री व्यक्रिया ने एक ही नाम कम्पनी और कमान के बताये। दोनों को एक दूसरे से अलग कर दिया गया। अकस्मात् उनमें से एक ने अपना तमचा निकाला, पर उसमें तमचा छनकर उसके हाथपैर बांध दिया गये। नेताजी ने शोर सुन कर पूछा—‘क्या बात है?’ अपराधी ने हिंदुस्तानी में जोर से चिल्लाकर कहा—‘म मुझे मारने के लिए यहाँ आया था, लेकिन इस कुत्ते अफसर के लड़के ने मेरी कोशिश बेकार कर दी।’

उसी महीने में एक और घटना घटी। अंधेरी रात थी। फाटक पर कमाण्डर खड़ा था। अकस्मात् एक कार वहाँ पहुँची। गार्ड कमाण्डर ने कार में बैठे हुए आत्मी से पूछा—‘तुम कौन हो?’ उत्तर मिला—‘गसविहारी बोस।’ जापानी सड़र मुकाम से आ रहा हूँ। जरूरी काम से नेता जी से मिलना चाहता हूँ। गार्ड अन्तर गया और नेता जी को सूचना दी। उन्होंने आश्चर्य से कहा—‘क्या! गसविहारी बोस तो टाकियो में है। फिर भी जाओ, उन महाशय का यहाँ लाओ।’ पर जब गार्ड कमाण्डर बाहर आया तो कार अधर में गायब हो चुकी थी। इसी प्रकार की एक और घटना भी प्रकाश में आई है। कहने दें कि

१३ नवम्बर १८५५ को रंगून में नेताजी के जन्म दिन समारोह के बाद एक लाख २० हजार रुपये भट करने के लिए नेताजी के पास आया। दरदार ने उसे रोक कर तलाशी ली तो उसके पास से एक रिवावर परामद हुआ। उसे पौरन गिरफ्तार कर लिया गया और नेताजी के सामने उपस्थित किया गया। नेताजी ने शांत भाव से निर्णय देते हुये कहा—“यह इसका दोष नहीं है। यह अपराध हमारी मातृभूमि की शक्ति का है। मैं इसे केवल इतनी सजा दूंगा कि जब हम दिल्ली पहुँचेंगे तो हम व्यक्ति को मैं अपने देशवागियों को दिखाऊंगा और कहूंगा कि भारत में ऐसे लोगों की कमी नहीं रही और इसी कारण देश की बेदियां मजबूत हुईं।”

नेताजी को अपने सैनिकों से बहुत प्यार था। अफसरों के साथ वे कोई रिवायत नहीं करते थे। मोर्चे पर सिपाहियों की तरह पहुँचते थे। आजाद हिन्द फौज के हवलदार श्री देव्याराम समस्तपुर के अनुसार एक बार पैराचूट से उतरने वाले दुश्मनों को उतारने के लिये लड़कर गिरफ्तार किया था। कहते हैं कि एक बार एक बीमार सैनिक से नेताजी ने पूछा— तुम क्या चाहते हो? उसने कहा—“हिन्दुस्तान के दुश्मनों का रून। इसपर नेताजी ने उसे उठाकर कहा—‘शाबाश जवान, शाबाश। हिन्दुस्तान जरूर आजाद होगा।’ एक बार मोघ के सिपाहियों द्वारा मिठाई माँगने पर सबको मिठाई पहुँचाई गई। उस हवलदार ने यह भी बतलाया कि जब हम दुश्मनों के सैनिक गिरफ्तार करने लगे तो नेताजी उन्हें दास्त देते, अपने हाथ से चाय पिलाते और उसे आजाद हिन्द फौज में शामिल होने की अपील करते थे। हिन्दु मुसलमान दोनों के साथ वे समान व्यवहार करते थे और इसी वा यह परिणाम था कि मुसलमान सैनिक बेरोकटोक मस्जिदों में जाकर पुराने का पाठ किया करते थे

और हिंदू मस्जिद के मुन्लाओं को गीता पढ़कर सुनाया करते थे ।

नेताजी के इस अद्भुत और आश्चर्य व्यक्तित्व और तापसी निरीहता का ही यह परिणाम था कि जापानी अपने सम्राट की तरह उनका सम्मान करते थे । उनके सामने पहुँचने पर प्रत्येक जापानी उन्हें प्रणाम करता था और उनके फोटो के आगे भी झुककर निकलता था । प्रत्येक दिन प्रातःकाल जब प्रधान सैनिक शिविर में राष्ट्रीय ध्वजा का ध्वन होता था तो नेताजी के आदेशानुसार समीपवर्ती सड़क से गुजरने वाले जापानियों को भी अपनी मोर्चे राखकर उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करना पड़ता था । राष्ट्रीय ध्वजा का अपमान करने वाले के लिए मृत्यु दण्ड का विधान था ।

दिल्ली चलो

“क्षितिज के उसपार, उसपार, इस धनखाती नदी के दूसरी ओर—लहराते जंगलो से परे वृभिल पहाडो की ओट मे हमारी जन्मभूमि है। उमो धूलि से हमारे इन सुगठित शरीरो का निर्माण हुआ है। हमारी नस-नस मे उसी जन्मभूमि का प्यार गुथा है। आज हम अपनी मातृभूमि से दूर हैं। नीड विहीन पत्ता की तरह हम अन्तहीन आकाश मे भडरा रहे हैं। लेकिन एक बार हमे फिर अपनी जन्मभूमि वापस जाना है।

“दवा की लहरों पर एक आवाज, एक पुकार तैरती आ रही है, भारत हमे पुकार रहा है राजधानी दिल्ली हमें पुकार रही है। हमारे ३८ करोड भाई हमें पुकार रहे हैं। अब हम नहीं रहेंगे। रून ने रून को पुकारा है।

“अपने हाथ मे शस्त्र को लेकर उस पथ पर पृच करो जिसे हमारे ही वंशधरों ने बनाया है। शत्रुओं की शक्तिया को चीरकर हमे अपने दंग पहुंचना है।

या तो हम विजयी होकर दिल्ली में प्रवेश करेंगे या हमारी लार्ज उससे मार्ग की धूलि सा चुम्बना करेंगी।

“दिल्ली की राह अतंशता की राह है। पलो दिल्ली।”

मलायी की हम अम्बार बन-गर्जना के साथ ही ४ फरवरी १९८४ को रणभरी बज उठी और दिल्ली की चार कूच करने का आदेश दे दिया गया। दूर दूर तक का आसमान 'अप हिंद', 'आजा हिंद' और 'जिम्मावार' और 'नेताजी की जय' के गारों से गूना उठा। पत्रिका की घाग में तप्त जवानों की बाँटें लिख गई और उनका मुग प्रसन्नता में झकड़ उठे। साथ ही तन जिना का अपन रत्न में मातृ भूमि के चार पुष्पारामे का का अक्षयमा आया था। १९८७ के मरकर सैनिक विद्रोह के बाद यह 'धर्म ही मौका था जब कि एक गुजाम राष्ट्र के ३० लाख सौजन्यों में समकित होकर अपनी आजागी हासिल कराने के लिए शस्त्र सभाजो ध। वमा, यार्डलैंड, मलाया गया, धर्मियो धारि के समस्त भारतीय प्रजातियों के धीप उसाद और जोर का सागर तहरें मार रहा था।

धा० हिंद मरकार का प्रधान शिविर २ दिसम्बर १९४३ का ही रगून था। शुका था और २१ जनवरी को भारत पर आक्रमण की पूरी योजना बना ली गई थी। जागती यह चाहने थे कि धा० हि० फौज वमा में अखिलम्ब आक्रमण शुरू न करे, आपानी सेना को इम्फाल पर अधिकार करने से और बाद में उसकी सहायता के लिए धा जाय। पर नेताजी की धा० हि० फौ० को यह विचार सदा नहीं था। वे नहीं चाहते थे कि एक विदेशी राष्ट्र की सेनाएँ सयने पूव भारत में प्रवेश करें। उनके अन्दर यह भावना इतनी ही गई थी कि यह उनका युद्ध है और वे ही सयने पूव भारत की सीमा में प्रवेश करेंगी। वमा में उस

समय २० हजार आजाद हिंद फौज थी। उसमें से पहले केवल १० हजार को ही मोर्चे की ओर कूच का आदेश मिला। कूच करनेवाली इस सेना में निम्न पदों थीं—

- (१) सुभाष ब्रिगेड, कमांडर—जनरल शाहनवान खान
२००० सैनिक।
- (२) गांधी ब्रिगेड, कमांडर—जनरल इनायत कयानी
२५०० सैनिक।
- (३) आजाद ब्रिगेड, कमांडर—जनरल जुलमारसिंह
२५०० सैनिक।
- (४) नेहरू ब्रिगेड, कमांडर—जनरल गुरुवरसिंह
दिल्लन।
- (५) झांसी की रानी रेजिमेंट, कमांडर के० लक्ष्मी
२००० महिला सैनिक।
- (६) जायज बाल-बना—इसमें ८ से १२ वर्ष तक के
बच्चे थे।

झांसी की रानी पदम की पहले कूच का आदेश नहीं मिला था। उसे केवल घायलों इत्यादि की सेवा शुधुषा का काय भार सौंपा गया। इस पर महिला सेना असंतुष्ट हो गई और उसने के० लक्ष्मी के सभापति व में एक सभा की और उसमें नेताजी की निम्न विरोधग्रन्थ भेजने का निश्चय किया गया।

‘हमारी सैनिक शिक्ता पूरी हो गई है। परन्तु हमें मोर्चे पर जाने के अधिकार से वंचित कर दिया गया है। हमें निर्जीव नर्स मात्र बना दिया गया है। समझ नहीं आता कि हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया गया है। आपका हम वीरगना झांसी की रानी का

नाम दिया है। शोनानमें प्रथम महिला शिक्षा शिबिर खोलते हुए आपने हम आश्वासन दिया था कि हम उसरानी को तरह युद्ध के मैदानमें लड़ेगी। सशस्त्र फौजों में हमारी उपस्थिति दुश्मन का साहम तोड़ दूँगी और ब्रिटिशमैना के भारतीय सिपाही अपने पन में आकर मिल जायेंगे। हम आपसे प्रार्थना करती हैं कि आप हमें मोरचे पर कूच करने का आदेश जारी कीजिए।”

हम विशेषतः पर श्री महाराष्ट्र प्राद्वण, दो बंगाली प्राद्वण तथा दो गुजराती वैश्य महिलाओं ने धन रत्न से हस्ताक्षर किये और उसे नेताजी के पास खाना कर दिया गया। २ माघ '४४ को उमरु उत्तर आगया और झाँसी की रानी रत्नमैत्र की दो कमरानियों की मोर्चे पर कूच करने का आदेश द दिया गया।

उधर इम्पान के मोर्चे पर सबसे पृथक् जनल शाहनवाज के नेतृत्व में सुभाष त्रिभेड आगे बढ़ी। प्रस्थान से पूर्व नेताजी ने उनसे कहा—

“भारत को स्वतंत्र करने के लिए आप आजादी के मित्राही हो। युद्धक्षेत्र में आपका मुसीबतें भेदतो दोगी। यदि आप चाहें तो यहाँ ठहर सकने हैं। हम हिन्दुस्तान को आजादी के लिए लड़ रहे हैं। हमारे पास धन तथा अन्न साधना की अधिक राशि नहीं है। जो कुछ सम्भव है वह हम आपको दे रहे हैं। हम अशक्त हैं। इसलिए राशन में अन्न की अपेक्षा कुछ अधिक नहीं दे सकते।”

बाद में त्रिभेड के कमाण्डर जनल शाहनवाज ने भी अपने सैनिकों को बख्त करके कहा—“युद्धक्षेत्र में तुम्हें बड़ी बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा। तुममें से जो कोई मौत या मुसीबत से डरता हो वह अभी से अलग हो जाय। हमें स्वातंत्र्य संग्राम में

जड़ना है। इसके लिए हमें जवामर्द सुपूर्त की जरूरत है—
 तयारों की नहीं।

“जब हम अपने मित्र जापानियों से कंधे से कंधा मिला-
 कर लड़ते हैं तो उमरा यह अर्थ नहीं समझना चाहिए कि हम
 लड़ाई में हमारा स्थान गौण है। ऐसा मोचकर हम अपने देश
 की अप्रतिष्ठा करेंगे। जब हम भारत पहुँचेंगे तो हमें यहाँ पुरुष
 और स्त्रियाँ तथा स्नेहशीला युवतियाँ मिलेंगी। हम उन्हें माता
 तथा अपने से छोटी महिलाओं को बर्हिन तथा पुत्रियों समझेंगे।
 यदि कोई सैनिक इन आदर्शों की अज्ञातता करेगा तो उसे
 गोली से उड़ा दिया जायगा। यदि भारत के मुक्त होने पर
 जापानियों ने हमें अपना गुलाम बनाने का प्रयत्न किया तो हम
 उनसे भी लड़ेंगे। अब भी यदि कोई जापानी तुम्हें एक थप्पड़
 मारे तो तुम उसे तीन मारो। हमारी सरकार जापानी सरकार
 के बराबर है। यदि हमने किसी जापानी को अपनी स्त्रियों से
 छेड़छाड़ करते पाया तो पहले उसे चेतावनी दी जायगी और
 उसके न मानने पर उसे गोली से उड़ा दिया जायगा। हम जो
 लड़ाई लड़ने वाले हैं वह भारत की आजादी के लिए है—जापा-
 नियों के लाभ के लिए नहीं।”

इम्फाल के मोर्चे पर लड़ाई शुरू होगई और आजाद हिंद सेना के
 वरिष्ठ अधिकारियों ने, जो अपने देश की आजादी के लिए हथियारों का इस्तेमाल
 कर रहे थे, ब्रिटिश सेना के शत्रुके लुबा दिए। इस सेना की
 सहायता के लिए जापानी सेना की भी एक टुकड़ी की इम्फाल
 सर्वाधिक बमन खय नेताजी के हाथ में थी। इस टुकड़ी के अग्रणी
 में इस सेना ने बर्मा की सीमा पार कर भारत के अन्दर प्रवेश किया

प्रयत्नता के आदेश में समस्त भारतीय सैनिकों ने छापी मानभूमि को
 सार्वभौम प्रणाम कर ली। उसकी धूल का घूम जिभा। यह एक क्षण था
 जो हिन्दुस्तान के इतिहास में सदा एक अमर स्मृति बनकर रहेगा।
 उन्होंने माँ की धरण धूलि अपने हाथ में लेकर प्रतिज्ञा की "यद्य नव
 भारत स्वतंत्र नहीं हो जाना हम कभी घेन में नहीं चेंडेंगे।"
 इसके बाद ताम्र, पलेल, कोहिमा और त्रिदिम आदि क्षेत्रों में य सेनाप
 आगे बढ़ती रहीं, सघर्ष होने रहे और आगिर २१ मई को इम्फाल घेर
 लिया गया। माराद, कोहिमा तथा अन्य कई गाव आ० हि० पी०
 के हाथ लग चुके थे। माराद से पलेल तक कोहिमा-क्षेत्र के १५०० वर्ग-
 मील पर सुभाष त्रिगद कब्जा कर चुकी थी। आगार हिंद पीन द्वारा
 विविध मार्गों पर हिन्दुस्तान की सीमा के आदर जिलने प्रवेश पर
 कब्जा कर लिया गया बहा जागती सेनापति ने आगार हिंद सरकार का
 अधिकार होने की घोषणा कर दी। इस विजित प्रदेश में शासन व्यवस्था
 के संचालन के लिए एक आगार हिंद दल की स्थापना की गई। जे०
 विठ्ठलराव इस दल के संचालक थे। सम्पूर्ण विजित प्रदेश पर जनरल
 आर्मी को गवर्नर नियुक्त किया गया। सामीगत कृषि तथा स्वास्थ्य
 विभाग श्री पी० घाप तथा पुलिस विभाग श्री इयामचिद मिश्र के
 आधीन रिया गया। छोटे भूतकों के निपटाने तथा लगान आदि की
 बगुली के लिए तहसीलदार नियुक्त किए गए। मनिपुर के विजित प्रदेश
 में तथा विगनपुर में शासन की सम्पूर्ण व्यवस्था आगार हिंद दल की
 ओर से की गयी। विशनपुर के शासक कप्तान एम० ए० मल्लिक
 नियुक्त किये गये।

उधर आसी की राती पीन की रेजिमेंट भी मोर्चे पर अपने औधर
 निर्या रही थी। एक तो औरत और फिर तीपों और गोक्षियों की

बौद्धारा से दहे मार्चे पर उतरी यह मदानगी । एक अद्भुत ही दृश्य था ।
 जा देखता था त्रिभुक्त रह जाता था । अ प्रेज सैनिका ने कभी स्वप्न में
 भी यह कल्पना नहीं की थी कि ७ हूँ भारत की 'अग्रजला' कहलायी जान
 वाली नारियों के हाथ कभी मु ह की खानी पड़ेगी । अ घेरी रात थी ।
 बहुत दिनों तत्र एक गाव में पड़े रहने के बाद स्त्री सेना की आरम्भण
 बोज़ देने का आदेश हुआ था । एक लम्बी मजिल छय करने को थी ।
 उस समय लगभग ३ यो थे । मैरुड़। शहर संगित नारिया आर्यों में
 ज्याति और हय्यों म असाद लिष सेनापति के आदेश के अनुमार
 सुरचान द्ये पाव अपन लक्ष्य को बढ़ी चली जा रही थी । आखिर
 एक पहाड़ी पर मोर्चा बाधा गया । अथ त्रिटिश सेना और उनके बीच
 केवल १ मीन का अंतर था । त्रिटिश पौर को यह कल्पना नहीं थी कि
 वहाँ स्त्री-सेना होगी । यह निराक भाव ने आगे बढ़ी चली जा रही थी ।
 पहाड़ी की धाटियों में पहुचते ही स्त्री-सेना को फायर का आदेश हुआ ।
 नारिया अपना नारिख भूल गई और धदाधद गोलाशारी शुरू हुई ।
 उनकी न जान यह गोलाशारी कय तक चलतीरही । आखिर उह आदेश
 हुआ—'सगीत सम्भालो और टूट पड़ी' ।

पहाड़ियों के ऊबड़ खाबड़ प्रदेश में स्त्री सेना सगीने जाने दीइने
 लगी थी । पहाड़ियों 'इम्बलाय जिद्रावाद', 'आजाद हिंद जिद्रावाद' के
 युद्धघोष से गू ज उर्गे । यह एक गिरी—यह दूसरी और उसके ऊपर
 स पीछे से आनेवाली सेना गुजर गई । चारों ओर कीपहाड़ियां से सहस्त्रों
 आजाद हिंद के सैनिक निकल आये । १६ घंटे तक यह स घरा जारी
 रहा और आखिर त्रिटिश सेना को पीछे हटना पड़ा । स्त्री-सेना के इस
 अपूर्व रण चतुर्य को देख कर वे दग रह गये ।

यह स्त्री-मेना मध्य काल की ध्यान पर मिग्नेवानी राजपूत स्त्रियों से किसी कदर कम नहीं थी। अपने सम्मान व सतीत्व की रक्षा के लिए वे अपने साथ सदा त्रिब रखती थीं। इस रीति की प्रेरणा ही एक बहादुर स्त्री ने एक बार अपने पति को लिखा था—“ मैं अपने साथ पोटाशियम साइनाइट की एक छोटी सी शीशी हमेशा रखती हूँ। अगर जापानी दरिंदे मेरे शरीर को किसी प्रकार की पीड़ा पहुँचाने का प्रयत्न करेंगे तो उस समय मैं सचचा निःसहाय न होऊँगी। मेरे प्रियतम! अगर तुम यह सुनी तो समझ लेना और विश्वास रखना कि मैं घृणित से घृणित और कठोर से कठोर यज्ञया के सामने कभी नहीं झुकूँगी और आपके उज्वल घराने पर गारा भी साथ लगाये बिना उसके नाम, मर्यादा और शान की हमेशा रक्षा बनाय रखूँगी।”

इसी प्रकार इम्फाल के मोर्चे की एक और मनोरंजक घटना है जो आजादी के इतिहास में स्वर्णचरों में अंकित की जायगी। १६ मई का दिन था। ब्रिटिश सेना की भारतीय टुकड़ी एक क्षेत्र में आ० डि० फी० की एक टुकड़ी के सामने खड़ी थी। दोनों के बीच कुछ देर का ही अन्तर था। आ० डि० फी० के सैनिकों ने एक तख्ते पर यह लिखकर पेड़ पर टांग दिया—“हमारे साथ आओ और देश की आजादी के लिए लड़ो।” उत्तर में उन्होंने एक तख्ते पर लिखकर टांगा—“जापानके गुलामी। तुम्हारे पाम रखने की नहीं है। हमारे साथ आओ। हम तुम्हें विस्फोट और केक देंगे।”

आजाद हिंद फौज के सैनिकों ने प्रत्युत्तर में टांगा—“हम लोग सुभाषबाबू के आदेश से लड़ रहे हैं। गुलामी के घी और आट से हम आजादी की घास अधिक पसन्द करते हैं।” और इसके बाद पताका—गीत से आकाश गूँज उठा—

सर पर तिरगा झडा जलवा दिवा रहा है
 कौमी तिरगा झडा ऊधा रहे जहां में,
 हा मेरी सरखुलदी उवां बाद आममां में।
 तू मान है हमारा तू शान है हमारी।
 तू जीत का निशां हो, तू जान है हमारी।
 हर इक बशर की लय पै जारी हैं ये दुआए,
 कौमी तिरगा झडा हम शीक से उदायें।
 आकाश थी जमीं पर हो तेरा बोलबाला,
 भुक जाय तेरे आगे हर ताज तख्त घाला।
 हर कौम की नजर में तू हो निशां धमन का,
 हो ऐमी मुश्किल साथ तेरा जहां हो।'
 मुस्ताफ़ वैनघाबी मुग़ होकर गा रहा है,
 सिर पर तिरगा झडा जलवा दिखा रहा है।

इसपर दूसरी ओर से भी हर्ष ध्वनि प्रकट की गई। कहते हैं कि
 वहां से भारतीय टुकड़ी को अविद्यम्य हटाकर ब्रिटिश टुकड़ी तैनात कर
 दी गई।

४ जुलाई की एक और घटना है। आ० हि० फौ, तथा जापानी
 टुकड़ी पलेल के हवाई अड्डे के समीप आ पहुची थी। हवाई अड्डे पर
 रात को हमला करने का निश्चय किया गया। आ० हि० फौ के पास
 उन णिनों राशन की बड़ी कमी थी और वे जगली पखों और बन्द पर
 निर्बाह कर रहे थे। आ० हि० फौ कमांडर ने जापानी कमांडर से
 माग की कि जापानी राशन में से एक समय का भोजन दे दिया जाय।
 जापानी कमांडर ने उत्तर दिया—'हमारे पास भी राशन घाटा है।
 आज रात हम जहां आ रहे हैं वहां देरों धन्न है।' इस उत्तर से आ०

हि० फौ० कमाण्डर भू जा गया और अपने प्रतिभा की कि रात पहले ही पूर ही वह अपने आत्मियों के लिये भोजन की व्यवस्था कर लेगा। उसी अपना आत्मियों को एकत्र किया और कहा—'हमारे सामने जो वह हवाई अड्डा है, खाना तो वहीं मिलेगा। जापानी हमें मंत्री भर चावल देने को तैयार नहीं। मेरा ख्याल है कि हमें जापानी सेनावा को यह खिन्ना नना चाहिये कि हिन्दुस्तानी अपनी व्यवस्था पर सन्ते हैं—भूय पेड़ लहर भी विजय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप खाना को स्वीकार हो सा अभी हवाई अड्डे पर हमला बोल दो।'

'गर्हिंद के नारा के साथ आ० हि० फौ० ने हवाई अड्डे पर हमला कर दिया। आत्मण हतन आक्रमिक और भीरु रूप में किया गया कि एक ही हमले में वह ब्रिटिश सेना के हाथ से निराल गया।

उधर बर्मा मोर्चे पर लड़ाई के साथ साथ पूर्वी एशिया में आनाद हिन्द सच का काय जा रहा। १० जून, ४४ तक उसके कोष में १ करोड़ ३३॥लाख रुपया एकत्र हा गया और मलाया में उसकी शाखाओं की संख्या ७० तक जा पहुची। बर्मा में १० थाइलैंड में २४ तथा जावा, सुमात्रा, व बोर्नियोम उसकी शाखाएँ गुल गई। सामाजिक सेवा तथा शिक्षा का काय चलने लगा। बर्मा में ६५ तथा मलाया म ४ राष्ट्रीय स्कूल खोल दिये गये और हिन्दुस्तानी सिखायी जाने लगी। मलाया में २०० एकड़ जंगल को साफ करके रोटी क थाय्य बना लिया गया। मलाया व बर्मा के अन्तरवर्ती प्रदेशों में सैकड़ों डॉक्टर भनकर वहाँ निशुल्क चिकित्सा कन्द्र खोल दिए गए।

युद्ध के दो मासों—मई जून में नवा नी मोर्चे का दौरा करते रहे और व्यनितगत रूप से सेना को उत्साहित करते रहे। बीच में उनके जीवन को भी सकट उपस्थित हुए पर वे निमग्न मात्र से अपने कम पग पर अमसर हाते रहे। एक बार की बात है कि वे पेगू से एक गाँव में

जा रहे थे कि अंग्रेजी दस्तों ने घेर लिया। उस समय फर्नल लक्ष्मण ने अपनी जान जोखिम में डालकर नेताजी की रक्षा की। इस वीरता के लिए फर्नल लक्ष्मण को नेताजी ने शेर-ए-हिन्द की उपाधि से सम्मानित किया।

४ जुलाई को नेताजी घास खा गए। श्योनान सम्मेलन में पूर्वी एशिया के आंदोलन की कमान संभाले थान उन्हें पूरा एक वर्ष व्यतीत हो गया था। रगून की जनता अपने 'वीर' की पूजा के लिए उत्सुक था। पूव निश्चय के अनुसार उस दिन नेताजी को हीरे जवाहरातों और आभूषणों से सजाया गया। किसी ने नेक्लेस, किसी ने हीरापटित बुंदे धार किसी ने अपने समस्त आभूषण नेताजी के चरणों में समर्पित करके अपने को कृतकृत्य समझा। प्रसन्नता और त्याग की भावना के आवरण में निसके पास जो कुछ था वह सब ही अपने 'देवता' के चरणों में भेंट कर देना चाहता था। नेताजी ने दक्षिण पूर्वी एशिया का दौरा करते हुए जनता से देश के नाम पर यह अपील की थी कि ये अपने सम्मुख यह आदेश रखें—'करो सब निष्ठावर बनो सब फकीर।' यह आदेश आज रगून में सम्पूर्ण रूप से चरितार्थ हुआ। नेताजी के सम्मान में 'नेताजी सप्ताह' मनाया गया। ४ जुलाई को जुबली हाल में एक विराट सभा हुई और नेताजी ने वष भर के कार्य पर प्रकाश डालते हुए कहा—

'हम एक परीक्षा में उत्तीर्ण हो गये हैं और उससे हमारे अन्दर मीमांसीत विश्वास उत्पन्न हो गया है। लड़ाई हमारी मातृभूमि में ही रही है और वह हमारा युद्ध है, इस भावना ने सेना के अन्दर एक नयी ही स्फूर्ति जागृत कर दी है। हृत्पतालो में घायल और बीमार पड़े सैनिक तरु यह इच्छा प्रकट कर

रहे हैं कि उनके स्वस्थ हात ही इन्हें मोर्च पर भेज दिया जाय।
वे बड़े प्रमान और आशावागी निराल्ट दन है।

‘ भारतवर्ष म स्थिति हसार अन्कृत है। महा शा गौ गी
की रिहाईके बावजू अक यन स्पष्ट हा गया है कि अभी काप्रेस
और सरकार के प्राथ ममभाज के कोइ लक्षण नहीं है। गांधीना
अपने भारत डोड़ो प्रस्ताव पर नद है ।

‘ इसलिये हमारी सेनाएँ भारतवर्ष में ज्या-ज्या प्रवेश
करती जायगी, जता या अनुभव करेगी कि युद्ध के निवाय
स्वतंत्रता प्राप्ति का और काई मार्ग नहीं है और तब वह अपना
पूर्ण सहयोग दगी ।’

५ सुनाई का नतानी ने आ० हि० की० के सैनिकों के समक्ष एक
भाषण करने हुए कहा—

“आजाद हिं फौज का निर्माण हमारे शत्रुओं के लिये
बहुत धिता और परेशानी का विषय बन गया है। शत्रु रडियो
यह प्रोपेगैण्डा कर रहा है कि सेना में जबदेस्ती भर्ती की जा
रही है। पर जिस आदमी को जरा सी भी अफज होगी वह यह
अनुभव करगा कि किमी आदमी को कन्धे पर बंदूक रखन के
लिये बाधित किया जा मकना है, पर एर ऐसे उद्देश्य के लिये
जान कुर्बान करने के लिए बाधित नहीं किया जा सकता है जो
चमका अपना नहीं है ।

“आजाद हिन्द फौज आजाद हिन्द की सरकार
का सैनिक अग है। यह अस्थायी सरकार और इसकी सेवा दोनों
ही भारत के सेनक है। उनका कार्य युद्ध और भारत को मुक्त
करना है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह जनता का काम होगा

कि यह अपनी अभीष्ट सरकार का निर्माण करें। उसी गौरवपूर्ण दिन के लिए आज हम अपना पसीना बहा रहे हैं—लड़ रहे हैं।”

आज के दिन दो व्यक्तियों को उनकी पहाटुरी और दशभक्ति के पुरस्कारस्वरूप 'सरदार हिन्द' और 'घार ण हिन्द' की उपाधि दी गई।

६ जुलाई को नेताजी ने गांधीजी के प्रति पितृ भावना से आपूण ही एक भाषण प्राडकास्ट किया। आपने कहा —

“महात्मा जी। प्रवासी भारतीयों के लिए आप ही देश में नए जागरण के सूत्रधार हैं। वे तथा भारतीय स्वतंत्रता के सभी विदेशी मित्र आपका जितना सम्मान करते हैं वह आप के 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव से सौगुना बढ़ गया है। यदि हम ब्रिटिश सरकार और ब्रिटिश जनता में भेद करेंगे तो यह हमारी आर से घातक भूल होगी। जहाँ तक भारत का सवाल है वहाँ दोनों एक हैं मैं आपको यह विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि यदि मुझे आशा होती कि बिना विदेशी सहायता हम स्वतंत्रता प्राप्त कर लेंगे तो ऐसे सफ्ट काल में मैं भारतवर्ष को कभी न छोड़ना। मैंने अपने सारे जीवन को आप पर लगा दिया है।

“धुरीराष्ट्रा के सम्बन्ध में एक प्रश्न का उत्तर मुझे देना है। क्या यह सम्भव है कि मैं उनसे ठगा जाऊँ ? मैंने अपना सारा जीवन ब्रिटिश राजनीतिज्ञों से लड़ाई करने में बिताया है वह समार के दूसरे राजनीतिज्ञों से नहीं ठगाया जा सकता। मैंने अपने देश के हित और सम्मान के सम्बन्ध में कभी किसी से कोई समझौता नहीं किया है।

“मैंने जो आनाद हिन्द सरकार की स्थापना की है उसका

केवल एर ही उदरय है सशस्त्र सपर्य वारां ब्रिटिश जुग मे भारत की उक्ति । अपने प्रयत्नों, कर्ग आर धनिदाना का हम केवल एर ही पुरस्कार पाएत है—मातृभूमि की स्वतंत्रता भारत का पर धैठे अपने प्रयत्ना से या मदोगवश ब्रिटिश सरकार द्वारा 'भारत छोड़ो प्रस्तावस्योकार' पर लेने स्वतंत्रता प्राप्त नकी होगी । सशस्त्र सपर्य अनिवाय है । भारत की स्वतंत्रता का अन्तिम सपर्य शुरू हो गया है । आजाद हिन्द फौज एर और धीर भाव से आज भारत भूमि पर लड़ रही है । नई दिल्ली क वायसराय भवन पर तिरंगा गछा उड़ाने तरु हमारा यद सपर्य जारी रहेगा ।

“हमारे राष्ट्र के पिता ! भारत की स्वतंत्रता के उम परित्र युद्ध मे हम आपके आशीर्षा और सद्भावना की कामना करते हैं ।”

१० जुलाई को नेता जी ने ३० हजार की जनता में एक भाषण देते हुए कहा—‘मित्रो ! कोई मूर्खही हमारे शत्रु की शक्ति का कम अन्दाजा लगा सकता है । अराकान, पालावान, हाका, टिड्डिम, मनीपुर और आसाम मे डरही सैकड़ा सेनाए डेरा डाले पड़ी हैं । इनके पास राशन व साधन सामग्री हमारे पास से कहीं अधिक अच्छी है, परंतु हमन फिर भी उनको हर जगह पराजित किया है । क्रांतिकारी सेनाओं को समार महर जगह ऐसी ही परिस्थितियो म लडना पड़ा है पर अंत म विजय प्राप्त हुई है ।’

११ जुलाई को दिल्ली के अन्तिम सम्राट बहादुरशाह के मकबरे पर

फौज की परेड हुई और तब नेताजी ने १८५७ के विद्रोह की याद दिलाते हुए कहा —

“जून में १८५७ की घटनाओं और क्रांति के घात ब्रिटिश सरकार द्वारा किये गये अत्याचारों को याद करता हूँ तो मेरा रून खोलने लगता है। यदि हम मर्द हैं तो हम १८५७ के शहीदों तथा ब्रिटिश आतंक के शिकार लोगों का प्रतिशोध अप्रत्यक्ष लेंगे। भारतवर्ष प्रतिशोध चाहता है। जिन्होंने भोजे-भाले स्वतंत्रता प्रिय भारतीयाँ का रून बहाया है उन्हें उसकी कीमत अदा करनी होगी। हम अपने दुश्मनों से पर्याप्त घृणा नहीं करते। यदि आप अपने देशवासियों को हृदयों में अमानवीय साहम और वीरत्व पैदा करना चाहते हैं तो उन्हें न केवल अपने देश से प्यार करना अपितु दुश्मन से घृणा करना भी सीखना चाहिए।

“उमलिये मैं रून की माग करता हूँ। दुश्मन का रून ही उसके भूतकाल के पापों का बदला चुका सकता है। परन्तु हमें रून तभी मिल सकता है जब हम स्वयं रून बहाने के लिए तैयार हों। इसलिये आगे से हम रून देंगे। इस युद्ध में हमारे वीरों का रून ही हमारे भूतकाल के पापों का प्रायश्चित्त कर सकेगा और हमारी मुक्ति का मूल्य होगा।”

उस दिन के बाद से आजाद हिंद फौज का एक नारा ‘रून का बदला रून’ भी निर्धारित किया गया।

इस प्रकार ‘नेताजी सप्ताह’ के ये दिन बड़े उत्साह और जोश में बीते। अपने अचरबी भाषणों और अविश्रान्त परिश्रम से नेताजी ने लोगों में मानवमूँम के लिए अपना सब कुछ बर देने की तीव्र भावना भर दी। पर उधर मार्च पर मौसम विपरीत होने लगा। धारा सम्पात

वषा के कारण पहाड़ी और जंगली रास्ते मिट्टी और कीचड़ से भर गए। आगे बढ़ने में भीषण बाधा उठ खड़ी हुई। इसके विपरीत ब्रिटिश सेना ने वर्षा के लिए पूर्व ही प्रबंध कर लिया था और उनकी मोटरे व टैंक बलपूर्वक बनाई गई पक्की सड़कों पर धड़ाधड़ बढ़ने लगीं। १२ अगस्त को नेताजी ने समस्त मशिनों व कार्यकर्ताओं के सामने युद्ध स्थिति का स्पष्टीकरण करते हुए कहा—

“हम वर्षा से पहले पहले इम्फाल पर कब्जा कर सकते थे। हमें यदि हवाई सहायता मिली होती और हमने अपना आक्रमण जनररी में प्रारम्भ किया होता तो हमें सफलता मिल भी जाती। वर्षा से पूर्व तक हमने किसी क्षेत्र में शत्रु को रोक रक्खा और किसी में आगे बढ़ गये। अरमान और हाका क्षेत्रों में हमने शत्रु की प्रगति को अवरुद्ध कर दिया था और कालादान टिड्मि, पलेन तथा कोहिमा क्षेत्रों में हमारी सेनाएँ शत्रु को पराजित कर आगे बढ़ गई थीं। वर्षा शुरू होने पर हमें अपना आक्रमण रोक देना पडा। शत्रु की यात्रिक सेना ने आगे बढ़ कर कोहिमा—इम्फाल रोड पर कब्जा कर लिया। तब हमारे सामने दो ही विकल्प थे—प्रिशनपुर, नलेन मोर्चे पर शत्रु को रोक रचना अथवा पीछे हटकर अविक सुदृढ स्थिति ग्रहण करना। मार्ग के कठिन होने से हमारी रसद व यातायात की व्यवस्था अत्यन्त दोषपूर्ण है। मोर्चे पर प्रोपेगैण्डे के लिए हमारे पास कोई साधन नहीं है। जापानी हमें लाडल डरीकर सप्लाई नहीं कर सके हैं, किन्तु अत्र हम अपना बना रहे हैं।”

२१ अगस्त को नेताजी ने भीषण वर्षा के कारण सैनिक कार्यवाहियों को स्थगित करने तथा अगले आक्रमण के लिए तैयार होने का आदेश

दे दिया। २२ सितम्बर को शहीद यतीन्द्रनाथ दाम का दिवस मनाया गया। रगून का जुबली हाल शहीद के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेवाले लोगों से ठपाठस भरा पड़ा था। सब धार भिर ह। निर शिवाई पड़ते थे। 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए फामी के तगने पर झूलने वाले अमर शहीद भगतसिंह, राजगुरू, अम ज्योति चन्द्रशेखर थानाद, बगान के जिला मजिस्ट्रेट पर गाली दागनवाली मुथी सुनीति और शक्ति और कलरुत्ता के युनिवर्सिटी हाल में बगाल के गवर्नर पर गोली चजाने वाली कुमारी गीणादास की स्मृति में अनेक भावण हुए। आताश्यों की आश्यों में आसू भर आये, और वे सिसक सिसक कर रोते लगे।

नेताजी ने अपना हृदयस्पर्शी भावण देते हुए कहा—“देश स्तत्रता माँग रहा है। पर स्तत्रता अपनी दबो पर आपसी समस्त शक्ति, सम्पत्ति और सर्वस्य का बलिदान चाहती है। तुमने युद्ध देवता को बहुत से सैनिक दिए हैं, पर स्तत्रता की देवी की पूजा अभी पूरी नहीं हुई है। आन वह केवल लडाके मिपाही नहीं चाहती, वह सिर पर कफन बाँधकर देहापण करनेवाले स्त्री-पुरुषों का बलि चाहती है। मुक्त आश्रयम्ता है उन लोगों की जो अपने खून की नदियों में शत्रु को डूबा मर्नें।

तुम हमको खून दो।

मैं तुम्हें आनादी दूंगा !!

सहस्रों आषानें एकसाथ आकाश में गूँज गईं—‘हम तैयार हैं। हम अपना खून देंगे, लो।’

नेताजी ने कहा—‘ठहरो, सुनो। मैं भावावेश नहीं चाहता। मैं

चाहता हूँ कि मौन स विद्रोह करने वाले आगे बढ़ें और इस प्राणारण्य पत्र हस्ताक्षर करें।

‘हम हस्ताक्षर करने को तैयार हूँ’— श्रोताओं ने गजना की।

और यह हस्ताक्षर मामूली राशनार्ड से नहीं करने हैं। अर्पण करने की प्रतिज्ञा करने वाले को अपने रून से हस्ताक्षर करने होंगे।

धोता लोग मच की घोर दौड़ें। सबसे पहले १७ यानिकाण थाई। किसी ने चाकू से, किसी ने छुरी से और किसी ने पिन से अपना रून निराला और रून की रूँदें गिरने लगीं। उन्ही रक्त-चिन्तुओं में कलम डुबोकर उन्हीं। प्राणारण्य पत्र पर हस्ताक्षर कर लिये।

जनता में इस प्रकार का जोश एक अविश्वसनीय शीघ्र थी। लोगों की धारें उन्हाहू में धमक रही थीं और चेहर आवेश में लाल हो उठे थे।

अक्टूबर को सारे पूर्वी एशिया में गांधी-जयन्ती मनाई गई। घर-घर पर तिरंग झण्डे उड़ाये गये। प्रभात के समय फौज ने झण्डा सलामी की। स्वतन्त्रता के प्रतिज्ञा-पत्र पर रगत के सहस्रों भारतीयों ने हस्ताक्षर किए। सायकाल एक विराट सभा की गई। बीचोंबीच बने मच के पीछे तिरंगे झण्डे खटकाए गए थे। हर सभे पर और हर डोरी पर तिरंगी झण्डिया लहरा रही थीं। मच के दक्षिण पार्श्व में त्रिदशी मित्र राज्यों के तथा धाम पार्वं में तापस बौद्ध भिक्षुओं के लिए स्थान नियत था। मच के एक-एक महामा गांधी का एक आत्मजाद चित्र चादी के फ्रेम में महा-हुमा रखा था और उसके चारों ओर एक बड़ी सी माला पड़ी थी। सभा के आरम्भ होने पर सबसे पूज एक बौद्ध भिक्षु ने मच पर आकर कुछ प्रार्थना की और उसके बाद प्रायद मुपती के विशेष प्रतिनिधि ने

दुरान से कुछ आयने पड़ी। इसके बाद नेताजी रफ़े हुए और उड़ाने 'जय हिंद' 'आजाद हिंद जिंदाबाद' और 'नेताजी की जय' के नारों के बीच अपना भाषण प्रारम्भ किया। आपने कहा —

“गाँधी जी मेरे गुरु हैं। मैं अपने गुरु की स्मृति को प्रणाम करता हूँ।

“इस क्षितिज के पार, इन बलरानी नदियों और लड़गते हुए जंगलों के पार हमारी रणभूमि है—हमारे सपनों का देश।

“वह देश समार का सबसे सुंदर देश है। उसके आकाश में चान् अजय गेशनी करता है, उसके वृक्षों की डालों पर बैठ पक्षी एक अजीब मिठास से बोलते हैं और उन्ही वृक्षों की छाँटों में बैठकर बहानेपियोंने जीवनके विचित्र रहस्य हमें बताए हैं।

“गाँधीजी, जिनकी जयती हम मना रहे हैं, आधुनिक अपि है। उनकी अहिंसा मानवता की एक मात्र आशा है।

“लेकिन गुलाम देशकी अहिंसा, अहिंसा नहीं, कमजोरी होती है।

“इसलिए पहले हम अपने देश को आजाद करगे। मौत को मजिलें पार करते हुए हमे दिल्ली पहुँचना है। जिस दिन दिल्ली पर तिरगा फहरायेगा उस दिन मणिजटित सिंहासन पर हम महात्माजी को बिठायेंगे, गगाजल से उनके चरण धुलायेंगे और उनमें कहेंगे अत्र आप ससार का नेतृत्व अपने हाथ में लीजिये। अत्र आपकी अहिंसा की जम्बरत है गुरुदेव।

इन्हीं दिनों जब नेताजी इस प्रकार के हृदयस्पर्शी और उत्साह-बधक भाषण दे रहे थे, दिल्ली रेडियो उनके विरुद्ध प्रचार कर रहा था और कह रहा था कि सुभाष बोस की बातें सब स्वप्न हैं, जो कभी सत्य

सिद्ध नहीं हो सका। एक महिला तैनिह ने मताजी व हम बात की शिकायत की। मताजी गीर हो उठे और फिर दोत मताजी ने दुखी गुस्कराहट के साथ बोले—

“वे लोग मुझे स्वप्नदृष्टि कहते हैं। हमसे साह नहीं कि मैं स्वप्न से ही स्वप्नदृष्टि रहा हूँ, परंतु मेरा सबसे प्यारा सपना भारतमाता की स्वतंत्रता है। वे स्वप्न देखने की बुरी बात समझते हैं, परंतु मैं इसमें गर्व अनुभव करता हूँ। यदि मैंने भारत की आजादी के स्वप्न के लिए लड़ते तो मुझे शासक काल के लिए नामा की जर्जरों की सहायता करनी पड़ती। सबसे बड़ी बात यह है कि क्या मेरे स्वप्न मृत्यु सिद्ध होंगे। मसार की दक्षिण स्वप्नदृष्टि और उनके सपनों पर ही आश्रित है— अयाय, शोषण और थलाधिकारों के स्वप्न नहीं, सब राष्ट्रों के लिए स्वतंत्रता, सुख और समृद्धि के स्वप्न।

पर देश के भाग्य में शायद यह स्वप्न मरचे हान नहीं मिले थे। ब्रिटिश सेना के ७-८ लाख भीषण सशस्त्र और उसकी निरंतर पराजय तथा भारतभूमि में आजाद हिंद फौज के घरेलू-प्रवेश से आशा की जो विरह दृष्टिगोचर होने लगी थी वह जापानी प्रयासों और सहायता के अभाव से फिर अधिका की काजी छाया में विस्तृत होन लगी। मानसून के बीच जाने पर भी जापानी सेना ने केवल दमा मोर्चे पर आगे न बढ़ सका अतः यह हिंदिम से भी पीछे हट गई। - २६ नवम्बर को चीनी सेना से भाग पर अधिचार कर लिया और ब्रिटिश सेना बुधिम पट्टच गई। मताजी फिर भी निराश नहीं थे। वे सेना का उत्साहवर्धन कर रहे थे और बार बार यह कहने थे कि आसाम और बंगाल की सीमा पर ही ब्रिटिश

बस कर मुकाबला करेंगे। बमा के पुनः हाथ से १ निरस्त्रने देने के लिए था हिं० पौ० ने रक्षात्मक युद्ध शुरू कर दिया। यह वह समय था जबकि था० हिं० पौ० विशुद्ध अपने बल बूने पर टक रही थी। प्रशांत में स्थिति के बिगड़ जाने से जापान की युद्ध योजनाएँ अस्त व्यस्त हो गईं थीं और मोर्चे पर एक भी जापानी विमान दृष्टिगोचर नहीं होता था। आगाह हिन्दू फौजके पास जो कुछ गोला-बारूद, राशन तथा पशु यातायात के साधन थे उन्हीं से वे १४ वीं ब्रिटिश सेना की प्रगति को अपनी जान लड़ाकर रोक रहे थे। कर्नल शाहजाद के नेतृत्व में सुभाष मिश्र ने ब्रिटिश प्रगति को अल्पसाधनों से जिस आश्चर्यजनक साहस और शौर्य के साथ रोक रक्खा वह सप्ताह के युद्धों के इतिहास में एक अभूतपूर्व चीज रहेगी। पर अखिर आधे नगे भूखे और जगल की पेड़ पत्तियों पर निर्वाह कर लड़ने वाले ये जवान सैन्य प्रकार के सुम्यवस्थित गोला-बारूद, बमबर्षकों और यातायात के साधनों में लैस दुरमन का कैसे मुकाबला करते। आखिर सेनापति ने उ ह पीछे हटने का आदेश दिया। पर सेनाओं में उसाह और मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए प्राणार्पण कर देने की भावना इतनी उग्र थी कि प्रयावतन के इस आदेश से उनमें असतोष और चोम का लहर दौड़ गई। प्रत्येक सैनिकने पीछे हटनेसे इंकार कर दिया— 'हमसे नेताजी ने दिल्ली पहुंचने को कहा है। उन्होंने हमें चेतावनी दी है कि हम किसी भी विषम परिस्थिति में पीछे कदम न हटायें। हमारे डिवीजन के डे, मदन रियाज और गुलामसरवर जैसे पंच-सवार मेजरों को आगे करके निश्चित हमें धोखा देना चाहते हैं।' सेनापति तथा अन्य अधिकारियों ने उन्हें स्पष्ट किया कि 'हमारे पास 'बिस्कुल गोला-बारूद नहीं है, कोई मोटर और ट्रक नहीं है और बिन्द

दिन को पार करने के बाद ही हमारा रास्ता समाप्त हो गया था। हम काग धाल और कच्चे मूल पर नियाह कर रह ई। हममें से बहुत से मलरिया से पीड़ित हैं और न्वाइरों का स्तर भी समाप्त हो गया है। पीछे कदम रखने के लिये अब और कोइ माग नहीं है।

सना को इस पर निरवास नहीं हुआ और उसने कहा—'हम धान और पत्तिया पर रह है और आगे भी रहेंगे। हम आगे बढ़ना चाहते हैं। न्वाइरों की हमें चिंता नहीं। नताजी के आदेश का उल्लंघन हम नहीं करेंगे।' इरावदी के पुल पर इन्होंने दो बार अ प्रोजे सना का मुह की दी थी और अब भी उन्हें यह विश्वास था कि वे दुरमन का सफाया कर देंगे। उनका कहना था कि यही मौका है कि उन्हें दुरमन का पीशा करने तथा सफाया करने दिया जाय। अखिर जब वे किसी तरह नहीं माने तो नताजी का लिखित आदेश भगाया गया। अब निरोध की कोई गुंजाइश नहीं थी। आखिरी में आसू और सिसकिया लेते हुए ये सैनिक पीछे छोटे। बच्चों की तरह वे रो पड़े और उम दिन उममें से किसी ने नहीं खाया। क्या विश्व इतिहास में ऐसा बहादुरी और जिलेरी का एक भी उदाहरण आपको मिल सकता है? लाल किले की पानी अदावत में कप्तान शाहवाज की जो डायरी पेश की गई उसमें ताकालिक स्थिति का बयान करते हुए एक पृष्ठ में लिखा था—“जावानियों ने हमारा साथ छोड़ दिया है, उनको अब हमारी आवश्यकता नहीं रही, पर मैं कभी अ प्रोजे के आगे हथियार नहीं डालूंगा और उनके स्थान पर बसा के जगलों में मौत पसन्द करूंगा।”

इधर अन्धकार में मिश्रित वेनाण उत्तर चुकी था और उधर पनरल मैकथर की संनाण प्रशास में एक द्वार के बाद दूसरे द्वीप पर अपनी

विजय का झण्डा पहरावी हुई प्रवल वेग से जापान की ओर बढ़ी चली जा रही थीं। १९०० अमेरिकन समथपक ६ घण्टे तक टोकियो पर बमबर्षा कर चुके थे और अमेरिकन सेना जापान के निकटस्थ दक्षिणपूर्वी द्वीप में अपने पैर जमा चुकी थी। ५ मार्च को मैकिलान का पतन हो गया और उसके बाद माण्डले और मेग्यो हाथ से निकल गये। जापानी लोग रगून स्वामी बनने पर जोर देने लगे, पर नेताजी का आग्रह था कि सत्रप जारी रखकर रगून को हाथ से नहीं जाने देना चाहिए, क्योंकि धर्म के हाथ से निकल जाने का अर्थ होगा कि खिला पहले से भी दूर हो जायगा और स्वतंत्रता की सारी आशाएँ मिट्टी में मिल जायगी। उम समय नेताजी ने एक आदेश सेना के नाम जारी किया जिसमें लिखा था—'हमारी आजाद हिंद फौज में कई गद्दार घुस आए हैं। उनसे फौज को पाक करना चाहिए। कायरो और गद्दारी को पूरा दण्ड दिया जाना चाहिए और सैनिकों से पुन बफादारी की शपथ ली जानी चाहिए। जब तक हमारा प्यारा देश वास्तव के पजे से मुक्त नहीं हो जाता तब तक हम पूरे जोश, निडरता और पूरी शक्ति के साथ आत्मा की लड़ाई में हिस्सा लेंगे।' उन्होंने दिनों नेताजी ने निम्न पत्र मेजर डिब्लिन को रगून से लिखा—

मेजर जी० एम० डिब्लिन,

जय हिंद। मैं आपकी रेजीमेंट द्वारा किये गये कार्यों को ध्यानपूर्वक दर रहा हू। आपने इस विपत्ति काल में जिन कठिनाइयों का सामना किया है उसके लिये आपको बधाई देता हू। वर्तमान विपत्ति में मुझे आप पर पूरा भरोसा है।

इस ऐतिहासिक संघर्ष में हमारे साथ चाहे जो कुछ हो पर अब ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो हिंदुस्तान को और अधिक दूर

तब परतंत्र रस मके । चाहे हम नीत्रिा रह और नाये करें और
 चाहे लड़ते हुए मर जाय, हम प्रयत्न रिगति म यद् पूर्ण निरय
 और विश्वास रगना है । क्विस र्देश्य फ लिये हम लड रहे हैं
 वह अवश्य पूरा होगा । भारत की आजादी के मार्ग का तरफ
 ईश्वर वा सक्त है । हमें केवल अपना कतव्य पूरा करना है और
 भारत की स्वाधीनता म मूल्य अदा करना है । मातृसा लड़ाई में
 जा राष्ट्रीय स्वतंत्रता का पथ प्रशान कर रही है, हमारा ह्म्य
 आपन आर आपके माथिया के साथ है । आपन और आपके
 मातरत अफसरी तथा सनिफा फ प्रति मेरी आतरिक शुभ
 कामना है । इश्वर आपना शक्ति दे और विजय कर सहरा
 पहिनाय ।

'जयहि'

१० मुभाषचन्द्र तमु

उम्र पत्र का मन्तर दिल्लीन ने जो उत्तर दिया यउ निम्न है —
 श्रदेय नेता जी,

जय हिंद । आपका १२ मार्च १९ का पत्र मिला । शन् नही,
 केनन आमु की लडियों मेरे हृदयगत भावो को व्यक्त कर सक्ती
 हैं । आपन मेर तथा मेर माथिया के प्रति जो विश्वास प्रकट
 किया है उसके लिये मैं आपको हार्थिक धन्यवाद देता हूँ । नेता
 जी, आपका मैं अपने रेजीमेण्ट की ओर से धिग्राम दिलाता हूँ -
 कि हमारे रास्ते में चाहे जो कुड्र आये हम आपके आदेशानुसार
 लड़ाई जारी रखेंगे और भारतमाता का आजादी के लिये तन
 तक प्रयत्न करते रहेंगे जब तक इस रेजीमेण्ट का एक भी सैनिक
 जिंदा रहेगा ।

अपने सभ्यत्वमे रगन मे कहे अपने अतिम शब्द—मे आप की आंखें किसी के सामने नीची न होने दगा—मेरे कानो मे, जब से आपके पास से आया हूँ और विशेषकर जब से नया-उगू से लौटा हूँ, लगातार गूज रहे हैं।

मैं यह पूर्णरूप से अनुभव करता हूँ कि मैं वह करने मे असफल रहा जिसका मैंने वचन दिया और मैं ही एकमात्र ऐसा रेजीमेन्ट का कमाण्डर हूँ जिसके कारण आपको व आजाद हिंद फौज से नोचा देखना पड़ा। मैं मुद्द दिखाने के योग्य नहीं, केवल मेरे कार्य ही उसका प्रतीकार करेंगे।

आपके पत्रने मेरे अन्तर नयी प्रेरणा भर दी है। मैं और सब अफसर तथा सैनिक जो यहा उपस्थित हैं, हृदय से आपकी शुभकामनाएँ स्वीकार करते हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि ईश्वर की कृपा और आपके आशीर्वाद से सफलता प्राप्त करना कठिन न होगा।

हम आपकी चिरायु और स्वास्थ्य के लिये प्रार्थना करते हैं जिससे कि आप इस बम युद्ध मे हमारा पथ-प्रदर्शन करते रहें।

जय हिंद

आप महानुभाव का आह्लाकारी—

जी० एस० दिल्लीन

आखिर यमों को हाथ से न निकलने देने के लिए फिर मोर्चा बाधा मपा। १४ मार्च को कर्नल सहगल ने दो टुकड़ियाँ पिनविल पर हमला करने भेजीं। शणयात्रा से पूर्व कर्नल शाहनभाज ने विदा दी और

क्या—“युद्ध व अनुभव मे मरी यद् भारणा है कि शत्रु बदा
 वायर है । मुग् आशा और धिरवास है कि तुग लोग किसी भी
 तरफ हिन्दुस्तान क नाग पर कनक नहीं लगाओगे । मेरी शुभा-
 काक्ष्ये तुम्हार साथ है ।

१६ मार्च को ये दोनों टुकड़िया ग्येन पहुची, परन्तु उनके साथ के
 जापानी अफसर तथा दसो शयुक्व की धार से गोले चलने ही भाग
 सके हुए । उधर उस क्षेत्र मे एकवार पीजी शिविर को छोटे हुए
 कर्नल सहगज की मापरगालाबारी की गई थीर टोंगेनिगी तथा अलेग्सी
 पर मिदिश बच्चा हो जाने के कारण आ० डि० फी० के पास पीछ हटने
 का भी कोई मार्ग नहीं रहा । इस पर मांगरिंगन गांव मे अफसरों की
 एक बैठक में इस शर्त पर आत्मसमर्पण करने का निश्चय कर लिया
 गया कि उनके साथ युद्ध-अग्निशो जैसा व्यवहार निया जायगा । निम्न
 अधिकारियों ने उनकी इस शर्त को स्वीकार कर लिया और उसके
 साथ ही आ० डि० फी० के ४० अफसरों और ५०० सैनिकों ने ४१
 सुरता राइफल के से० कनल से० ए० रिटमन को आत्मसमर्पण कर
 लिया ।

उधर जापानी सनापति व अन्य अफसर रगून से भाग सके हुए ।
 स्थिति अत्यन्त विषम हो गई । रगून स्थित आजाद हिंद फौज के
 अधिकारियों और सैनिकों ने नेताजी से अनुरोध किया कि वे वहां से
 किसी सुरक्षित स्थान पर चले जायें । नेताजी रूसी की रानी फौज
 तथा अ यान्य सब सामियों को छोड़कर कही जाना नही चाहते थे
 पर बहुत आग्रह किये गये पर वे आंखा में आम् भर कर बकोक रवाना
 होने के लिए विमान पर चढ़ गये । प्रस्थान से पूर्व नेताजी ने सभी स्थित
 भारतीयों तथा बर्मा बामी मिश्रों को निम्न संदेश दिया—

भाइयो और बहिनो । मैं अत्यन्त दुःख के साथ बर्मा से प्रस्थान कर रहा हूँ । स्वातंत्र्य प्राप्ति का हमारा प्रथम युद्ध विफल हुआ, पर अभी हमें बहुत से युद्ध करने हैं । इस युद्ध में विफलता प्राप्त होने से निराश होने का कोई कारण नहीं । बर्मा-स्थित मेरे देशवासी भाइयो । हमने अपनी मृत्युभूमि के प्रति अपना कर्तव्य पूरा किया है । उससे आपके प्रति विश्व में प्रशंसा का मान जागृत हुआ है ।

“आपने उदात्तापूर्वक सैनिक, आर्थिक और सामग्री की सहायता दी है । आपने पूर्ण सैनिक संगठन का प्रथम उदाहरण उपस्थित किया है, परन्तु परिस्थितियाँ अत्यन्त विपन्न हो गई हैं और हमने अस्थाईरूप से बर्मा का युद्ध हार दिया है ।

“स्वार्थनिरहित प्रलिदान की जो भावना आपने प्रदर्शित की है—विशेषकर तबसे जबसे मैंने अपना प्रधान शिविर बर्मा में बदल लिया,—वह मैं आजीवन नहीं भूल सकूँगा ।

“मेरा पूर्ण विश्वास है कि वह भावना विनष्ट नहीं हो सकती । भारत की स्वतंत्रता के नाम पर मैं आपसे अपील करता हूँ कि उस भावना को जागृत रखना, अपने सिराको उन्नत रखना और उस भाग्यशाली दिन की प्रतीक्षा करना जब कि एक बार फिर आपको भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने का अवसर प्राप्त होगा ।

“मैं अपनी इच्छा से बर्मा नहीं छोड़ रहा हूँ, परन्तु मेरे मंत्रियों और अधिकारियों का ऐसा ही आग्रहपूर्ण परामर्श है । भारत के स्वतंत्रता-सङ्घर्ष को जारी रखने के लिए ही मैं बर्मा छोड़ रहा हूँ । मैं जन्म में आशावादी हूँ । भारत की शीघ्र मुक्ति

की मेरी आशा खरिडन नहीं हुई है और आपसे भी मैं उस आशावाप्ति की अपील करता हूँ ।

“मैंने हमेशा कहा है कि अजरार के बाद उषा का आगमन होता है । हम एक अधरारपूर्ण घड़ोम में गुजर रहे हैं, इस लिए उषा का प्रकाश दूर नहीं है—भारत अजरर स्वतंत्र होगा ।

“मैं इस मुद्दे के सचानन में वर्मा की जनता और सरकार से प्राप्त सभा प्रकार की सहायता के लिए अपनी हार्दिक श्रुत शता प्रदर्शित करता हूँ । वह समय भी आवेगा जब स्वतंत्र भारत इस श्रुण को प्रसन्नतापूर्वक चुनायगा ।” इन्किलाब जिन्दाबाद ! आजाद हिन्द, जिन्दाबाद !! जयहिन्द !!!

सुभाषचन्द्र बोस

इसी प्रकार एक सैनिक आदेश २१ अप्रैल ४२ को सर्वोच्च सेनापति के रूप में ब्राजान् हिन्द फौज के नाम भी जारी किया जिसमें कहा गया था—“मैं बहुत भारी दिल लेकर वर्मा छोड़ रहा हूँ । इम्फाल और वर्मा में हम आजादी की लड़ाई के पहले दौर में हार गए हैं, परन्तु यह पहला ही दौर है । अभी लड़ाई के बहुत से दौर आने को हैं । मैं जर्म से आशावादी हूँ । वैंमी भी परिस्थिति ही में पराजय स्वीकार नहीं करेगा । इम्फाल के मैदानों, धराकरन के जंगलो और पर्वता और वर्मा के तेल क्षेत्रों तथा अन्य स्थानों पर शत्रु के साथ लड़ते हुए तुमन जो धीरत्व और साहस प्रदर्शित किया है वह हमारी स्वतंत्रता के सघर्ष के इतिहास में सदा अमर रहेगा ।

“साथियो ! इस सक्त्पूर्ण घड़ी में मैं आपको केवल एक

आदेश करूँगा—यदि आपको अस्थायी रूपसे झुकना भी पड़े तो बहादुरों की तरह—अपने सम्मान और अनुशासन को पूर्णरूप से कायम रखते हुए झुकना। भारत की भावी सन्ततिया जो तुम्हारे महान त्याग के कारण गुलामी, रूपमें नहीं अपितु आजाद मनुष्योंके रूप में पैदा होगी, तुम्हारे नामों को आशीर्वाद देंगी और दुनिया को कहेंगी कि हमारे पूर्वजों ने मनीपुर, बर्मा और आसाम में लड़ाई लड़ी थी

“भारतीय मुक्ति में मेरा विश्वास अब भी अखण्डित है। मैं तुम्हारे हाथों में राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा, राष्ट्र का सम्मान और भारतीय योद्धाओं की सर्वोत्तम परम्परायें छोड़े जा रहा हूँ। मुझे इसमें सन्देह नहीं है कि तुम, भारतीय स्वतन्त्रता सघर्ष के अप्रदूतो, भारत के सम्मान की रक्षा के लिए सब कुछ, जीवन तक बलिदान कर दोगे, जिससे कि सघर्ष को जारी रखने वाले तुम्हारे साथियों को तुम्हारा यह जागृत्यमान उदाहरण सदा प्रेरणा देता रहे।

“ मैं आपको यह विश्वास दिलाता हूँ कि पूर्वी एशिया तथा भारत में हमारे देशवासी सत्र परिस्थितियों में लड़ाई जारी रखेंगे। और आपके बलिदान व कष्ट व्यर्थ नहीं जाएंगे। २१ अक्टूबर १९४३ को मैंने ३० करोड़ दशवासियों की सेना तथा उनसे मुक्ति-सघर्ष की जो प्रतिज्ञा ली थी उसपर दृढ़ रहूँगा। मैं आपस अपील करता हूँ कि आप भी इसी आशावदितों को हृदय में रखें कि अघोर के बाद ऊषा के दर्शन होंगे। भारत

जल्दी ही स्वतंत्र होगा ।'

परमात्मा तुम्हें आशीर्वाद दे ।

इकलाव चिन्तावा ।

आजाद हिन्द चिन्तावाद ॥

नयहिन्द ॥

सुभाषचन्द्र बसु

रगून में उस समय ७ हजार आ० हि० फौ० सैनिक थे । उन्हें आदेश दे दिया गया कि वे जनरल जोरनाथन की कमान में शहर की व्यवस्था तथा सम्पत्ति की रक्षा का कार्य सम्भालें तथा ब्रिटिश फौज के वहाँ पहुँचने पर एक व्यवस्थित तरीके से आत्मसमर्पण कर दें । ६० इ० लीग का सारा कार्य भी वहाँदुरी के मुमुक्षु पर दिया गया, क्योंकि वे ही सबसे पुराने तथा लीग के उपाध्यक्ष थे । आजाद हिन्द सरकार बचाऊ बहली गई थीर जाने से पूर्व पाइ पाई का हिसाब शुक्ला कर गई । चूँकि स्वतन्त्र वर्मा सरकार के पास अपने सैनिकों की देन के लिये पैसा नहीं था हम जिन आजाद हिन्द बैंक न उसे ५ लाख रुपए उपहार के रूप में दे दिया । यह निश्चय किया गया कि ब्रिटिश लोगों के वहाँ पहुँचने पर भी यँक यथापूर्व जारी रहेगा ।

अप्रैल के अन्त में तु गो, २ मई को पेगू और ४ मई को रगून का पतन हो गया । हम मध्यवर्ती कार्य में आ० हि० फौ० ने रगून में ऐसी सुन्दर व्यवस्था रखी कि डकैती या चारों का एक भी केस नहीं हुआ । तथा जहाँ जहाँ भी ६० इ० लीग की शाखाएँ थीं वहाँ वहाँ सम्स्थों ने भारतीय व बर्मा जीवन व सम्पत्ति को छति न पहुँचने के लिए कुछ उठा न रखा । रगून का प्रबन्ध अब २४ वीं भारतीय सेना

के विप्रोडियर लाइर के हाथ में आ गया। वे श्री बहादुरी से मिले और कहा कि सच को चाहिए कि वह राजनैतिक कार्य को छोड़ दे तथा सामाजिक व स्वास्थ्य सम्बंधी कार्य जारी रखे। श्री बहादुरी ने यह बात स्वीकार कर ली। आ० हि० फौ० के सम्बंध में विप्रोडियर लाइर ने जनरल लोकनाथन को आश्वासन दिया कि—सब स्त्री व पुरुष सैनिकों को स्वतन्त्र व्यक्तियों के रूप में भारत जाने दिया जायगा।' पर साथ ही यह प्रार्थना की कि वे अपनी बर्दिया उतार दें तथा ब्रिटिश भारतीय सेना के अफसर अपने पुराने पदों को धारण कर लें।

आपने जनरल लोकनाथन को यह हद आश्वासन दिया—'आज तक हिन्दु फौज के सैनिकों व अफसरों से समान सरया के ब्रिटिश भारतीय सैनिकों के साथ ही आवश्यक कामों पर लगाया जाने के सिवा और कोई काम नहीं लिया जायगा।' यह भी फैसला कर लिया गया कि आ० हि० फौ० कैम्प की रक्षा का कार्य आ० हि० फौ० के हाथ में रहेगा तथा वह अपना तिरगा भण्डा उठा सके ग और अपना राष्ट्रीय गीत गा सके गे।

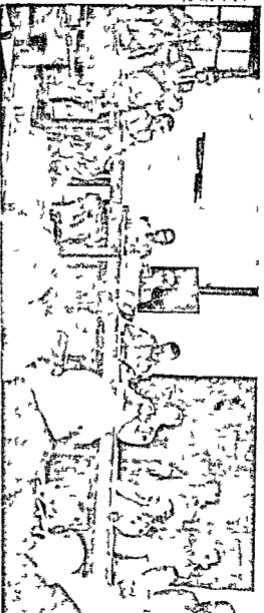
पर धीरे धीरे रस्मी कड़ी की जाने लगी। आ० हि० फौ० बैरु का रुपया जप्त कर लिया गया, किसी पर जुमाना कर दिया गया और किसी पर नियमपूरक भानेमें खबर करने का प्रतिबन्ध लगा दिया गया। श्री बहादुरी को गिरफ्तार करके रगून भेज दिया गया। क्लासी की रानी की फौज भी इसने नहीं बच सकी। उसकी कम्पण्डर डा० लक्ष्मी को गिरफ्तार करके बलेया भेज दिया गया। इस समय आप बर्मों में ही

नारायण हैं। धारणी उम्र २७ वर्ष की हैं और भाग केन्द्रीय अमेरिका की हरी मन्द्य भीमली अम्बु स्वामिनाथन की पुत्री हैं।

भा० हि० फौ० का सम्पूर्ण निःशुक्रत्व होने ही उन्हे भी रगून की मेण्डल अञ्च में दायरिया गया, उसके ऊपर ब्रिटिश प्रहरी निगम पर दिय गये और उनमें ब्रिटिश मारगोद मेना की देखरेख में बर्मा की सबकों पर मेहतरों और कुटाई पिटाई का काम लिया जाने लगा। युद्ध-वर्षियों के स्थान पर मापारण कैशियां सा व्यवहार किया जान लगा।

इस सम्पूर्ण दुष्प्रवहार के बावजूद भा० हि० फौ० सैनिकों का उत्साह और नैतिकता अक्षुण्ण रही। वे अत्याचार के सामने मुड़े नहीं। उनका धाम निरवास अस्तिग रहा। ६ अगस्त १९४५ को जापान के पराजय और धाम समपण करने पर भी वे धाम समपण करना नहीं चाहते थे। मत्तजी के अग रक्षकों ने यह स्पष्ट रूप में कह दिया— 'जापान ने भले ही धाम-समपण कर दिया ही पर हमने तो नहीं किया है।'

१७ अगस्त की राय नेतानी भा० हि० फौ० के सैनिकों से मिले पर उनके साहस और उत्साह को देख कर वे उनमें धाम-समपण की बात न कह सके। १८ अगस्त को बर्कोर में टोकियो के लिए प्रस्थान करो से पूर उन्हीं फल भौमले की धामसमपण करने का आदेश दे दिया। बर्लिन भौमले द्वारा उत्र आदेश जारी करते ही सारे फौजी कैम्प में शोभ छा गया। घौलपुरी कैम्प में जब यह समाचार पहुँचा तो फौजियों ने पत्तान कर दिया कि जो थोड़े उन्हे धाम-समपण के लिए कहेगा, उसे वे गोली से उड़ा दे गे। बहुत समझाने बुझने पर



आजार हिन्द कीज के प्रथम मुकदमे की कीर्ती अदालत



आजाद हिन्द फौज के अध्यक्ष सुब्रह्मण्य के सफाई पत्र के वकील ।

और यह आश्वासन देने पर कि कोई अग्रोज अपसर उनके कैम्प में नहीं आयगा, वे आम समर्पण के लिए तैयार हो गये । अग्रोज सेना के काल शिवदत्तसिंह ने मुरछा का पूरा आश्वासन देकर कमल भोंसले से अपने यहाँ सोने का आग्रह किया पर उसके चौथे दिन ही उनसे गिरफ्तार कर लिया गया और उसके बाद तो आ० हि० फौ० के हजारों सैनिक धड़ाधड़ गिरफ्तार कर लिए गए ।

नेता जी कहा ?

वर्तमान युद्ध के महाविनाशक अस्त्र परमाणु-बम का अमेरिका द्वारा प्रयोग किये जान और सोवियत रूस के अकस्मात ही उसके विरुद्ध युद्ध घोषणा कर देने के परिणामस्वरूप ६ अगस्त १९४५ को जापान ने बिना शर्त आत्म समर्पण कर दिया। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस को पूर्ण ही विश्वास हो चुका था कि जापान की पराजय सम्भिक है। वह यद्यपि लड़ाई का जारी रखने के पक्ष में था और आत्मसमर्पण करना भारतीय प्रतिष्ठा के विरुद्ध समझते थे किन्तु जापान के आत्म समर्पण ने विशिष्ट स्थिति उत्पन्न कर ली। अन्ततः उन्होंने मित्रराष्ट्रीय अधिकारियों के समक्ष आठ दिनों का स्वतन्त्र रूप से पृथक आत्म समर्पण करने का निश्चय किया और इसकी व्यवस्था के लिये वह १२ अगस्त का बकाबु में टीकियो रवाना होगये। कमल हबीबुररहमान तथा पद्मनाभ ज्ञानी अक्सर उनके साथ थे। जब वह वायुयान फारमोसा

क्षेत्र के ताड़होखू हवाई अड्डे पर पहुँचा, तब कहते हैं कि दुर्घटना के कारण वायुयान के इंजिन में आग लगी गई और नेताजी तथा उनके अग्ररक्षक करनल हबीबुर रहमान दोनों घुरी तरह घायल हो गये। २३ अगस्त को टोकियो रेडियो ने यह समाचार प्रचारित किया कि नेताजी सुभाष का १६ अगस्त को टोकियो के एक अस्पताल में देहान्त हो गया।

यद्यपि कर्नल हबीबुर रहमान के दिल्ली के लाल किले में पहुँचने पर उनसे प्राप्त सूचनाओं के आधार पर मेजर जनरल शाहनवाज, फ़ाल सहाय और श्री अख्तर प्रभृति प्रमुख व्यक्तियों ने नेताजी का मृत्यु विषयक समाचार की पुष्टि की है, किन्तु अनेक उदात्तियों, कप्तान लक्ष्मी स्वामीनाथन तथा महात्मा गांधी ने भी इस समाचार पर अतिरिक्त प्रकट किया है और उनका हृदय विश्वास है कि नेताजी अखरय कहाँ छिपे हुए हैं। टोकियो-रेडियो द्वारा नेताजी की कथित मृत्यु के सम्बन्ध को प्रेस में प्रकाशित करने, उनके 'क्रियाक्रम में टोकियो प्रवासी भारतीयों को आमन्त्रित न किये जाने तथा जिन एक अन्य जापानी अफसर के उत्र वायुयान दुर्घटना में मारे जाने का समाचार दिया गया था, उसी के सिंगापुर में आम-समपक्ष विधि से अखर पर उपस्थित रहने आदि से जिन लोगों ने इस समाचार को सन्देह बुद्धि से लेखा है, उनका कुछ समर्थन अखर हो जाता है। पर यदि नेताजी जीवित हैं तो ये कहाँ हैं—यह एक प्रश्न है जो रहस्य से आवृत है और इसका उत्तर काट्ट त्रिकालदर्शी ही दे सकता है।

धी और उमने ५ नवम्बर ४४ को मे र चनरल शाहनान, कर्नल सहगल और लेफिट० डिल्लो के विरुद्ध फौजी अगलन में मुस्मा चलाये जाने की घोषणा कर दी। काप्रेम की ओर से भी भलाभाई देसाई, बख्शी सर नेकचल, सर तंनहादुर मप्र, गायबहादुर पीवान उद्दीदाम और श्रीश्रामफअली प्रभृति कानूनप पैरवी के लिए नियत क्रिय गये। मुस्मा तो माम तक चलना रहा। सरकार ने इस मुस्दमे म जो गगाह पेश किये, वे सभी आ० हि० फौ० क भूतपूर्व मस्य थ। किन्त पहले गवाह लेफिट० नाग ने जत्र अपना बयान दिया तत्र ही सरकार का पक्ष घटुत कमचोर नजर आने लगा। बाबूराम आदि गगाह ने यह कहकर कि हमे जयान रटाये गये हैं, सरकार की स्थिति और भी त्वाब कर दी। इस्तगासा के प्राय सभी गगाहो ने यह स्वीकार किया कि आ० हि० फौ० का निमाण शुद्ध देशभक्ति की प्रेरणा से हुआ और वह जापानियों की फठपुतली नहीं थी, उसमे भर्ती स्त्रेन्द्रा पर थी और उन लोगों ने जापानी कैम्पो मे दुरबस्था मे सड़ने की अपेक्षा हिन्दुरतान को आजाती के लिए मरना बेहतर समझा। डिपेंस कमेटी की ओर से सफाई मे जापान के तो भूतपूर्व सहायक त्रिदेश मन्त्रिया श्री मत्सुमाता तथा श्री सावाता म्र तीन जापानी फौजी अफसरों को पश किया गया।

श्री भू।भाई देसाई ने मुस्दमे की पैरवी अत्यन्त योग्यता पूर्वक की। सफाई के प्रगान वकील के नाते आपने अपने भाषण मे कहा "प्रस्तुत मामला तीन व्यक्तियों द्वारा सम्राट के विरुद्ध युद्ध छेड़ने तक ही सीमित नहीं है। स्पष्ट है कि व तीनों एक ऐसी मगठित सेना के अग थे, जिसने सम्राट के खिलाफ जग का

ऐलान किया था। इसलिये अदालत के सम्मुख प्रस्तुत प्रश्न इस अधिकारक विषय में है कि कोई पराधात राष्ट्र जब अपनी मुक्ति के लिये जग छेड़ता है, तब वह विद्रोह के अभियाग से बरी रहता है या नहीं।

“किसी भी राष्ट्र या उसके अग को अपनी आजादी के लिये युद्ध छेड़ने का अधिकार है और युद्ध छिड़ जाने पर युद्ध के दौरान में किय गये अपराधों के लिए युद्धरत सेनाओं के सदस्यों को अंतर्राष्ट्रीय कानूनके अनुसार एड नहीं दिया जा सकता। आ० हि० फौ० को भी हिन्दुस्तान की आजादी के लिए युद्ध छेड़ने का अधिकार था और युद्धरत दशा में उसके सिपाहियों द्वारा किये गये अपराध व्यक्तिगत रूपमें दण्डनीय नहीं हो सकते।

“१९११ के इन्डियन आर्मा एक्ट की ४५ वीं धारा में कोर्ट मार्शल का ३० कोड़े लगाने की इजाजत है। अतएव इन्डियन आर्मा एक्ट के आधार पर बने उसके ही जैसे आ० हि० फौ० एक्ट की निंदा करने का अर्थ इन्डियन आर्मा एक्ट की निंदा करना है।

“आजात हिंदू सरकार पूर्णतया सुमगठित थी विधानानुसार उसकी सेना थी निम्के दो उद्देश्य थे—भारत की आजादी तथा नक्षिणी पूर्वी एशिया के भारतीयों के जानोमाल की रक्षा। आ० हि० सरकार के पास अडेमान और नीकोबार थे और वह मनीपुर के निम्बवर्ती विजित प्रदेश पर शासन करती रही है। जियाप्राड़ी का प्रदेश भी उसके पास था। उसको स्वतंत्र रूप में पृथक आय थी और उसने ‘आजाद हिंदू स्टाम्प’ बया सिप्रिल एड मिलिट्री गजट भी जारी किए थे। इन सब परिस्थितियों को देखते